खजुरीबाली

कथा संग्रह

सुजीत कुमार झा

प्रकाशक

जय मंगला देवी प्रकाशन गृह

जनकपुरधाम

खजुरीबाली

कथा संग्रह

कथाकार : सुजीत कुमार झा

संस्करण : पहिल

विक्रम सम्वत : २०७१

प्रति : १०००

मोल : २०० ।- टका

प्रकाशक : जय मंगला देवी प्रकाशन गृह, जनकपुरधाम

आवरण सज्जा : कैलाश दास

ISBN : 978-9937-2-8094-5

मुद्रक : हिसि अफसेट प्रिन्टर्स जमल, काठमाण्डू

KHAJURIWALI

A Collection of Maithili Stories

By : **SUJEET KUMAR JHA**

समर्पण



वन्दनीया मामी
स्व.पुनम झाकेँ, जे
फुलबासँ पहिनहि
कालपुरुषक
चरणमे समर्पित भऽ
गेलीह, जिनक सुरभि
अनन्त कालधरि शेष
रहत !

सुजीतजी आ हुनक खजुरीबाली

❐डा.भोगेन्द्र झा

किछु मास पूर्व प्रातःकालिन भ्रमणसँ अबैतकाल जनकपुरक गोपाल धर्मशाला लग अनायास सुजीतजीसँ भेट होईत अछि आ लौकिक औपचारिकताक पश्चात बीना कोनो भूमिकाकेँ ओ हमरा कहैत छथि, 'सर, हम नव कथा संग्रह प्रकाशित करावए जा रहल छी आ भूमिका लिख देबाक लेल अपनेसँ भेटए आवए चाहैत छी ।'

हम किछु कहितियन्हि ताहिसँ पूर्वहि ओ फेर कहलन्हि, 'अपने हमर पहिलका कथासभ पढ़ल गेल छैक ?'

हम सहज भावसँ कहलियन्हि, 'नहि, हमरा अवसर पढ़बाक नहि भेटल अछि ।'

'ठीक छैक, हम अपन सभ कथा संग्रह अपनेकेँ उपलब्ध करा दैत छी, पढ़लाक बाद नव कथा संग्रहक पाण्डुलीपी अपनेकेँ देब ।'

हम अपन प्राकृतिक स्वभावसँ विपरित हुनका नहि कहि सकलियन्हि । निश्छल प्रस्तुति आ अपनत्वक बोध हमरा स्वीकृति देबाक लेल बाध्य कऽ देलक ।

ओही दिन दूपहरमे सुजीतजीक छोट भाय रंजीतजी हमरा एक पैघ लिफाफमे हुनकर पूर्व प्रकाशित कथा संग्रहसभ दए गेलाह । रंजीतजीक गेलाक बाद लिफाफसँ किताबसभ निकालहुँ तऽ सत्य कही हम अच्चम्भित भऽ गेलहुँ । लिफाफसँ निकलल 'चिड़ै', 'रिपोर्टर डायरी', 'जिद्दी', 'कोइली घूरि आउ' आ 'गन्ध' पाँच पुस्तक । हमरा 'चिड़ै' आ 'जिद्दी'क प्रकाशनक मात्र जानकारी छल, तेँ पाँच-पाँच प्रकाशित पुस्तक देखलापर स्वाभाविक रुपसँ हमरा सुखद आश्चर्य भेल-एतेक कम समयमे एतेक बेसी रचना आ ताहूमे प्रकाशित कृति ।

सचेत, सचेष्ट, सक्षम आ सफल पत्रकार सुजीतजी छथि ताहिप्रति हम विश्वस्त छलहुँ, मुदा व्यस्तम पत्रकारिताक जीवनसँ समय निकालि निरन्तर साहित्य सृजनामे सक्रिय छथि से हमरा नहि बुझल छल। हम मैथिली साहित्य संसारक वास्तविक ध्वजवाहक लोकनिक प्रभावशाली अग्रसरताक अपनत्व आ स्वामित्व ग्रहण करबासँ बञ्चित छलहुँ।

संयोगवस ओहि समयमे हमरा किछु दिनक लेल अपन पेशागत आ पारिवारिक जिम्मेवारीसँ अलग प्रवासक अवसर प्राप्त भेल आ ओहि प्रवासक सहृदय संगीक रुपमे हमरासँग रहल सुजीतजीक उपर्युक्त लिखित पाँचो संग्रह। रचनाक प्रकाशन क्रम अनुसार ओहि प्रवास कालमे हम सभ पुस्तकक अध्ययन कएलहुँ आ तखन जनलहुँ पत्रकार नहि कथाकार, साहित्यकार सुजीत कुमार झाजीकें।

हम सभ पुस्तकक प्रत्येक आखर-आखरकेँ पढ़लहुँ आ एहि निश्कर्षपर पहुचलहुँ जे सुजीतजीक कृतिसभके सोंगर (भूमिका)क कोनो प्रयोजन नहि छन्हि। हमरा जनिते साहित्यक कृति लिखल नहि जाइत छैक ओ स्वस्फूरित रुपसँ सृजित होइत छैक आ सृजना वएह कए सकैत अछि जकरामे सम्वेदना होइत छैक, सम्वेदन शून्य व्यक्ति सृजना नहि कए सकैत अछि। आ सुजीतजीक कथासभके पढ़लासँ हमरा इएह लागल जे सुजीतजी सामाजिक, मानवीय सम्वेदनासँ ओतप्रोत छथि, तेँ छोटछीन घटनाकेँ कथाक रुपमे रुपान्तरित करबामे सफलता हासिल कएने छथि। साधुवाद सुजीतजी, निरन्तरताक लेल, सृजनशीलताक लेल।

एम्हर एकदिन क्याम्पससँ घर आविए रहल छलहुँ कि सुजीतजीक फोन आएल। 'सर घरेमे छी कि ?'

'हँ, घरेमे छी', हम कहलियन्हि।

दश मिनेटमे हम आवि रहल छी आ ठीके दश मिनेटक भीतरेमे सुजीतजी आ राजेशजी (पत्रकार राजेश कुमार कर्ण) अएलाह आ बैसलाक बाद पहिल प्रश्न कएलाह, 'सर, हमर रचनासभ पढ़ल गेलै ?'

'हँ सभ पढ़लहुँ, नीक लागल, अहाँके बहुत-बहुत बधाई आ शुभकामना अछि। एहिना मैथिलीक भण्डार भरैत रहू', हम एक्के श्वासमे कहलियन्हि।

आ तखन सुजीतजी अपन व्यावसायिक ब्यागसँ एकटा प्लाष्टिकक ब्याग निकालि हमरा आगा बढ़वैत कहलथि, 'ई हमर नव कथा संग्रहक पाण्डुलीपी अछि, पढ़ि कऽ अपना दिससँ भूमिका लिखि देल जएतैक ।'

सुजीतजीक हाथसँ प्लाष्टिकक पारदर्शी ब्याग लैत उपरका पृष्ठपर लिखल आखरपर दृष्टि पड़ल-बोल्ड आखरमे लिखल छल-'खजुरीबाली' । हँ इएह नाम छन्हि सुजीतजीक नव कथा संग्रहक ।

प्रकाशोन्मुख कथा संग्रह 'खजुरीबाली' सुजीतजीक तेरह कथासभक संग्रह छन्हि । जाहिमे धुनिक भीतर, छोटसन बात, रेखाक पार, प्रसन्नताक लेनदेन, बाबूजी, संसारक रीत, गाम घूरलापर, सम्बन्धक नदी, पश्चातापक बाट, एक कप चाह, खजुरीबाली, सुखक संसार आ अस्पतालक बेंचपर ।

आजुक भौतिकवादी सभ्यताक परिवेशमे पलल बढ़ल मध्यम आ निम्न मध्यम वित्तीय वर्गक समुदायक वेदना एकदिस किछु कथाक आधारभूमि अछि तऽ किछु कथा एहि पृष्ठभूमिके टुटैत सामाजिक, पारिवारिक कथाक कथा कहैत अछि । एहने सभ पृष्ठभूमिक उपज अछि 'खजुरीबाली' । कथा संग्रहक पहिल कथा 'धुनिक भीतर' दू भाइक, दू आर्थिक/ सामाजिक परिवेश आ व्यक्तिगत भौतिक लिप्साक अभिव्यक्ति अछि, जाहिमे कथाकार अचेतन मन व्यथित भऽ जाइत छन्हि आ अपन भावनाके व्यक्त करैत छथि, 'जखन मनुष्यक उपर मनुष्यक विश्वास टुटि जाईत अछि, ई धरती सही मानेमे धरती नहि रहि जाइत अछि ।' पीड़ाक रुपमे । वस्तुतः धुनिक भीतर कथा वर्तमान युगक भौतिक लिप्साक पूर्तिक हेतु, व्यक्तिगत स्वार्थपूर्तिक लेल कोना मनुक्ख सभ किछु बिसरि जाइत अछि तकर मार्मिक अभिव्यक्ति रहल अछि ।

'छोटसन बात' कथामे विदेश जाए समस्त पुत्रक बिदाइक क्षणमे माता पिताक उल्लास, ममत्व आ विछोहक अभिव्यक्ति दैत एखनुक युवा पीढ़ीक विदेश गमनक चरम आकांक्षा स्थितिके परिलक्षित करैत अछि । तहिना 'रेखाक पार' कथामे कथाकार ग्रामीण आ शहरी परिवेशमे पल्लित कंगना (शहर) आ किशोर (ग्रामीण) क निश्छल अन्तः करणक अनुराग आ आकर्षणक बीच कथाकारक शब्दमे, 'भागैत शहर आ औंघाइत गाममे जे सीमा रेखा

छैक तकरा कोना तोड़ल जा सकैत अछि ?' कथाकार पाठक वर्गक लेल प्रश्न ठाड़ कए देने छथि ।

आधुनिकताक नामपर टुटैत सामाजिक/पारिवारिक/सांस्कृतिक प्रारुप प्रस्तुत करैत अछि कथा 'प्रसन्नताक लेनदेन'। कथित आधुनिकता आ ग्लैमरक नामपर संस्कार, संस्कृति आ सामाजिक नैतिक चरित्रक स्खलन अभिव्यक्ति अछि-कथा प्रसन्नताक लेनदेनमे। ग्लैमरक पाछा भागनिहार माय बापक पथक अनुगामिनी डिम्पीकेँ बीना विवाहक गर्भधारण विद्रोह मात्र बुझाइत छैक आ तकरा उचित प्रमाणित करबाक लेल तर्क दैत अछि-आखिर मनुष्य असगरे तऽ होइत अछि।

दोसर दिस 'बाबूजी' कथामे परम्परागत पुरुष प्रधान समाज आ परिवारक महिलाक स्थितिके प्रतिबिम्वित करैत समयक अन्तरालमे आबि रहल सोचक परिवर्तनद्वारा साकारात्मक परिवर्तनक सन्देश सेहो कथा दैत अछि।

एहि संग्रहक छठ्म कथा 'संसारक रीत' पति पत्नीक बीचक सम्बन्धक सबलता आ वैवाहिक संस्थाद्वारा सृजित नव परिवारक सृजनशीलताक क्रममे महत्वक सम्प्रेषण अछि तऽ 'गाम घूरला पर' कथामे ग्रामीण परिवेशमे प्रवासी भए गेल अपन लोकक सम्पति लेल होइत रहल कुचक्रक अभिव्यक्ति अछि जाहिमे किओ अपना गामक घरक प्रतिविम्व देखि सकैत अछि। दोसर दिस 'सम्बन्धक नदी' कथामे सन्तानक लेल अपन मायक जीवन उत्सर्गक अद्वितिय उदाहरण प्रस्तुत करैत अछि जाहिमे माय अपन बेटीक सोहागक रक्षाक लेल चुपचाप अपन किड्नी दए जमाएक जीवनक रक्षा करैत छथि। 'पश्चातापक बाट' कथा एकटा एहन पश्चातापक अग्निमे जड़ैत युवकक व्यथा कथा अछि जे अपन अतीतक अपराधसँ मुक्तिक लेल अपन आँखि दान कए दैत अछि। एहि कथाक माध्यमसँ कथाकार मानवीय सम्वेदनाक अनुपम उदाहरण प्रस्तुत करैत उद्घोष कएने छथि-आन्हर ओ होइत अछि जे आँखि रहितो सम्वेदनशील नहि होइत अछि।

'प्रेम होवए लेल एक क्षण बहुत अछि।' ई पंक्ति अछि 'एक कप चाह' शीर्षक कथाक। एहि कथामे कथाकार युवावस्थाक सहज आकर्षण आ सहकर्मी पत्रकार युवतीप्रतिक अनुरागक सहज अनुभूतिक अभिव्यक्ति अछि

जतएसँ युवक अपन भावनाके बाणी देवएमे लोक लज्जाक कारणे विवश देखल जाइत अछि।

तहिना 'खजुरीबाली' कथामे सेहो प्रेमाकर्षण अभिव्यक्ति अछि, मुदा एहि कथामे एकदिस दयनीयताक स्थिति चित्रण अछि तऽ दोसर दिस समाजमे दण्डहीनता आ महिलाप्रतिक कुदृष्टिक चित्रण सेहो कएल गेल अछि। सँगहि कथाक चरम उद्घोष अछि-प्रेमक परिणती विवाह नहि। वस्तुतः प्रेम समर्पण अछि, प्राप्ति मात्र नहि, प्रेम आत्मिक होइछ, शारीरीक मात्र नहि।

कथा संग्रहक अन्तिम दूनु कथा 'सुखक संसार' आ 'अस्पतालक बेंचपर'मे वृद्धावस्थामे बेटा पुतहुँद्वारा माय बाप प्रतिक अवहेलनाक अभिव्यक्ति अछि। जाहिमे सकारात्मक समापनक लेल कथाकार दूनु कथामे अतिथि पात्रक उपस्थितिद्वारा साकारात्मक पक्षके सेहो उजागर करबामे समर्थ रहला अछि।

सुजीतजीक 'खजुरीबाली' कथा संग्रह मात्र नहि अपितु अन्यान्य कथा संग्रहक कथासभक रसास्वादनक पश्चात कहल जा सकैत अछि जे ओ सहज आ बोधगम्य भाषामे अपन अनुभूतिके कथाक रुपमे रुपान्तरित करबामे महारथ हासिल कएने छथि। समकालिन नेपालीय मैथिली साहित्य जगतक प्रायः प्रथम व्यक्ति सुजीतजी छथि जिनकर पाँचम कथा संग्रह प्रकाशोन्मुख छन्हि। आडम्बर आ अनर्गल प्रलापसँ बहुत दूर रहि सुजीतजीक साहित्यक अथक यात्रा वस्तुतः स्तुत्य अछि आ एक मैथिली अनुरागी एवं साहित्यक अध्येताक रुपमे हमर अपेक्षा अछि जे निकट भविष्यमे ओ उपन्यासक रुपमे हमरासभके साहित्य रसक स्वादनक अवसर प्रदान करथि।

कलमजीवी सुजीतजीक कलम निरन्तर प्रवाहमान रहन्हि आ नित नवीन कृति रुपसँ मैथिली साहित्यक भण्डारकेँ श्रीवृद्धि करबामे योगदान दैत रहौथ से शुभेच्छा सहित जीवनक सम्पूर्ण सफलताक हार्दिक शुभकामना।

प्राध्यापक, राराब क्याम्पस
जनकपुरधाम

छुइ-मुइ नहि रहल आब खजुरीबाली

❐डा. दमन कुमार झा

सुजीत कुमार झा बहुमुखी प्रतिभाक धनी छथि । ई नेपालेमे नहि अपितु भारतोमे अपन परिचय बना लेने छथि । साहित्यिक लेखन हो या पत्रकारिता पकड़, ई दुनू ठाम अपन सूक्ष्म दृष्टियें सफल रहलाह अछि। आकाशवाणीक सुमधुर वाचन हो की दूरदर्शनक भव्य प्रस्तुतीकरण, सुजीतजी एतहुँ अपन सफलताक झण्डा गाड़ि देने छथि । तकर प्रमाण अछि हिनका देल जाए वला सम्मान । लेखनक हो की वाचनक लगातार हिनका नेपालक कोनो-ने- कोनो संस्थाद्वारा प्रत्येक वर्ष सम्मानित कएल जाइत रहलनि अछि ।

सुजीतजीक ई पाँचम कथा संग्रह थिकनि-खजुरीबाली । एहिसँ पूर्व हिनक चारि गोट कथा संग्रह प्रकाशित भेल छनि । यथा चिड़ै, जिद्दी, कोइली घूरि आउ आ गन्ध । जाहि माध्यमसँ ई साहित्यिक क्षेत्रमे सेहो अपन परिचय बना लेने छथि। एकर अतिरिक्त संस्मरणक पोथी (रिपोर्टर डायरी) सेहो प्रकशित ओ प्रशंसित भेल छनि । एहि पोथीमे विभिन्न भाव-भूमिक तेरह गोट कथा संगृहीत अछि, जे बिलटइत गाम, टुटैत प्रेम, बिसरैत संस्कार, छुटैत सम्बन्धपर केन्द्रित अछि। संस्कारक परिवर्तन समाज परिवर्तनक कारण थिक । ओ परिवर्तन नीक दिस अछि की अधलाह दिस ई तँ बादमे बुझबामे अबैत छै। तत्काल तऽ ओ नीके लगैत अछि। तँ नवका पीड़ी अपन संस्कार बदलि रहल अछि। ई कहू जे बिसरि रहल अछि। आब ओकरा पैघ-छोटक संस्कार नहि रहलै। उठबा बैसबापर विचार नहि रहलै। बजबा-भुकबापर नियन्त्रण नहि रहलै। ओ आब अपन मनक अपने मालिक भऽ गेल अछि। अपन नीक-बेजाय ओ अपने सोचैत अछि। स्वतन्त्र अछि। खासकऽ तखन,

जखन ओ विवाह जोगरक होइत अछि। बेटा अपन अनुसार विवाह करए चाहैत अछि आ बाप अपना तरहेँ करबए चाहै छथि। एहिमे मन मुटाब होइत अछि, आ परिवार टुटि जाइत अछि। विवाह संस्कार वर्तमान कालमे बड़का परिवर्तनक कारण भऽ गेल अछि। एहिपर आधारित कथा अछि 'बाबूजी'। जाहिमे बेटा अन्तरजातीय विवाह कऽ लैत अछि। बाबूजीक सिद्धान्तक विपरीत विवाह होएबाक कारणे बेटाकेँ घरसँ निकालि दैत छथिन। बेटा चलि जाइत अछि। बेटा आइ बहुत दिनपर भेंट करए माँ-बाबूजीसँ आएल अछि। अजगुत लागि रहल छै। माँक आवेश आ पिताक पाषण हृदय मोम भऽ गेल छनि। हुनक सोच बेटाक सोचसँ मेल खाए लगलनि अछि । अपन छोट पोतीकेँ देखबा लेल उताहुल भऽ गेलाह अछि। ओ आब बेटाक आँखिसँ दुनियाँ देखए लगलाह अछि। बेटाक चश्मा आब नीक लगए लगलनि अछि, जे कहिओ खराब लगैत छलनि। ....'बाबूजी ई चश्मा ..?..हँ ई तोरे छौक, बाबूजी चश्मा निकालि कऽ एक बेर देखलाह आ फेर लगा लेलन्हि। (अहाँ बला ....?..(..ओ ? ओ तऽ आलमारीपर राखल छैक। हमरा एहिसँ साफदेखाइत अछि। 'ई पंक्ति बहुत किछु कहि जाइत अछि। कथा सफल भऽ गेल अछि।

तहिना 'सुखक संसार' कथामे संस्कारक प्रमुखता देखाओल गेल अछि। लोक अपन बेटीकेँ पढ़ा-लिखा कऽ बिझनुक तऽ बना दैत अछि, मुदा ओकरा उचित संस्कार नहि दैत अछि। भगवती बाबू अपन सुपुत्रीकेँ उचित संस्कार नहि दऽ सकलाह तकर परिणाम ई भेल जे घूरन बाबूक बसल-बसायल घर उजरै पर छनि। कोना, तकर जीवन्त चित्रण सुखक संसारमे देखल जा सकैत अछि। गाम, गाम होइत अछि। एकर अपन अलग जीवन छै। अलग सुवास छै । जहिआसँ शहरक पीच रोड गामधरि जाए लागल अछि, गाम बदलए लागल अछि। मुदा एखनो गाममे बहुत किछु बचल अछि। ई बात शहरी जीवनमे पलल-बढ़ल कंगनाकें बुझा पड़ल जखन ओ पहिलबेर गाम आयल आ गामक खेत, गाछी, पोखरिकें देखलक तऽ ओ गामेक भऽ कऽ रहि जाए चाहैत अछि। 'रेखाक पार' कथामे गामक एहि आकर्षणकें नायक किशोरक ई उक्ति आर जीवन्त बना देने अछि .....'ई तँ माटि अछि, माटिमे कथिक गन्दा.....महिंसकें सेहो माटि पसिन्न अछि, गाय सेहो माटिसँ प्रेम

करैत अछि’, एकटा हमसभ छी जे माटिसँ दूर भेल जा रहल छी । सोचू माटि माने मातृभूमि, माटि माने मातृभाषा, माटि माने अन्न आ माटि माने जीवन । किछु एहि तरहक बात ‘गाम घुरलापर’ कथामे देखल जा सकैत अछि। नोकरी करबाक लेल लोक भलेही शहर चलि जाइत हो किन्तु अवकाश ग्रहण केलाक बाद अपन बाप-पुरखाद्वारा अरजल माटिकेँ रक्षार्थ पुनः गाम घूमि अबैत अछि। गामक प्रति मोहकेँ एहि कथामे देखाओल गेल अछि। पुत्रक प्रति पिताक स्नेहकें ‘छोटसन बातमे’ देखाओल गेल अछि। तऽ बेटीक उपयोगिता आ ओकर त्यागकेँ ‘संसारक रीत’मे वर्णन कएल गेल अछि। बेटी घरक शान होइत अछि, अभिमान होइत अछि। बेटीक पालन-पोषण, शिक्षा-दीक्षा, संस्कारक ज्ञान अपन घरमे माँ-बाप लग होइत छै। किन्तु विवाहक बाद ओ सासुर चल जाइत अछि। बेटी घरक लक्ष्मी होइत अछि। अपन घरकें त्यागि दोसर घरकें भरि दैत अछि। इएह तऽ बेटीक जीवन थिकै। अपन सभ किछुकेँ छोड़ि दोसरकें घरकें इजोत कऽ दैत अछि। माधुरी ई सोचि चिन्तित भऽ जाइत अछि जखन की ओकरा संतान होनिहारी छै। ओ मने-मने बेटीक होयबा पर डरा रहल अछि। ओकरो ई डर छै जे कहीं बेटी भेलै तँ ओहो ओकरे जेकाँ अपन घर छोड़ि कऽ सासुर चल जेतै। मुदा ओ लागले धीरज रखैत अछि आ सोचैत अछि ई कोनो नव बात नहि छै, ई तँ संसारक रीत छै। वर्तमान समाज पितृसतात्मक अछि, जाहिमे पुरुषक प्रमुखता रहैत अयलैक अछि। जखन की नारीक उपयोगिता पुरुषसँ कम नहि छै। बच्चा पर दुनूक अधिकार सामान छै। तँ नारीसभ अपन सत्ताक लेल अपन अधिकारक लेल तत्पर देखल जा रहल छथि।

आब पिताक सँग मायोक नाम ठाम-ठाम रहय। ‘प्रसन्नताक लेन देन’मे एही बातक आवाज उठाओल गेल अछि। .....‘नओ महिना बच्चाकें पेटमे पालत माय, तकलीफ उठाओत माय आ नाम बाबूजीकें ? ई किएक ? हमरा नाममे की खराबी अछि।’ ई उक्ति मायक अधिकारकें आर पुष्ट करैत अछि। आ दोसर दिस एहिमे स्त्री-पुरुषक अनैतिक सम्बन्धक कारणे उत्पन्न समस्या पर प्रश्न चिन्ह ठाढ़ कयल गेल अछि।

माय-बाप अपन संतानक पालन-पोषण लेल की-की ने करैत अछि, ओतहि ओकर संतान माय-बापकें असहाय भेला पर एसगर छोड़ि दैत अछि। ओकरा कोन-कोन पड़तारना नहि दैत अछि। ओ आब बलाय लागए लगैत छै। भार भऽ जाइत छै। माय-बाप सदिखन अपन संतानक लेल दीर्घायू होयबाक आ अपनो उम्र ओकरा लागि जयबाक कामना करैत रहैत अछि। आइ वएह सन्तान ओकर मृत्युक हेतु ईश्वरसँ कामना करैत अछि। पुत्र केहनो भऽ जाए माता कुमाता नहि भऽ सकैत अछि, एही बातक सन्देश 'अस्पतालक बेंच पर' कथामे देखल जा सकैत अछि।

प्रेम बीना विश्वासकँ नहि भऽ सकैछ। ओ दुनू दिससँ राखए पड़ैत छै। किछु प्रेम व्यक्त होइत छै किछु अव्यक्त। एक दिसाह प्रेम ठीक नहि।' किछु एहनेसन बात 'पश्चातापक बाट' कथामे पाओले जा सकैत अछि। प्रेम असफल भेलापर बहुत घातक भऽ जाइत छै। प्रेमी-प्रेमिकाक प्रेम एक-दोसरकें बूझल रहक चाही एहि बातक इशारा 'एक कप चाह' कथामे कयल गेल अछि ....'ककरोसँ प्रेम करब बढ़ियाँ बात। हुनका जाकऽ बतायब आओर बढियाँ बात। मुदा हुनका बिनु बुझने कोनो निर्णयधरि पहुँचब बढियाँ बात नहि।' जखन सभ रंग फीका भऽ जाइत छै तँ खूनक रंग आर पकिया भऽ जाइत छै। एहि बातकँ 'सम्बन्धक नदी' मे देखल जा सकैत अछि जे इन्दुक माय अपन किड्नी दऽ कऽ इन्दुक सोहागकँ कोना बचा लैत छथिन।

पैघ भाइ अभिभावक होइत छथि। छोटक लेल हुनकर कर्तब्य किछु बेसिए रहैत छनि। ओकरा ओ सभसँ बेसी प्रेम करैत छथि। ओकरा प्रति त्यागक भावना अत्यधिक रहैत छनि। ओकर सयो गलती कँ ओ माफ कऽ दैत छथि। कतेको गलती कँ ओ अपनामे पचा लैत छथि। ओकर विकासमे ओ अपन विकास देखैत छथि। किछु एहनेसन बात 'धुनिक भीतर' कथामे व्यक्त कयल गेल अछि। जतए पैघ भैयारीक त्यागक कारणे छोट भाइ हाकिम भऽ जाइत छै। मुदा छोट भाइ अपन कर्तव्य करबासँ च्युत भऽ जाइत अछि।

महिला आब घोघ तर लजाइत नहि, घरमे नुकाइत नहि, दिनमे बतियाइत नहि, छुइ-मुइ सन रहल नहि। ओ आब बसमे छड़पैत, ट्रेनमे लटकैत, मेट्रोमे

पिचाइत, पुरुषसँग डेगसँ डेग मिलबैत, दौड़ैत एक शक्ति थिक। जे आब आत्मनिर्भर हुअ चाहैत अछि। 'खजुरीबाली' ओहने आत्मनिर्भर भऽ समाजक सोझाँ ठाढ़े अछि। जकर माँ-बापक हत्या माओवादीद्वारा कऽ देल गेल अछि। आ ओकरा ओकर डरसँ गामसँ भगा देल गेल अछि, मुदा खजुरीबाली हिम्मत नहि हारैत अछि। ओ रेजाक काजसँ अपन जीवन शुरु करैत आइ सिलाइ-कटाइमे माहिर भऽ गेल अछि। आब ओ अपन पैर पर ठाढ़ भऽ गेल अछि।

आत्मनिर्भर भऽ गेल अछि। कथामे उतार-चढ़ाव अछि, प्रेम-विछोह अछि।

'खजुरीबाली' महिला सशक्तिकरणक प्रतीक अछि। जे पोथीक नामकरण अछि।

एहि तरहें देखै छी जे सुजीत कुमार झाक कथा प्रस्तुतीकरणक हिसाबेँ भनहि दीर्घ हो, किन्तु विषय वस्तुक कारणे रोचक अछि। पढ़बा काल कनेक धैर्य राखए पड़ैत छै किन्तु परिणाम सुखद भेटै छै। आम बड़ नीक लगाइए तँ ओहिना नहि खा लैत छी। ओकरा सोहए पड़ैत अछि, तखने ओकर मधुरताक स्वाद लैत छी। से सुजीत जीक कथासँग सेहो लागू होइत अछि। कथा सुपक अछि। सुमधुर अछि। कने छील-छालि कऽ रमनगर बना दियौ, तखन फेर देखू एकर स्वाद। सुजीत जीक आँखि सदिखन चौकन्न रहैत छनि। सूचना उपलब्ध करबाक हेतु सेहो आ साहित्य निर्माण लेल सेहो। तेँ दुनू ठाम दुनू रुपमे ई सफल भेल छथि।

ई एहिना लिखैत रहथु। हमरा सभकेँ नव-नव वस्तु पढ़बाक लेल देल करथु, एहि शुभकामनाक सँग नव पोथी प्रकाशनक लेल बधाई।

एशोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष
मैथिली विभाग
जगदीश नन्दन महाविद्यालय
मधुवनी

गंगाक पवित्र जलधारा जेकाँ प्रवाहित होइत रही

❑विजय दत्त

युवा शक्ति मात्र परिवर्तन नहि नवीन पथक प्रदर्शक होइत अछि ई यथार्थ अछि। मिथिलाक भूमि राजनीतिक, नागरिक, आर्थिक, सामाजिक आ सांस्कृति आधार आ कर्तव्यक हेतु सदा सदिखन विश्व समक्ष अपन पहिल आ अग्रगामी डेग दैत आ बढ़वैत आएल अछि।

सांस्कृतिक पहिचानक राजधानीक रुपमे रहल जनकपुर नगरीक विशेषता रहल अछि जे नित्य नूतन रचनात्मक काज होइत रहैत अछि। सांस्कृतिक अधिकार हेतु दत्तचित कर्तव्यक आवश्यकताक तराजुपर कथा संग्रह एकदम सामाजिक एवं सांस्कृतिक धरातलपर रहल अछि।

युवा साहित्यकार श्री सुजीत कुमार झाक प्रकाशित पुस्तक आ फुटकर रचनासभ सामाजिक अवस्थाके यर्थाथ वर्णन एवं चित्रण करबाक लेल अपना आपमे स्वयं सिद्ध अछि। हिनक नव कथा संग्रहमे महिलावादीक यर्थाथ चित्रण, बाल मनोविज्ञान आ सामाजिक अवस्थाक वर्णन देखल जा सकैत अछि।

ई रचना नेपालीय मैथिली आकाशक एक गोट चमकैत नक्षत्रक रुपमे स्थापित होइत जाहिसँ एक सय बर्षक बादो, नव-नव पाठकसभके मिथिलाक तत्कालिन अवस्थाक सम्बन्धमे समुचित जानकारी देबाक हेतु सक्षक आ समार्थ्य होएत से हमरा विश्वास अछि।

यदि महान नाटककार विलियम सेक्सपीयर आ महान सिंगारिक कवि बर्ड स्वयं तात्कालिन समयमे अपन-अपन रचनामे नहि समाविष्ट कएने रहितथि तऽ एखनके पाठकके तत्कालिन सामाजिक सांस्कृतिक अवस्थाके ज्ञान पर्याप्त रुपेण नहि होवए सकथि। ताहि हेतु श्रष्टाके समाजक अग्रगणीय

इन्जिनियर कहल जाइत अछि। जाहिके रचनाद्वारा एकटा सभ्य समाजके मार्गचित्र बनाओल जाइत अछि।

युवा साहित्यकार श्री सुजीत कुमार झाक साहित्यिक रचना गंगाक पवित्र जलधारा जेकाँ सदिखन प्रभावित होइत रहे से हमर शुभकामना अछि। ओना हुनक पत्रकारिता सेहो बहुत उच्च स्थानपर रहल छन्हि।

सुजीत जीक एहि प्रकारक साहित्यिक रचना आ प्रकाशनक डेग नव पुस्ताक लेल मीलक पाथरक रुपमे प्रस्तुत होएत से आशा करैत छी।

मैथिली पाठकके ई पुस्तक एकटा नव स्वाद देत सेहो विश्वास अछि।

मानवअधिकारकर्मी

किछु हमरो

❐सुजीत कुमार झा

खजुरीबाली कथासंग्रह अन्ततः निकलिए गेल । पहिल कथा संग्रह चिड़ै सँग ई नामसँ कथासंग्रह लिखने छलहुँ । ओहि समयमे एकरा निकालएके प्रण लेने रही मुदा रिपोर्टर डायरी, जिद्दी, कोइली घूरि आउ, गन्ध क्रमशः निकलैत गेल आ ओहिक्रममे खजुरीबाली पछुआ गेल ।

खजुरीबाली पछुआएके बहुत कारणमेसँ एक छल प्रारम्भिक अवस्थामे लिखल गेल कथासभ । ओ कथासभके परिमार्जनक आवश्यकता छल । अबेरेसँ सही परिमार्जनक लेल अन्ततः योग मिलिए गेल । योगके लाख-लाख धन्यवाद ।

ई कथा संग्रह निकालएके अवस्थामे पहुँचलाक बाद हमरा स्वयं अपार हर्ष भऽ रहल अछि । हमर पहिल कथा संग्रह चिड़ैसँ पहिने एकटा ओही नामसँ पुस्तक निकालएके तैयारी कएने छलहुँ । एतेकधरि कि कम्प्युटर टाईपसँ लऽ कऽ पेजमे सेहो चलि गेल छल मुदा एकटा प्राविधिक गड़बड़ीक कारण सभ समाप्त भऽ गेल छल । एकरबाद चिड़ै नामसँ फेर पुस्तक लिखलहुँ । हमर एहि कृतिके अपनेसभक सोझा आवएसँ पहिने समाप्त होवएके डर बनए लागल छल । किछु प्रेरणादायी व्यक्तित्वक कारण अन्ततः निकलिए गेल ।

९ टा कथा पुराने अछि आ एहिमे ४ टा कथा नव जोड़लहुँ अछि । फेर पुरानो कथासभ अछि एकरो नव ढङ्गसँ लिखएके प्रयास भेल अछि । एकटा लेखकके रुपमे नव आ पुरानमे खासे अन्तर नहि हुए तकर प्रयास अन्तिम हदधरि कएलहुँ अछि ।

खजुरीबाली पुस्तक हमरा लेल एकटा आओर महत्व रखैत अछि । एहि पुस्तक सँग हम स्वयं प्रकाशन क्षेत्रमे डेग उठेलहुँ अछि । अपन माँ जयमंगला देवी झाक नामसँ एकटा पुस्तक प्रकाशन गृह स्थापना कएलहुँ

अछि। काज तऽ चुनौतिएपूर्ण अछि तखन अपनेसभक आशीर्वाद हमर ई यात्राके सहज बनाओत एकर अपेक्षा करैत छी।

हमर अन्य कृति जेकाँ एकरो निकालएमे मित्र रामअशिष यादव, राजेश कुमार कर्ण, भाई सुधीर आचार्य, अमरकान्त अमर आ आफन्त नेपालक कार्यक्रम संयोजक जयप्रकाश मण्डलके महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि। हिनका लोकनिके प्रति आभार प्रकट करैत छी। तहिना एहि संग्रहमे भूमिका लिखएबला डा.भोगेन्द्र झा, डा.दमन कुमार झा आ विजय दत्तके हृदयसँ श्रद्धा व्यक्त करैत छी। किताबक अन्तिम पृष्ठपर आशिर्वाद लिख कऽ उपकार कऽ देबाक लेल एमनेष्टि ईन्टरनेसनल नेपालक केन्द्रिय अध्यक्ष शम्भु ठाकुर, एभिन्यूजक ब्रोडकाष्टिङ्ग एडिटर रञ्जन झा आ मिथिला नाट्यकला परिषद्क अध्यक्ष मदन ठाकुर प्रति सेहो आभार प्रकट करैत छी। मैथिलीक वरिष्ठ साहित्यकार डा.राजेन्द्र विमल, डा.सुरेन्द्र लाभ, समाजसेवी अमरचन्द्र अनिल, हमर पीसा चन्द्रमोहन झा पड़वा, रामानन्द युवा क्लबक अध्यक्ष नवीन कुमार मिश्र, पूर्व अध्यक्ष जीवनाथ चौधरी, चर्चित गीतकार अशोक दत्त, नाटककार अवधेश पोखरेल, न्यू भिजन आवासीय माध्यमिक विद्यालयक प्रिन्सिपल विश्वलाल सिंहक आशीर्वाद प्रेरणाक काज करैत रहैत अछि। सहकर्मी कैलाश दासके सेहो ई पुस्तक निकालएमे महत्पूर्ण योगदान रहल अछि। हमर अन्य कृति जेकाँ एकरो ओहे डिजाईन कएने छथि।

एकर अतिरिक्त एहि पुस्तक निकालएमे भाई विपिन मिश्र, रामएकवाल महरा, प्रतिभा झा, राकेश कुमार सिंह, घनश्याम मिश्र, प्रकाश प्रेमी, संजय झा, सिरहाक नरेश चन्द्र वरबरिया आ हमर छोट भाई रंजीत कुमार झाके सेहो महत्वपूर्ण योगदान रहल अछि।

तहिना पुस्तकक कभर पर अपन फोटो दऽ कऽ बहुत बड़का उपकार कऽ देबाक लेल मिथिला नाट्य कला परिषदक रिना रिमालके सेहो बहुत-बहुत धन्यवाद। ओ फोटोक लेल सहयोग कएनिहार परमेश झाके सेहो अभार व्यक्त करैत छी।

श्रद्धेय पाठक वृन्द् हमर अन्य कृति जेकाँ एकरो अपन हृदयमे स्थान देबैक से विश्वास अछि।

sujitjha100.80@gmail.com

शीर्षक क्रम

धुनिक भीतर

'काठमाण्डूक लोक बहुत ठग होइत अछि ने अंकल ?' प्राची पुछलक ।

शायद हम ओकरा कहि पबितहुँ, नहि बेटी मनुष्य सभठाम सामान होइत अछि। काठमाण्डूकँ हुए वा वीरगञ्जकँ। अमेरिकाकँ हुए वा लण्डनकँ । हमर स्कूल मास्टरबला वुद्धिसँ प्राचीकँ बुझाएब उचित छल, वास्तविक चीज होइत अछि विश्वास । मनुष्यक उपर मनुष्यक विश्वास रहएकँ बात अछि । जखन मनुष्यक उपर मनुष्यक विश्वास टुटि जाइत अछि, ई धरती सही मानेमे धरती नहि रहि जाइत अछि ।

मुदा हम कहि नहि पेलहुं । प्राचीकँ अंकलबला आवाज लगेमे अटैक गेल । अंकल ! जेना की ओकर बड़का बाबूजी नहि होइ । ओकर बाबू परमेश हमर छोट भाइ होइत अछि । ओ हमर किछु नहि अछि । ई बात सत्य अछि प्राचीक सँग हमर घनिष्ठता मात्र दू दिनक अछि। गामक माटिकँ कहिओ ओ छुनए नहि अछि। ओकरा मूल रुपसँ मैथिल नहि कहल जा सकैत अछि। ओकर १२ बर्षक स्मरणमे हमर कोनो स्थान नहि अछि। शायद ओकर आगा बड़का बाबूजीक स्थान अंकलक रुपमे ग्रहणीय छल ?

काल्हि हम आ प्राची भक्तपुर गेल छलहुँ। परमेश पूरे व्यवस्था कऽ देने छल। बात भेल छल भक्तपुरक अतिरिक्त ललितपुरक धार्मिक स्थलसभकेँ घुमाबएकेँ मुदा बस काठमाण्डूसँ अबेरसँ निकललाक कारण भक्तपुर मात्र घुमा सकल। हमरा कहल गेल छल निर्दिष्ट चौक लग भोर ८ बजे ठाढ़ होएबाक लेल मुदा बस १२ बजे आएल आ फेर अन्य टुरिष्टसभकेँ लेबए एयरपोर्ट चलिगेल। ओहिमे अबेर भऽ गेल छल। भक्तपुरसँ आबएमे बहुत राति भऽ गेल।

आइ फेर भोर ८ बजेक बस छल, काठमाण्डूक भ्रमणक। हमरासँग प्राची छल। परमेश पूरे प्रबन्ध कऽ देने छल। बात भेल छल नजदिके रहल चौकसँ बस पकरएकेँ। काल्हिक दिनक अभिज्ञतासँ प्राची प्रश्न कएलक, 'काठमाण्डूक लोक बहुत ठग होइत अछि अंकल ?'

'नहि तेहन बात नहि अछि।'

'मम्मी तऽ कहैत अछि, ओ ककरो पर विश्वास नहि करैत अछि।'

प्राचीक मम्मी कहिओ हमरासँग दुर्व्यवहार नहि कएलीह। भलेही हमरा देखि कऽ माथ नहि झापैत छलीह, सीधे मुहँ हमरासँ बात करैत छलीह मुदा कहिओ दुर्व्यवहार नहि कएलीह। हुनकर व्यवहार हरेक समय भद्र छल, बातचित हरेक समय मधुर। मुदा पता नहि किए, हम हुनका आगा सहज नहि भऽ पबैत छलहुँ ? हुनकर फेशनक लेल ? स्टाइलक लेल ? बाहर जाइत समय ओ सलवार कुर्ती पहिरैत छलीह। घरमे रहैत समय पेन्ट आ लम्बा गन्जी। शायद प्रेमाकेँ ई सभ बात पसिन नहि आबि रहल छलन्हि। एहि सभमे ओ व्यवहार कुशलताक अभाव देखैत छलीह। मुदा हमरा ई सभ बात कनिको खराब नहि लगैत छल। भावहु यदि फेशन करए चाहैत छथि तऽ करौथु, मुदा शायद हमर गुञ्जा बाहर रहला पर एहने फेशन करए ?

तैयो परमेशक कनियाँक आगा हम सहज नहि भऽ पेलहुँ। स्वयंकेँ छोट अनुभव करए लगलहुँ। हमर देहातीपन, हमरा संकुचित करए लागल। आब हम देखि रहल छलहुँ, परमेशक लग सेहो हमरा सहज

नहि लागि रहल छल। कतए गेल ओ परमेश, जे हमरा आगा मुहँ खोलि कऽ बात नहि कऽ पबैत छल। काठमाण्डू जाएसँ पूर्व कतेक रुपैयाक आवश्यकता पड़त, ओ सीधा हमरा नहि कहि भौजीक माध्यमसँ कहबैत छल। वएह परमेश आब कोन आत्मविश्वासक सँग हमर आगा ठाढ़ होइत अछि, जखन की हमरा ओकर आगा जाएकँ साहस नहि होइत अछि। मुदा किए ?

परमेश हमरासँ सात बर्षक छोट अछि। ओकरा आ हमरा बीच एकटा बहिन अछि। हम घरमे बड़का बेटा छलहुँ। छोट रही तऽ परमेशकँ बहुत खौझबैत छलहुँ तखन ओ कानि-कानि कऽ बाबूजीसँ बात सुनबैत छल। एकदिन बाबूजी तऽ एतेक डटलन्हि जे पूरे दिन डरक कारण बाहर आम गाछीमे घुमैत रहलहुँ।

बच्चाक मीठ-मीठ बात। परमेशकँ माछ पकड़एकँ सख। नहाइत समय काटमे माछ पकड़ि कऽ अनैत छल। हमरा गाममे एकटा पनि छल। पनि हमर घरे नजदिके बाटे बहैत छल। ओ पनिमे पोठिया, गरैइ, गरचुन्नी माछ कुदैत रहैत छल। खेल-खेलमे परमेश दौड़ कऽ पनिमे जाइत छल आ दुनू हाथसँ माछ पकड़िक आनि लैत छल। सभ कहैत छल ओहि जन्ममे ई मल्लाह छल।

परमेश बच्चेसँ बहुत फेशन करैत छल। ओ माँकँ अति प्रिय छल। हमरा एसएलसी पास करएधरि अपना लग कोनो पैसा नहि रहैत छल। पाकेटमनी, हाथक खर्चक प्रश्ने नहि उठैत छल। मुदा बच्चेसँ परमेशकँ चुकिआ छल। ओ चुकिआमे कतहुँसँ पैसा लऽ कऽ रखैत छल। आवश्यक पड़ला पर ओ, ओहिमेसँ माँकँ उधारो दैत छल।

परमेशक सँग हमरा कतेको बातक मेल नहि खाति छल। ओ बच्चेसँ अपन कपड़ा, चेहरा, माथक केश सभ प्रति बहुत जागरुक छल। हम नहि छलहुँ। ओकर अपन किछु चीज छल आ ओ ओहिसभ समानकँ बहुत सम्हारि कऽ रखैत छल। ओकर अपन ओछाएन, चादैर तकिआ एतएधरि की एकटा छोट रेडियो सेहो छल। हमरा किछु नहि

छल। हम कोनो चीजक लेल प्रयास नहि करैत छलहुँ। हम अपन कपड़ा स्वयं पसिन नहि करैत छलहुँ आ नहि अपन ओछाएन। कतेको बेर तऽ कोनो चौकीओ हमर नहि रहैत छल।

एकबेर गामक नजदिकक शहरमे मेला लागल छल। मौतक कुवा सेहो देखाओल जाइत छल। हम जाति समय टिकटक पैसाक अतिरिक्त एक पैसा बेसी नहि मँगलहुं मुदा परमेश जाइत समय बटखर्चा सेहो मँगने छल आ माँ देनहो छल। कतेकबेर परमेशक पैसा मँगला पर माँ बाबूजीसँ झगड़ा सेहो कएने छल। परमेश माँकेँ चहेता छल आ हम बाबूजीकेँ चहेता।

'डैडी कहैत छल अहाँ बहुत पढ़ैत छलहुँ। एसएलसी परीक्षामे जिल्ला फस्ट भेल रही। अहाँ डैडी जेकाँ हाकिम नहि बनि गामक स्कूलमे शिक्षक किए बनि गेलहुँ ?'

प्राचीक ई प्रश्नसँ हम फेर फिर्ता चलि अएलहुं, काठमाण्डू शहरक बालाजू बस स्टैण्ड लग।

ओतए ओ बस नहि देखलहुं। हमर बसक नाम छल पशुपति यात्रा। दिनक ९ बाजि गेल छल। प्रचण्ड गर्मी लागि रहल छल। प्राची वाटर वोतल अपनासँग रखने छल।

परमेशक कनियाँ बहुत होसियार आ हिसाबी छलीह। बेरियाक लेल जलपान, बाटक लेल पानि। परमेश जेकाँ ओहो बहुत साफ सुथरी, घरकेँ बुहत बढ़ियासँ सजा कऽ रखैत छलीह। हरेक दिन घरमे झाडु पोछा लगबैत छलीह। हम पहिने कहिओ एहिबात पर ध्यान नहि रखैत छलहुं जे हमरा गाममे हमर कनियाँ एहि तरहे सफाई करैत छथि वा नहि। हँ दिआवातीक समय घर धो कऽ साफ करैत हम हरेक बेर देखैत छी।

'अहाँ गामक स्कूलमे शिक्षक किए बनलहुँ ?'

परमेशक तुलनामे हम एकटा बढ़िया विद्यार्थी छलहुँ। ओहि समय अवजेक्टिभ टाइपक प्रश्न नहि होइत छल। आइ काल्हिक बच्चाक जेकाँ

एक सयमे ९०/९५ नम्बर नहि देखल जाइत छल । १ सयमे ६०/६५ नम्बर लाएब सेहो कठीन काज होइत छल । ओहि समयमे हम १ सयमे ८० मार्क अनने छलहुँ । मुदा किओ सोचने नहि छल, हम बड़का कलेजमे पढ़ी । हमरा मोनमे कहिओ ई बात नहि आएल छल अस्कल, त्रिचन्द्र कलेजमे पढ़ी । गामक लगक कलेजमे पढ़ने छलहुँ । आइएससीक बाद बिएस्सी नहि छल । कहिओ किओ हमरा मेडिकल पढ़ए पड़त बतौने नहि छल । हम विएस्सी सेहो नहि कएलहुँ । किओ कहने छल । विज्ञान लऽ कऽ ग्रजुएट होबएमे कोनो फाइदा नहि । सहीमे हमरा घरमे ईन्जिनियर वा डाक्टर होबएकैँ किओ सोचने नहि छल । ककरो एतेक पढ़ए लेल जतेक पैसाक आवश्यकता पड़त ओतेक पैसा देवाक सामर्थ्य माँ बाबूजीमे नहि छल ।

हमर गाम पूरे बैक वार्ड जेकाँ छल । नजदिक कोनो कलकारखाना नहि छल । लोककैँ प्रमुख व्यावसाय खेतीपाती करब छल । गाममे बहुत दिन धरि नोकरी करएसँ लोक बुझैत छल, स्कूलक मास्टरी । नहि भेला पर पञ्जाब कमाएब । बड़का लोक कुशल मंगल पुछए समय कहैत छल, तो आइकाल्हि कोन स्कूलमे काज करैत छएँ ?

परमेश ओहि समय अधिकृत भऽ गेल छल । हमरा जिलामे ई एकटा नव बात छल । हाकिम होबएकैँ लेल कोन परीक्षा पास करए पड़ैत अछि, लोककैँ पत्ता नहि छल । कतेको गोटे आश्चर्यसँ पुछैत छलाह, 'हाकिमक पढ़ाई कतए होइत अछि बेटा ?'

परमेश बच्चेसँ स्मार्ट छल । सँगहि उत्तर देलक,' काठमाण्डूमे ।'

'की-की पढ़बैत अछि ?'

'पहिल पाठ होइत अछि, अहाँ हाकिम छी । दोसर जेकाँ नहि । कोना बैसब, कोना खोखब, कोन तरहे बातमे पोल्टिक्स मिला कऽ बाजब ।'

परमेशक व्यङ्ग सेहो गामबलासभकैँ बहुत सुखद लागि रहल छल ।

परमेश एहन लोक अछि । हमरासँ अलग । हम लोकक आगा सहज नहि भऽ पाबि रहल छलहुँ मुदा ओकरा कोनो लज्जा नहि होइत छल ।

परमेश एसएलसी द्वितीय श्रेणीमे पास कएलक। पहिल श्रेणीकेँ लेल पाँच प्रतिशत नम्बर बाँकी छल। हम ओहि समय गामक स्कूलमे ज्वाइन कऽ लेलहुँ। परमेश जीद्द कएलक। ओ नजदिकक कलेजमे नहि पढ़ब, ओ बड़का कलेजमे पढ़त। बाबूजी आगि बबुला भऽ गेलाह। ओहि समय बाहर पढ़एमे एक हजार रुपैया खर्च अबैत छल। एतेक पैसा केँ देत ? आइसँ तीस बर्ष पुरान बात अछि। हमरा पाँच सय रुपैया तलब भेटैत छल। बाबूजीकेँ कहलहुँ, 'पैसा घटलापर हमरा तलबमेसँ सेहो परमेशकेँ दऽ देब ओकरा बाहर जाए दिऔक।'

परमेश काठमाण्डू गेल पढ़ाई करए लागल। नम्बर कम होबएकेँ कारण साइन्समे एडमिशन नहि भेल।

एक हजारसँ ओकर दिनचर्या नहि चलि रहल छल। बादमे ओ टियुशन सेहो पढ़ाबए लागल। परमेशकेँ टियुशन पढ़ाबएबला बात सुनि बाबूजी बहुत दुःखित भेलाह। बाबूजीक बहुत बात हम नहि बतौने छलहुँ जेना परमेश काठमाण्डू जा कऽ सिगरेट पीबसिख लेने छल, बीच–बीचमे दारुओ पीबैत अछि। एकबेर हम पढ़ाईक टेबुल पर सिगरेट देखने छलहुँ। ओहि समय धरि ओ दायित्व सम्पन्न नहि भेल छल। परमेशक ओ सभ रुपढंग देखि कऽ चुप्प रहब उचित बुझलहुँ।

परमेश बुझि रहल छल ओकरा नोकरी नहि भेटत। ओकर अनिश्चय भविष्य निराश करए लागल छल। ओ कविता लिखब आरम्भ कएलक। दू तीनटा लड़कीसँ प्रेम करए लागल। जखन मोन करैत छल शारीरिक सम्बन्ध बना लैत छल। एक दूबेर तऽ वेश्यालयसभमे सेहो गेल।

ओ बुझि नहि पाबि रहल छल, ओकर प्रत्येक काजकेँ हमरा जानकारी अछि। हम कोना बुझैत छी ? कहिओ कोनो मित्रसँ, कहिओ परमेश लग आबए बला चिठ्ठीसँ, कहिओ परमेशकेँ सामानसभसँ मुदा परमेशकेँ तऽ हमर निगरानी हरेक समय छल जेना की ओ हमर छोट भाई नहि भऽ हमर बेटा हुए।

मुदा माँ ई बात मानए लेल तैयार नहि छल । ओ सोचैत छल, हम परमेशसँ ईर्ष्या करैत छी । एहिद्वारे बेर–बेर झूठफुसक बात करैत छी । बाबूजीकेँ कहब हमरा लेल सम्भव नहि छल । ओ तामसमे आबि कऽ परमेशकेँ पिट दैत छलाह । आखिर नीरबतामे सभ चीजकेँ छोड़ि कऽ आओर कोनो उपाय नहि छल ।

शायद माँक बात सही छल । ओ कहैत छल, मिलाबटकेँ बिना कोनो सोनकेँ गहना नहि बनाओल जा सकैत अछि । एहिद्वारे मनुष्यकेँ चरित्रमे कोनो बढ़िया संस्कार आ किछु खराब संस्कार रहब आवश्यक अछि । परमेशक चरित्रक पूरे स्खलन स्वतः धोआ गेल, ओकरा अधिकृत होबएकेँ खबरि सुनि कऽ । बाबूजी प्रशन्न छलाह, माँ सेहो बहुत । हमर तऽ गर्वसँ छाती चौड़ा भऽ गेल छल । राताराति गामबलाक आँखिमे हमर सभक सम्मान बढ़ि गेल छल । लोक हमरासभकेँ बड़का लोकक श्रेणी देबए लागल । गामक स्कूलक संचालक समितिक अध्यक्ष देखाई देला पर पहिने हमरा नमस्कार कऽ चलि गेलाह । परमेश नीचा खसैत-खसैत एकहि छलाङ्गमे सभकेँ उपर कुदि कऽ उपर उठि गेल छल ।

बुढ़ानिलकण्ठ लग बस रुकल । प्राचीक लेल बुढ़ानिलकण्ठ नव नहि छल । हम उमेरक ओहि ढलानधरि पहुँच गेल छलहुँ जतए पहुँचलाक बाद नव चीजमे आकर्षण नहि होइत छल । कोल्ड ड्रिंक्स, खेलौनाबला, फोटो बलाकेँ पार करैत हम भीतर गेलहुँ । गाइड बसक यात्रीकेँ ठाढ़ करैत बुढ़ानिलकण्ठक विषयमे अपन वक्तव्य दऽ रहल छल ।

प्राचीकेँ नजरि ओकरा दिस नहि छल । ओ पुछए लागल, 'अंकल बुझल अछि बुढ़ानिलकण्ठ भगवानक नाक कोना कटि गेल ?'

'नहि बुझल अछि बेटी ।'

'अहाँकेँ किछु नहि बुझल अछि । कोना टीचरशिप करैत छी ? एतबो नहि बुझल अछि बुढ़ानिलकण्ठ भगवान जे किसानकेँ भेटल छल ओकरे कोदारिसँ भगवानक नाक कटि गेल ।'

हम हँसए लगलहुँ। एकटा असहाय हँस्सी। एकटा अबहेलनाक हँस्सी। प्राची काठमाण्डूमे इङ्गिलिस मिडियममे पढ़ि कऽ खूब स्मार्ट भऽ गेल अछि। गुञ्जा एतेक स्मार्ट नहि अछि गामक स्कूलमे पढ़ैत छल, नेपाली मिडियममे। आब साइकिल लऽ कऽ गामक नजदिकक स्कूलमे पढ़ए जाइत अछि। मुदा प्राचीक चेहरापर जे अभिजात्य झलकि रहल छल से गुञ्जाक चेहरा पर कहिओ नहि।

हमर विवाह बहुत सामान्य तरिकासँ भेल छल। सिद्धान्त कऽ। हमर विवाहसँ पूर्व लड़की देखल गेल छल मुदा सीधा नहि। ओ मन्दिर पर बैसल छल हमर काकी आ माँ ओहि बगल बाटे बढ़ि गेल छल, हमर विवाहक विषयमे कोनो सलाह नहि लेल गेल। विधिपूर्वक हमर विवाह भऽ गेल।

बीए करैत समय रेणु नामक लड़कीसँ हमर घनिष्ठता बढ़ल। हमसभ सँगे एकबेर सिनेमा देखए गेल छलहुँ। कहिओकाल बातचित होइत छल, मात्र इहे हमर रोमान्स छल। दुनू गोटेमेसँ किओ मुहँ खोलि कऽ बात नहि कएलहुँ। बीए पढ़लाक बाद दुनू गोटेके दोसरकेँ चिठ्ठी देबएकेँ अवसर नहि भेटल। मुदा सोहाग रातिमे कनियाँक मुहँ देखलाक बाद मोनमे एकटा अभिलासा भेल छल, रेणुक सँग हमर विवाह होइत तऽ बढ़िया होइत।

मुदा रेणुकेँ नहि प्राप्त करएके पीड़ा हम धीरे–धीरे बिसरि गेलहुँ। पहिल प्रेमकेँ मात्र रोमान्टिक उपन्यासक नायक मात्रे नहि बिसरैत अछि। हम तऽ बहुत किछु बिसरि गेलहुँ। कहिओ रेणुकेँ नहि प्राप्त करएके पीड़ा हमरा नहि तड़पौलक। जखन की परमेशक विवाह अलग ढंगसँ भेल। ओकरा अधिकृत भेलाक बाद लड़कीक बाबूसभक घर पर जमघट लागल रहैत छल। हमरा विश्वास नहि होइत छल बड़का–बड़का स्टेटसबला लोक हमरा घरक बरण्डामे जुता खोलि कऽ पयर धोति छलाह आ घरक भीतर जा चुरा दही आ अमोट खा तृप्त होबएकेँ स्वाङ्ग करैत छलथि।

बाबूजी प्रफुलित भऽ प्रत्येक प्रस्तावक बाद भेटएबला दहेजक सामानक लिष्ट बनाबए लगैत छलाह। माँ सुन्दर पढ़ल लिखल पुतहुँकेँ पायर दबाबएकेँ कल्पनामे प्रशन्न छल। हम ओहि समय ओहि कल्पनासँ उम्मिद नहि करएबला सम्झा रहल छलहुं। परमेशक प्रेमक सम्बन्धक विषयमे हमरा जानकारी छल आ जहिना हम रेणुक बात ककरो कहि नहि पेलहुँ ओहन गल्ती परमेश नहि करथि से इच्छा छल।

माँ आ बाबूजीक सभ गुणा भागकेँ झूठ सावित कऽ परमेश जिनकासँग विवाह करब ई सुनि कऽ हम आश्चर्यचकित भऽ गेलहुं। कारण ओ अपन क्याम्पसक जामानक प्रेमीकाक सँग नहि रखने छल। अपने विभागक एकटा सिनियर अफिसरक बेटीकसँग विवाह करवाक प्रस्ताब रखने छल।

ओकर निर्णयकेँ सभ स्वीकार कऽ लेलक। वीरगञ्जक सभसँ नीक होटलमे विवाह भेल। सभ व्यवस्था परमेशक ससुरे कएने रहथि। हमसभ मात्र दर्शक छलहुँ। बढ़िया कपड़ा पहिर गामसँ जा कऽ वीरगञ्जक एकटा होटलमे रुकलहुं। विवाहक दिन होटलक आगा हँसमूख बनि कऽ ठाढ़ अपरिचित अभ्यागतकेँ नमस्कार करैत–करैत हिनमान्यता साफ झलकि रहल छल। विवाहक एक दिनक बाद हमसभ गाम चलि अएलहुं। भोज खेबाक गामक लोकक आशा अधुरा रहि गेल छल। ओसभ बादमे कनफुसकी कऽ रहल छलथि से भरोषाकसँग नहि कहि सकैत छी। परमेश ओहि समय हमरा जिलाक सभसँ उज्जवल रत्नक रुपमे चिन्हल जाइत छलाह।

परमेश विवाहक बाद दू तीनबेर गाम अएलाह। पहिलबेर अपन कनियाँकसँग बादमे असगरे–असगरे।

पहिलबेर हुनकर कनियाँकेँ लऽ कऽ हमसभ चिन्तित छलहुं। पुतहुं औतीह, बढ़िया भोजन बना कऽ खुऔतीह, पायर दबौती ई सभ आशा माँ पहिनेसँ छोड़ि देने छल। नव पुतहुँकेँ कोनो तरहे दिक्कत नहि हुए

एहिकेँ लेल तैयारी होबए लागल। ई देखि कऽ हमर कनियाँ ईर्ष्यामे जड़ए लागल छलीह।

परमेश कारमे आएल। शायद एक राति गाममे रुकल फेर भोर होइते बीरगञ्ज चलि गेल। परमेशक कनियाँकेँ पोखरिदिस जाएमे असुविधा नहि हुए एहिकेँ लेल बाथरुम तैयार कएल गेल छल। बाँसक फट्टीसँ ओ बाथरुम बनाओल गेल छल। मुदा परमेशक कनियाँ ओकर उपयोग नहि कऽ सकलीह। भोरक नित्यकर्म कएने बीना चलि गेलीह।

परमेश कहने छल, 'एक दू घण्टामे जनकपुर पहुँच जाएब ओतहि होटलमे रुम बुक भेल अछि। नित्यकर्म ओतहि कऽ लेब।'

बसन्तपुर दरवार, नारायणहिटी दरवार, रत्नपार्क देखलाक बाद हमसभ बसमे बैसि रहलहुँ। बसक गाइड कहलक, 'आब काठमाण्डूक अन्य पुरातात्विक स्थलसभ पर घुमाएब।'

प्राची पुछए लागल, 'कुर्सीक लेल एक गोटे दोसरकेँ हत्या किए करैत अछि अंकल ? इतिहासक किताबमे मात्र सत्ताक लऽ कऽ संघर्ष एक गोटे दोसरकेँ मारि कऽ ओकर स्थान पर बैसैत अछि।'

'एहिद्वारे बेटी, हमरा इतिहास बढ़िया नहि लगैत अछि। मनुष्यक अवहेलना, गणितक संख्या, अंकक ईसभ चीज अपन भीतर देखलासँ लगैत अछि जे एकरो एकटा संसार अछि। मनुष्य जेकाँ ओकरो बहुत दुःख, बहुत शोक, प्राप्तीक चक्कर रहैत अछि मुदा ओकर जीवनमे एकटा नियम अछि, एकटा श्रृंखला अछि। ओ अपन स्वार्थक लेल कोनो नियम नहि तोड़ैत अछि।'

'सहीमे अंकल ? मैथेमैटिक्स एतेक इन्टरेष्टिङ्ग अछि ?'

'तो प्राइम नम्बर पढ़ैत छाएँ ? इन्टिजर ? अल्जेवरामे इन्टिजर ?'

'प्राइम नम्बर पढ़ने छी, मुदा एखनधरि अल्जेबरा नहि।'

'देखि, प्राइम नम्वर सभसँ असगरे संख्या अछि। कह एकके यदि हम भगवान वा बाबू जी कहिकऽ बजैबए तखन ओकरा छोड़िकऽ आओर

कोनो गुणाक वा फेक्टर नहि । तोँ बड़का भऽकऽ पढ़बे, इन्टिजर विषयमे । ओतह देखबे, जन्मसँ बहुतरास संख्या निस्वार्थ होइत अछि। मात्र निस्वार्थ नहि, ओकरालग यथेष्ट कोनो वजुद नहि । ई सभ सोचलाक बाद हमरा कतेक अहसाय लगैत अछि ।'

'रियली अंकल, मैथमे एतेक चार्म अछि ?'

परमेश गणितमे बढ़िया नहि छल । इतिहासमे बढ़िया नम्वर लबैत छल । कोन साल, कोन गतेकऽ ककर जन्म भेल, ककर निधन भेल, कहिआ कोन युद्ध भेल कम्प्यूटर जेँका बता दैत छल । हमरा ठीक उल्टा छल । परमेश हरेक चीजमे हमरासँ उल्टा छल । बाबूजीक निधनक बाद एकबेर गाम आएल छल असगरे, ओकर कनियाँ नहि आएल छल । श्राद्धक समय नौकेश सेहो करौने छल मुदा १३ दिनक बाद नहि रुकल । विधवा बूढ़ माँके बीना भेटने चलि गेल । मुदा हरेक महिना मायकेँ लेल पाँच सय रुपैया पठाबए नहि बिसरैत छल ।

ओहि समयमे पाँच सय रुपैया बहुत होइत छल । माँ पैसा पाबि कृत्य–कृत्य भऽ जाएत छल । जेना पुत्रक जन्म दऽ ओकर जीवन सार्थक भऽ गेल अछि ।

हरेक महिना पोष्टमैन अबैत छल । माँके अँगूठा छाप लैत छल आ पाँच सय रुपैयासँग एकटा सादा मनिआर्डर कुपन दऽकऽ चलि जाइत छल । एकदम खाली मनिआर्डर कुपन । परमेश मायके नामसँ दू लाइनक चिठ्ठी सेहो नहि लिखैत छल । मुदा माँ ओ कुपन देखिकऽ सन्तुष्ट भऽ जाइत छल, जे ओहि खाली कुपनसँ माँके परमेशक सुखदुःख पता चलैत हुए ।

हम पूरे तमसा जाइत छलहुँ । माँके अपना लग राखि ओकर पूरे खर्च, रोग, पूरे आपति अभियोग, सुखदुःख सभ हम सहन करैत छलहुँ । जखन कि परमेश नहि कोनो बोझ उठेने, माँके पाँच सय रुपैया पठा हृदयमे एकटा बढ़िया स्थान बना लेने छल । हम ओना नहि कऽ

सकलहुँ । पैसे सभ किछु होइत अछि की ? हमरा मोनमे भऽ रहल छल, हम गणितमे बढ़िया नम्वर आनि सीधा मनुष्यके गणित नहि सिखा पएलहुँ । जखन कि परमेश इतिहासमे बढ़िया नम्वर आनि मनुष्यके हिसाब किताबमे ठीक उतरैत छल ।

माँके निधनक बाद बरखी श्राद्ध करए सेहो परमेश नहि आएल । ओ नहि बरखी कएने छल आ नहि नौकेस, इहो पता नहि मात्र एकटा चिट्ठी पठौने छल माँके बरखीमे नहि आएब । विदेश जएबाक अछि । श्राद्धेके बाद पाँच सय रुपैया नहि पठौलक । पठाबहोके लेल कोन आवश्यकता छल ।

मुदा परमेश हरेक समय गामक लोकक बीच चर्चाक विषय बनल रहैत छल । पत्रिकामे बराबर ओकर नाम निकलैत रहैत छल । ओ एकटा निष्ठावान आदर्शवादी हाकिमक रुपमे अपन इमेज बना लेने छल । विभिन्न जिल्लामे अवस्थापित भेलाक समय प्राय: ओकरा छोटका नेता मन्त्रीधरिसँ झगड़ा होइत छल आ बेर–बेर ओकरा बदली होइत छल । ओ घूस नहि लैत छल । लोकक लेल ओ हरेक समय काज करैत छल आ राजनीतिक नेतासभक आगा भीरब ई बात नेपालक शिक्षित आ जागरुक नागरिक बुझैत छल ।

परमेशक ई इमेजबला बात गामक लोक सभ सेहो सुनने छल । स्कूलक शिक्षकसभ सेहो बच्चासभकेँ बढ़िया पढ़ाई कऽ बढ़िया नोकरी देबएकेँ उपदेश दैत छलथि । अन्तमे हमर गामक माइटक लेल परमेश हमर गर्वक विषय छल । एहि गर्वक कारण परमेशकेँ ओकर माँकेँ बरखी पर नहि अएलापर ककरो खराब नहि लागल छल । जेना की बात स्वभाविक छल । सभ मानि लेने छल परमेश जेहन निष्ठावान देश सेवक अफिसर की माँकेँ निधनपर आबि कऽ अपन समय बर्बाद करत ?

बस ललितपुर दिस बढ़ि रहल छल । गाइड ललितपुरक विषयमे कहए लागल । ओतए हमर सभक बस एक घण्टा रुकल । जलपान वा

किछु भोजन कएलाक बाद ओतएसँ ललितपुरक ऐतिहासिक स्थलसभ घुमलाक बाद आजुक भ्रमण समाप्त भऽ जाएत ।

एकटा मन्दिर दिस तकैत प्राची कहलक, 'एतए हम बहुत बेर आएल छी । एतए अंकल एकटा लोहाक खम्बा छैक, पीठ कऽ यदि दुनू हाथसँ ओहि खम्बाकेँ लेपटा लेनहुँ तऽ अहाँ सभसँ बेसी भाग्यमानी लोक हएब । हम आ मम्मी बहुत प्रयास कएने छलहुँ मुदा नहि कऽ सकलहुँ । डैडी मुदा कम्फर्टेबली खम्बाकेँ पीठ दिससँ पकड़ि लेलथि ।'

'तोहर डैडी भाग्यमानी छौक, तोरा नहि बुझल छौक ?'

'सभ भाग्यमानी किए नहि होइत अछि ? डैडी तऽ भगवान पर विश्वास नहि करैत छथि । मम्मीकेँ एहिद्वारे डैडीसँ कतेको बेर झगड़ो होइत अछि । डैडी कहैत छथि एहि संसारकेँ किओ नहि बनौने अछि । मनुष्यक जन्म कोना होइत अछि, मृत्यु कोना होइत अछि विज्ञान सभ बात जनैत अछि । मम्मी विश्वास नहि करैत अछि.....अंकल डैडी यदि भगवानमे विश्वास नहि करैत छथि तऽ भगवान हुनका भाग्यमानी कोना बना देलाह ?'

प्राचीकेँ ई सभ प्रश्नक उत्तर की हमरा लग छल ? परमेश पहिनेसँ प्रेक्टिकल लोक अछि हमर कनियाँ कहैत छथि परमेशक लग इमोशन, सेन्टिमेन्ट जेहन चीज नहि अछि । ओ बहुत हिसाब किताब बला लोक अछि । गणितकेँ बढ़िया जेकाँ बुझैत अछि ।

गणितक अध्यापक ! हम कोना मानि लिअ गणितमे इमोशन सेन्टिमेन्टक स्थान नहि अछि । हम तऽ खोजने छलहुँ प्राइम नम्बरक निःसंगता, खोजी कएने छलहुँ नेगेटिभ नम्बरक शुन्यता । देखने छलहुँ शुन्यताक सेहो गणितमे स्थान अछि । शुन्यसँ सेहो बेसी आ चीज अछि गणितक लग । ऋणात्मक संख्यासँ सेहो बहुत किछु प्राप्ती होइत अछि गणितमे ।

ओहि दिन परमेशक चिठ्ठी आएल जे माय बापकेँ मरलाक बाद ओ गाम नहि आओत । एहिद्वारे ओकर हिस्सा, ओकर भागक जमीन कहुँना

कऽ गामक धनीक सुटाई साहसँ बेचि देब। सुटाई साह लगसँ पैसा लाबएकेँ व्यवस्था ओ स्वयं कऽ लेत। गामक जमीनमे परमेश एकदिन हिस्सा माँगत हमर कल्पनासँ बाहर छल। परमेश लग तऽ सभ किछु अछि। बड़का नोकरी, रुपैया, घर, कार। एहि सभक अतिरिक्त ओ जमीन आ बाड़ीमे हिस्सा लेत।

हमर कनियाँ पत्र पढ़ि कऽ तमसा गेल छलीह। हमरा खौंझबैत कहए लगलीह, 'जीवनक गणित करैत–करैत बीता देलहुँ। परमेश मात्र एक्केटा गणित सिखलन्हि लाभ हानीक ! मात्र।'

'हँ, मानैत छी परमेश बहुत प्रेक्टिकल अछि मुदा हमर कनियाँक बात सेहो अतिशयोक्ति नहि छल ? मानैत छी परमेशसँ हम ईर्ष्या करैत छी, परमेश हमरा लेल कोनो काजक नहि अछि, तैयो ओ हमर भाई अछि। हम एकटा बरेरीक नीचा खेल कऽ बड़का भेल छी। बच्चामे एकसँग खेलने छी। एक साथ लड़ने छी। जखन एक गोटे माड़ि खाति छलहुँ तऽ दोसर ओकरा प्रति सहानुभूति जनबैत छलहुँ। आइ बड़का भऽ गेल छी तऽ एक गोटे दोसरकेँ चिन्ता नहि करी ? एतेक दूर रहलाक बादो सेहो ओ ई बुझि नहि पाएल जे गामक ई जमीन हमर संसार चलाबए लेल कतेक आवश्यक अछि ?

ओ अवश्य राजी भऽ जाएत, अपन भाग छोड़ए लेल।

हमरा काठमाण्डू आबएकेँ उद्देश्य सेहो इएह छल। बहुत दिनक बाद एहि उमेरमे काठमाण्डू अएलहुँ, परमेशसँ कहब, जमीनकेँ एहि तरहे हिस्सा नहि कर। ओकरा बुझाएब हम सरकारी स्कूलमे भलेहि काज करैत छी मुदा एखन धरि अस्थायी छी। गुन्जाकेँ विवाहक बात सेहो अछि।

परमेश हमरा देखि कऽ नहि प्रशन्न भेल आ नहि दुःखी। बल्की हम कतेक दिन रहब कोन-कोन स्थान घुमए जाएब कतएसँ की किनब कोन बससँ फिर्ता जाएब, ई बातसभ पुछए लागल। काठमाण्डूमे परमेशकेँ

अफिस गाड़ी नहि देने छल । अफिसकेँ समयमे गाड़ी लेबए अबैत छल ओ जाए कालमे छोड़ि दैत छल । परमेशकेँ अपन एकटा कार छल मुदा बहुत सजा कऽ रखैत छल ।

परमेश पूरे व्यवस्था कऽ लेने छल । भक्तपुर हम आ प्राची जाएब ।

आइ काठमाण्डू आ ललितपुर । पर्यटक बसक लेल स्वयं ट्राभल्स एजेन्टक लग जा टिकट कटा देने छल ।

प्राची प्रश्न कएलक, 'मनुष्यकेँ इतिहास आ गणितक इतिहासमे किछु अन्तर भेटैत अछि अंकल ?'

'ओह ! फेरसँ इतिहास । प्राची, हमर बेटी । हम गणितक शिक्षक छी, इतिहासक नहि, हमर विश्वविद्यालयमे गणित आ इतिहास दुनू कम्बिनेशन लेब स्वीकार नहि छल । केँ एहन नियम बनौलक, की पत्ता । ओ वास्तवमे बहुत बड़का दुरदर्शी रहल हेता ।'

आइ गाम जाएकेँ दिन । परमेशक कनियाँ हमरा लेल पूरी आ तरकारी बनौलीह । सँगमे पानिक बोतल आ टिफिन वक्स लेने नहि छलहुँ । ओ दुनू दोकानसँ किन अनलीह । बालाजुमे टिकट नहि भेटल । गौशालामे ककरो पठा परमेश टिकट अनलक ।

परमेश कहए लागल, 'गौशालासँ बस रिंग रोड मार्फत घुमा कऽ लऽ जाइत अछि समय बेसी लागत हम अपन कारसँ सीधे कलंकी छोड़ि आएब ।'

प्राची ई दू दिनमे नजदिक भऽ गेल छल । घर जाएकाल बहुत जिद्द करए लागल, ओहो गाम जाएत ? गाम ? कोन गाम ? ओ गाम जतए तोहर माय एक बेर गेल छलहुँ ? ओ गाम जकर जमीन तोहर डैडी बेचए चाहैत छौक ? मुदा हम किछु नहि कहि पेलहुँ ।

अएला दू तीन दिन भीतर हम अपना आबएकेँ उदेश्य परमेशकेँ नहि कहि पेलहुँ । एकबेर सेहो ओ नहि पुछलक, हम किए आएल छी । सोचि रहल छलहुँ, ओ अपन चिठ्ठीक विषयमे पुछत । जमीनक हिस्सा करएबला

बात। ओहि समय हम अपन बात राखब। मुदा ई बात सेहो परमेश नहि उठौलक हमरा कहब आवश्यक छल यदि एखनो ई बात नहि कहि पेलहुँ तऽ एतेक पैसा खर्च कऽ एतेकदूरी तय कऽ कऽ आएल छी, सभ व्यर्थ भऽ जाएत। गामक जमीनकेँ हमरा बहुत आवश्यकता अछि। गुञ्जाकेँ विवाह नहि भेल अछि। स्थायी नहि भेलाक कारण सेवा निवृतिकेँ पैसा नहि भेटत हमर, सभ हिसाब किताब फेल भऽ गेल अछि। आखिर एहिसमय हमरा लगसँ जमीन परमेश नहि लेत। ओकरा लग कोन चीजक कमी अछि आ बहुत जमीन किनिओ लेने अछि।

गाड़ी चलबैत–चलबैत परमेश कहए लागल, 'हम एकटा चिठ्ठी पठौने छलहुँ भेटल ?'

आब कहब उचित हएत। एहिबेर बीना लाज कएने अभाव आ समस्याकेँ आगा रखैत कहब आवश्यक अछि, एहिबेर नहि कहलासँ बहुत किछु हमर समाप्त भऽ जाएत। हमर सुरक्षा, गुञ्जाक विवाह आ हमर आर्थिक अवस्था।

परमेश कहए लागल, 'हमरा पैसाकेँ बहुत आवश्यकता अछि। सोचि रहल छी जनकपुरमे एकटा घर किनी। इम्हर–उम्हर जोगाड़ कऽ रहल छी नहि भऽ पावि रहल अछि। यदि गामक हमर भागक जमीन ....।'

हमर आगा अस्पष्ट धुनि देखाई देबए लागल, ओ धुनिक भीतर परमेश कतहुँ हरा गेल छल। अन्हार आ प्रकाशक छाँया बीच पर्दा पर देखाई देबए लागल हमर अतितक कैनवास। हमरा आगा १५ बर्षक परमेश ठाढ़ अछि। संकोच, सभ्रम, भय आ आशंकासँ भड़ल। कहि रहल अछि कलेजक सभ लड़का मनकामना जाइत अछि, हमरा लग पैसा नहि अछि। यदि पाँच सय रुपैया दैतहुँ ....।

स्कूलमे तलब नहि भेटि रहल छल। गुञ्जाकेँ टाइफाइड दबाइक दोकान पर उधारी छल। दू बर्ष भऽ गेल छल घर पर खपड़ा बदलला। छतमे सूर्य चन्द्रमा देखाए लागल छल। हमर पायरक चप्पल टुटि गेल

छल। स्कूल जाएमे लाज लागि रहल छल। तैयो परमेशकेँ देखि कऽ मोनमे प्रेम जागल। बेचारा जाए चाहैत अछि तऽ घूमि आबौक।

परमेश गाड़ी रोकलक। कलंकी आबि गेल छल। कहए लागल, 'भैया, उत्तर नहि देलहुँ ?'

हम स्वीकारोक्तिमे मुहँ हिलबैत बस दिस बढ़ि गेलहुँ।



छोटसन बात

बाहर एखनो प्रकाश अछि। हल्का-फुल्का इजोत जे एखन किछुए देरमे अन्हारमे परिवर्तित भऽ जाएत। माँ भानस घरमे एखनो किछु खटपट कऽ रहल अछि। जखन की ओकरा बढ़िया जेकाँ बुझल छैक जे दुनू सुटकेश आ ब्याग प्याक भऽ गेल अछि आ कोनो दोसर चीज राखएकेँ स्थान नहि अछि।

ओ कुर्सी पर आरामक मुद्रामे बैसल अछि। आगामे अमितेश पलङ्ग पर बैसल अछि। बाबूजी दलानपर टहलि रहल छथि। आ पता नहि कोन चीजक प्रतीक्षा कऽ रहल छथि। ओ कखनो बाहर दिस देखैत छथि, कखनो अमितेश दिस आ कखनो भानस घर दिस। सभ मानू कोनो चीजक प्रतीक्षा कऽ रहल होइथ।

घड़ीक सुई एक स्थानसँ दोसर स्थान जा कऽ एकटा निश्चित स्थान पहुँच जाएब कतेक उदास घटना अछि आ कतेक थका देबएबला प्रतीक्षा। बाबूजी बाहर टहलैत -टहलैत ओकरा बीच-बीचमे देखि रहल छथि। जेना हुनका विश्वासे नहि भऽ रहल हुए, ओ ओहि घरक टुटल कुर्सी पर बैसल छथि। किछु-किछु कालपर भीतर आबि रहल छथि।

'सरेशक पता आ फोन नम्बर कतए रखने छएँ ?'

'डायरीमे,' ओ ज्याकेटक जेबीकेँ हाथसँ छुबैत अछि।

'कतहुँ दोसर स्थानपर लिखि ले,यदि ई डायरी हेरा गेलहुँ तऽ.....?'

किछु देर ठाढ़ रहैत छथि फेर बाहर जा कऽ टहलए लगैत छथि। माँ एकटा डिब्बामे किछु लऽ कऽ बाहर अबैत अछि, 'एकरा ब्यागक साइडबला प्याकेटमे स्थान बना कऽ राखि ले।'

'की छैक ई ....?' ओ डिब्बाकेँ बिना छुने पुछैत अछि।

'बाटमे खाए लेल बगिया ....।'

'माँ हम कहलीऔ ने प्लेनमे भोजन भेटैत अछि,' ओ कनी तमसा कऽ बजैत अछि।

'.....मुदा ई कनीके तऽ छौक, किछु-किछु कालपर निकालि कऽ खाति रहिहएँ,' माँ कनीक डेरा जाइत अछि।

'माँ तहुँ ने ....।'

अमितेश उठिकऽ माँकेँ हाथसँ डिब्बा लऽ लैत अछि, 'लाउ आन्टी, हम राखि दैत छियैक। दू चारिटा अपना जेबमे आ बाँकी ब्यागमे।'

'हँ बेटा, लिअ राखि दिऔ।'

बाबूजी फेर भीतर अबैत छथि, 'बेटा, ओतए जा कऽ अपन हिसाब किताब देखि कऽ हमरा फोन करिहे। आओर पैसाक आवश्यकता होउक तऽ बतबिहे। पढ़ाईमे ध्यान लगबिहे, पैसाक कोनो टेन्सन नहि करिहए....।'

ओकरा बुझल अछि बाबूजीक आदत छन्हि, जाहि चीजकेँ सभसँ बेसी आवश्यकता होइत अछि ओकरे सभसँ बेसी उपलब्ध देखाबएकेँ प्रयास करैत छथि।

अमितेश चुपचाप बैसि बगिया खा रहल अछि। बीच-बीचमे ओकरा देखि रहल अछि आ बिहुँसि रहल सेहो। ई एतेक चुप्प तऽ कहिओ नहि रहैत अछि। बगिया खाएमे एना कऽ जुटल अछि जेना बगिया खाएब संसारक आवश्यक काज अछि आ ओकरा पढ़ाई करए बेलायत जाएब एकटा छोटछिन बात।

एखनसँ तीन घण्टाक बाद ओ फ्लाइटमे हएत। सभसँ दूर .....माँ बाबूजीसँ, एहि टोलसँ, एहि शहरसँ, एहि देशसँ ....।

किछुए देरमे रेवती सेहो आबि जाइत अछि।

'सभ किछु तैयार अछि ने ?' ओ अमितेशसँ पुछैत अछि।

'हँ...हँ सभ तैयार अछि। मात्र ....निकलैत छी, 'अमितेश स्थिरेसँ एकटा बगिया निकालि कऽ रेवती दिस बढ़ा दैत अछि।

अन्य दिन होइत तऽ रेवती एतेक शान्तिसँ बगिया लऽ कऽ खा सकैत ? अमितेशक हाथसँ दोसरो छिनने बीना नहि छोड़ैत आ अमितेश ओकरा छिनएकेँ लेल पटकि देने रहति। माँ हरेक दिन जेकाँ दुनू दिस देखि कऽ कहए लगैत, 'झगड़ा नहि करु बेटा। पुसमे बगियाकेँ अभाव थोरहे होइत अछि।'

मुदा रेवती एकटा बगिया लऽ आरामसँ खाए लगल। माँ शोफा पर बैसिकऽ एकटक ओकरा देखि रहल छल। ओ बिहुँसि दैत अछि।

'की छैक माँ ? एना किए देखि रहल छएँ ?'

'अ..ह, अपना खाए पिअब पर ध्यान रखिहे। राति कऽ दुध अवश्य पिबिहएँ आ ....फोन करैत रहिहएँ। पढ़ाई पर ध्यान दिहएँ आ चिठ्ठी बराबर लिखैत रहिहएँ।'

'आन्टी, आबके चिठ्ठी-तिठ्ठी लिखैत अछि, ई हरेक दू-तीन दिनपर इमेल करैत रहत। हम आएब तऽ एकर हालचाल बतबैत रहब,' रेवती बाजल।

'ठीक छैक बौआ ध्रुव गेलाक बाद तऽ अहीँसभ पर आस अछि।'

ओ रेवती दिस प्रश्नवाचक आँखिसँ देखैत अछि। रेवती सेहो किछु बताबए लेल ओकरा दिस ताकि रहल अछि मुदा माँकेँ उपस्थितिसँ दुनू चुप्प अछि। ओ अमितेश दिस देखैत अछि। अमितेश ओकर आँखिक इशारा बुझि जाइत अछि। ओ उठि कऽ माँ लग चलि जाइत अछि।

'आन्टी अहाँ हाथक टमाटर आ लहसुनक चटनी बहुत नीक होइत अछि, कनी खाएकेँ मोन करैया।'

‘जाउ ने बेटा भानस घरमे प्लेटमे राखल छैक। बाटी आ चम्मच ओहि ठाम अछि निकालि लेब,’ माँ ओतएसँ कनिको नहि उठए चाहैत अछि।

‘नहि आन्टी प्लीज अहीँ दिअ ने।’

‘अच्छा रुकू लबैत छी,’ माँ धीरेसँ उठि कऽ भानस घर दिस चलि जाइत अछि ।

‘की भेलहुँ ?’ ओ बेचेयन अछि।

‘ओ सीधा एयरपोर्ट अएती,’ रेवती कहैत अछि।

‘एतए आबि जैतैथि तऽ नीचा उतरि कऽ भेटि सकैत छलहुँ। एयरपोर्टपर तऽ बाबूजी सेहो हएता। की कहि कऽ परिचय कराएब हुनकर....?’

‘कहि देबैक क्याम्पसक साथी छथि,’ रेवती सलाह दैत अछि।

‘हँ मुदा ....गला नहि मिल पाएब बाबूजीक आगा,’ अमितेश बिहुँसति बजैत अछि।

‘नहि भगवान से बात नहि .....एखनधरि माँ बाबूजीकेँ किछु नहि कहने छी आब जाइत समय ....बादमे बताएब, सीधे फाइनल डिसिजनक समय....,’ ओ किछु सोचमे पड़ि जाइत अछि।

‘बाबूजीकेँ एयरपोर्ट चलएकेँ लेल मना कऽ दिअ। किछु कहि कऽ बुझा दिऔन। कहि दिऔन दू गोटे तऽ जाइए रहल छथि,’ अमितेश आइडिया दैत अछि।

‘हँ शायद इहे ठीक रहत,’ ओ सोचैत बड़बड़ाइत अछि।

माँ चटनी राखि कऽ बाबूजी लग चलि गेल छल। दुनू अपनामे बात कऽ रहल अछि। आब असगरे मात्र एक दोसरकेँ सँग रहएकेँ अभ्यास...?

बाबूजी फेर भीतर अबैत छथि, ‘ठण्ढासँ बचि कऽ रहिहएँ। ओतए ठण्ढ बहुत पड़ैत छैक। हरेक समय मफलर लगेने रहिहएँ ठण्ढ कानमे सभसँ पहिने आक्रमण करैत अछि। कान हरेक समय बान्हल रहबाक चाही। ई नहि जे फेशनमे केश नहि बिगरए एहिद्वारे मफलरे नहि लगाबी। स्वविवेकसँ काज लिहे। ओतए किओ देखए नहि एतहुँ। ओ तोहर घर नहि, बेलायत छैक।’

बाबूजी बीतल किछु दिनसँ हरेक बातमे घुमा फिरा कऽ बेलायतक चर्चा अबश्य करैत छथि जेना पूरे तरहसँ ई कहए चाहैत छथि, तो बहुत दूर जा रहल छएँ ।

बाबूजी फेर टहलए लगैत छथि । माँ बाहर कुर्सी पर बैसल अछि ।

'जी ...,' एतेक बातक जवावमे मात्र ओ एक शब्द कहैत अछि जे बाहर पसरि रहल अन्हारमे गुम भऽ जाइत अछि ।

'आइ एतेक ठण्ढा नहि अछि,' रेवती कहैत अछि ।

'हँ हमरा तऽ गर्मीए लागि रहल अछि,' ओ कहैत अछि ।

'ओ तऽ लगबे करत, अहाँ स्वीटर आ ज्याकेट दुनू पहिरने छी । हमरा देखू....,' अमितेश अपन हाफ स्वीटर देखबैत अछि ।

'हँ मित्र, बाबूजी बलजवरदस्ती.....।'

'बाबूजीक प्रिय सपूत, आबतऽ उतारि दिअ । बाबूजी बाहर छथि । उतारि कऽ ज्याकेटक चेन बन्द कऽ लिअ । हुनका की पत्ता चलत,' अमितेश सलाह दैत अछि ।

ओ ज्याकेट उतारि कऽ स्वीटर उतारि लैत अछि, फेर ज्याकेट पहिर कऽ ओकर चैन बन्द कऽ लैत अछि ।

'हम सोचि रहल छी, जे स्वीटर नहि लऽ जाइ,' ओ स्वीटरकेँ मोड़ैत कहैत अछि ।

'सही सोचि रहल छी । ई पुरान स्वीटरकेँ लऽ जा कऽ की करब ? तीन-तीनटा बढ़िया स्वीटर तऽ अछिए अहाँक सँग.....,' रेवती बुझबैत अछि ।

मुदा बाबूजी देखि लेता तऽ हुनका दुःख लगतन्हि । ओ स्वयं ओ स्वीटर हमरा लेल खासासँ अनने छथि,' ओ हिचकिचाइत अछि ।

'एखन नहि ने देखता । बादमे देखता तऽ सोचता धोखामे छुटि गेल अछि,' रेवती स्वीटरकेँ मोड़ि कऽ तकियाकेँ नीचा राखि दैत अछि । फेर तीनू गोटे अचानक चुप्प भऽ जाइत अछि । रेवती आ अमितेश दुनू ओकरा दिस देखि कऽ बिहुँसैथि अछि ।

'किछु कहि रहल छलीह की ?' ओहो बिहुँसैथि अछि।

'नहि किछु खास नहि। मात्र इहे जे पहुँचते अपन पोस्टल एड्रेस हुनका मेल कऽ देब। जे स्वीटर अहाँकेँ लेल बुनि रहल छथि, किछुए दिनमे तैयार भऽ जाएत ओकरा कुरियर करतीह। कहि रहल छलीह बहुत बात करबाक अछि जे अहाँसँ एयरपोर्टपर करतीह हम कहलहुँ हमरा कहि दिअ हम ओकरा कहि देबैक तऽ तमसाए लागल छलीह....,' रेवती बिहुँसति बाजल ।

'अहाँसँ किए बतौतीह ? ओ बात अहाँ निनासँ किए नहि करैत छी ?' ओहो बिहुँसति अछि।

'मित्र ओ नहि हमरा घास डालैत छथि आ नहि हमर डालल घास खाति छथि। हुनकासँ की बात करु, हमरा तऽ अहाँक रेखे पसिन अछि,' रेवती मजाक करैत बाजल।

ओ फेर बिहुँसैत अछि। ओ बुझैत अछि आओर कोनो दिन रहैत तऽ निनाकेँ नाम सुनिते रेवती हृदयपर हाथ राखि कऽ सभ बात धीरे-धीरे नाटकीय मुद्रामे कहैत। ओहो हुनकर मुहँ पर रेखाक नाम सुनिते एक दू मुक्का अवश्य लगा दैत मुदा आइ बात दोसर अछि। आइ हुनका लग समय नहि अछि। आधा घण्टा भीतर एयरपोर्टक लेल निकलत। ओहिसँ पहिने मित्रक बीच होबएबला बेबकुफीक रिवाइण्ड करब नीक लागि रहल छल।

बाबूजी माँकेँ सँग फेर भीतर अबैत छथि, 'आब चलए पड़त बेटा, कतहुँ पहुँचएमे अबेर नहि भऽ जाए।'

'जी अंकल, एखन तऽ टाइम अछि,' रेवती कहैत अछि।

'अरे भाइ ट्राफिक जामक कोनो भरोषा अछि, कखनो अबेर कऽ सकैत अछि।'

माँ नोराएल आँखिसँ देखैत अछि, 'तोरा गेलाक बाद घर एकदम खाली भऽ जाएत।' लगैत अछि माँ आब कानि देत।

'कमअन आन्टी, हमसभ खाली होबए देब तब ने ....,' अमितेश माँकेँ कनहा पर हाथ रखैत अछि। माँ ओकर बाँहि थपथपा दैत अछि।

'चल बेटा चल, आब चलए पड़तहुँ ....कतहुँ अबेर नहि भऽ जाए,' बाबूजी लग आबि कऽ ठाढ़ भऽ जाइत अछि। ओकरा बाबूजीक एहि बातसँ तामस भऽ जाइत अछि। जाहि बातकेँ एकबेर मुहँसँ निकालि दैत छथि ओकरे पाछु पड़ि जाइत छथि।

'चल बेटा, आउ रेवती....,' हुनका सोचलाक किछुए देरमे बाबूजी आओर एकबेर अपन बात दोहरबैत छथि आ एकटा ब्याग उठाबएकेँ उपक्रम करैत छथि।

'अंकलजी अपने किए परेशान हएब ? हम सभ छी ने ....। अपने आराम कएल जाओ,' रेवती ई कहैत ब्याग उठा लैत अछि आ अमितेश दुनू सुटकेश।

'नहि बेटा, हमहुँ चलैत छी,' बाबूजी कनीक परेशान जेकाँ बुझाइत छथि।

'छोड़ू अंकल, डाक्टर ओहिना अपनेकेँ बेसी चलए फिरएसँ मना कएने अछि। अपने एतहि रहल जाओ। हमसभ छी ने....,' कहैत अमितेशे बाहर निकलि जाइत अछि आ पाछु-पाछु रेवती सेहो।

'डाक्टर दौड़एकेँ लेल मना कएने छथि। हमरा दौड़ कऽ थोरहे जेबाक अछि।......चलैत छी हमहुँ......,' बाबूजी हुनकर कनहापर हाथ रखैत उदास रुपमे हँसैत छथि जे ओ उदास साँझकेँ आओर उदास कऽ दैत छथि।

'रहए दिऔक बाबूजी, अहाँ बेकारमे परेशान हएब,' ओ बाबूजीक पयर छुबैत अछि आ फेर माँकेँ।

'बेटा जानकी जीकेँ पयर छु ले,' जानकीजीक सीसामे राखल मूर्ति दिस इशारा करैत अछि।

ओ आगा बढ़ि कऽ जानकीजीकेँ प्रणाम करैत अछि, जकर सीसामे बाबूजीक उदास चेहरा दोखाई दऽ रहल छल।

ओ बाहर आबि जाइत अछि बाबूजी आस भड़ल आँखिसँ ओकरा देखैत रहैत छथि। माँ ओकरा दही खुअबैत अछि। ओ जल्दिसँ दही खा कऽ निकलि जाइत अछि।

तीनू घरसँ निकलि कऽ सड़क पर आबि जाइत अछि। ओ स्वयंकेँ एहन स्थितिमे पबैत अछि जतए प्रशन्नताक अनुभव एहिद्वारा नहि भऽ रहल अछि किछु छुटि जाएबाक पीड़ा ओकरापर हाबी भऽ जाइत अछि। अपन मित्र, अपन स्थान, अपन माहौल.....। एकटा नव संसारमे जएबाक प्रशन्नता पता नहि कतए हेराएल जेकाँ बुझाति अछि। करीब सय मिटर चललाक बाद रेवती सिगरेट जरा कऽ एक-एक टा थम्हा दैत अछि। तीनू गोटे सिगरेट फुकैत ट्याक्सी दिस बढ़ए लगैत अछि।

'आइ भोरमे कृष्णेकेँ घर पर पुलिसक छापा पड़ल अछि,' रेवती सिगरेटक धुवाँ छोड़ैत कहैत अछि।

'हँ हुनकर पापा विजनेसक नाम पर किछु गलत धन्धा करैत छथि,' अमितेश बजैत अछि।

ओकर मोन भोरेसँ भाड़ी भऽ रहल अछि। ओ अपन बीतल जीवन आ आबएबला जीवनक विषयमे सोचए लगैत अछि। ओ दुनू गोटेक बात सुनि कऽ ओकर मोन डुबैत जेकाँ लागि रहल अछि। ओहो सभ तऽ ओकरा बीना असगरे भऽ जएत। ओ कतेक मिस करत ओकरासभके .....।

'मित्र सुनू, ओतएकेँ लड़की बहुत फ्रेन्क होइत अछि। दू चारिटा पटि जाएत तऽ बताएब। हमहूँ ट्राइ करब। की अमितेश ?' रेवती जोड़सँ हँसए लगैत अछि।

ओहो बिहुँसैत अछि। अमितेश ओकरा दिस देखैत अछि। ओ कतेक सफाईसँ हृदय दुखाबएबला बात नहि करए चाहैत अछि।

'हम ओतए तोरा सभके बहुत मिस करब....,' ओ भाड़ी आवाजमे कहैत अछि। अमितेश ओकर हाथ अपना हाथमे पकड़ि कऽ दबा दैत अछि।

'कहिओ-कहिओ हुनको मिसकलीअ जे अपन प्रेम स्वीटरक रुपमे पठाबएबाली छथि .....,' रेवती अपन आदतक अनुसार भावुक भेलाक बादो बातकेँ हँस्सीमे उड़ा दैत अछि।

'अंकल आबि रहल छथि। पाछु पल्टएसँ पहिने सिगरेट फेक दिअ,' अमितेशे धीरेसँ बजैत अछि।

ओ सिगरेट फेकि कऽ पाछू घुमैत अछि। बाबूजी करीब दौड़ैत आबि रहल छलाह। ओ आगा बढ़ि कऽ सड़क पार करैत अछि आ हुनका लग पहुँच जाइत अछि, 'की बात अछि बाबूजी ? अहाँक लेल दौड़ब नोक्सानदेह अछि, अहाँ बुझैत छी फेर .....?' ओ कनीक तमसाइत अछि। पहिल बेर स्मरण अबैत अछि ओकरा गेलाक बाद बाबूजीकेँ नियन्त्रित करएबला किओ नहि रहत। ओ अपन शरीरकेँ ध्यान नहि करता।

'तो ओ स्वीटर बिसरि आएल छलएँ तकियाक नीचा .....। तोहर माँ कहलकहुँ तोरा दऽ आबए लेल ....एहिद्वारे कनीक दौड़ए पड़ल ....ले ब्यागमे राखि ले ....,' बाबूजी तेज गतिमे बजैत रहला आ ओकरा देखैत रहला।

ओकरा अचानक बाबूजी पर दया आबए लागल, फेर अपना उपर। फेर बाबूजीकेँ उपर सिनेह भऽ गेल आ अपना उपर तामस। स्थिर गम्भीर आँखि आ नम्हर श्वासक बीच बाबूजी कतेक चिन्ता नुका कए रखने छथि। ओकर मोन करैत अछि अपना हृदयमे बाबूजीक लेल नुकाएल पूरा प्रेम सार्वजनिक कऽ दी। की पता फेर बाबूजी ओकरा जाइत समय पयर छुबएकेँ बदला गला लगालथि। ओ डुबैत आँखि आ काँपैत हाथसँ स्वीटर हाथमे लऽ किछु देर ठाढ़ रहल आ बाबूजीकेँ देखैत रहल।

'पूरे आवश्यक चीज राखि लेलएँ अछि ने ? ई याद रखिहए, मेहनत पर विश्वास रखिहए। सही बात कठीन होइक आ नम्हर, हरेक समय ओकरे चुनिहएँ। शरीर आ पढ़ाई दुनू पर ध्यान दिहएँ। पैसाक चिन्ता नहि करिहएँ। चलू आब जाउ, देखि रेवती ट्याक्सी लऽ अएलहुँ।....बजा रहल छौक तोरा,' बाबूजी सामान्य देखबाक पूरा प्रयास करैत छथि।

'जी ....,' ओ नोराएल आँखिसँ पाछु घुमैत अछि। दू तीन डेग चलला पर बाबूजीक आवाज सुनाइ दैत अछि।

‘कह तऽ हमहुँ चलबे करु...., ओहिना घरमे तऽ बैसले रहब....,’बाबूजीक स्थिरे आवाज कहू वा नहि कहूकेँ संशयकेँ बीचसँ निकलि रहल छल। जमानाक पीड़ा आ निवेदन समेटल अपन आवाजकेँ ओ एहि तरहे प्रस्तुत करए चाहला जेना ओ बहुत सामान्य आ छोटसन बात कहलन्हि अछि आ एकरा नहि मानला पर सेहो कोनो फरक नहि पड़एबला अछि।

ओ बाबूजीकेँ हाथ पकड़ि कऽ ट्याक्सी दिस बढ़ि गेल। ओकरा पीड़ा कम भेल जेकाँ बुझा रहल छल।



रेखाक पार

दूरधरि अजगर जेकाँ पसरल सड़क पर पूरे दिन बस, कार, साइकिल, मोटरसाइकिल आ टायर गाड़ीक रेला बहिते रहैत अछि। ई बहाबकेँ देखि कऽ लगैत अछि, भागैत शहर आ औंघाइत गामक बीच एकटा सीमा रेखा खिचल होइक। एकहिटा देश, भीतर-भीतर दूटा भागमे बटल हुए। एकटा ओ भाग जकर विषयमे कंगना कनिक-मनिक जनैत अछि आ दोसर जकरा ओ कहिओ देखबे नहि कएने अछि।

जनकपुरक जाहि ईलाकामे कंगनाक दाई रहैत अछि। ओहे सड़कसँ दोसर आ कोशो पसरल खेत आ गाम कंगनाकेँ बराबर बजबैत रहैत अछि, मुदा कंगना कहिओ सड़क पार कऽ ओहि दिस नहि गेल।

व्यस्त शहरक क्षीतिज चुमैत शान्त हरियर कचोड़सँ अलग करैत एकटा कारी रेखा हरेक समय ओकरा रोकि दैत छल। ओहुँना कंगना शहरी जीवनक आदी अछि।

काठमाण्डू हुए, ललितपुर वा भक्तपुर। बर्षाक समयमे कतेको विषयमे ई अलग अछि जेना एतएकेँ माटि, एतएकेँ सुगन्ध, तैयो बहुत किछु एहन अछि जे ओतएसँ जोड़ल जा सकैत अछि।

दौड़ैत लोक, हाथसँ पिछड़ैत पैसा आदी-आदी ।

कंगना इहे देखने अछि आ इहे बुझैत अछि । ओकर परिवार त्रिपुरेश्वरमे रहैत अछि ।

ओतए ओकर पापा एकटा बहुत बड़का चिकित्सक छथि ओ काठमाण्डूक नाम चलल रातो बंगला स्कूलमे पढ़ैत अछि, एखन गर्मीक छुट्टीमे कंगना अपन दाई लग समय बिताबए आएल अछि ।

दाईकेँ घर जनकपुरमे अछि । जतए दाईक अतिरिक्त काम करएबाली नोकर आ एक गोटे रखबार रहैत अछि ।

कंगना सोचैत अछि दाईकेँ शान्त जीवनमे किछुए समयक लेल सही आवाजक बाट खोलि देल जाए, कारण स्मरणमे नव बातसभ जुड़ि सकए मुदा कहिआ धरि ? ओकरालग समय बहुत कम अछि मात्र गर्मीक छुट्टी । ओहुना जनकपुरक गर्मी अर्थात खाली आकाश आ जड़ैत सूर्यसँग युद्धमे पघलैत धर्ती......आगिक इनारमे बर्बाद होइत समय कंगनाकेँ स्मरण दिअबैत रहैत अछि । काठमाण्डू जाएसँ पहिने एकबेर सड़ककेँ ओहिपार, ओहि खेतमे जएबाक अछि । जेकरा छतपर चढ़ि कऽ नहि जानि कतेकोबेर अपन आँखिसँ छुने अछि । आइकाल्हि करैत-करैत आब मात्र दू दिन बाँचल अछि । दू दिनक बाद फ्लाइटसँ ओकरा काठमाण्डू जएबाक अछि, मुदा ओकर सपना ......?

मोने मोन निर्णय कऽ कंगना बेरियाक प्रतीक्षा करए लागल । बेरियामे जखन दाई आराम कऽ रहल छल । कंगना पाछुक गेटसँ निकलल आ दौड़ गेल ।

सड़क पर जम्मा बाउल ओकर ठोकरसँ, अबैत जाइत गाड़ीसँ टकराति आबारा जेकाँ एतए ओतए उड़ि रहल छल । गरदाक फुकनामे डुबल कंगना सड़कक कातमे रहल गाछक छाहसँ खेलैत कुदैत खेतक नजदिक पहुँचल ।

अचानक लागल जेना संसार बहुत बदलि गेल अछि, अबुझ बीना सुल्झल रहस्यसँ भड़ल नरम गरम रंगीन । कनिक डर, कनिक रोमाञ्च लैत कंगना आश्चर्यसँ देखए लागल ।

खेतमे बाली आकाशक निलिमाकेँ मथैत समुन्द्र जेकाँ कुदि रहल छल। नीम, आम आ बरक गाछक सहारासँ बनल छोट-छोट झोपड़ीक नम्हर लाइन छल। लगेमे आगि उगलैत बड़का चिमनी, टुटल-फुटल ईटक लाल चुरा पाकएकेँ प्रतीक्षा कऽ रहल। ईटा आ आगामे किछुए दूर पर इनार आ ओहि इनारक लगमे बान्हल गाय महिस।

कंगना दू कदम बढ़ल। दाई शहरमे असगरे निकलएसँ मना कएने छल। मुदा ई शहर नहि छल। आ ओकरा बुझल रहैक गाय महिस ओकरा आक्रमण नहि कऽ सकैत छल। निश्चिन्तसँ कंगना चलैत रहल आ जखन ओ गाय महिस लग पहुँचल ओकरा आश्चर्य लागल ओ गाय महिस लग किओ नहि अछि। कंगना आँखि चौड़ा कऽ गाय महिसकेँ देखए लागल।

मुदा कंगनाकेँ ओतए भेलासँ गाय महिसकेँ कोनो फरक नहि पड़ि रहल छल। ओ पहिनहे जेकाँ पुआर खा रहल छल।

'एतए ककरो होएबाक चाही,' आम सभसँ लदल गाछ दिस बढ़ि रहल कंगना सोचि रहल छल आ सहीमे गाछक नीचा किओ सुतल छल।

'किओ' अर्थात एकटा लड़का। गन्दा उज्जर सर्ट, रौदमे जड़ल कारी देह। औठिआएल केश। माटि लागल पयर आ हाथमे एकटा बासुरी।

ई लम्बा टाङ्गबला दुबर पातरसन लड़का छल। मुदा कंगनाकेँ लागल जे अवश्य ई बहुत मजबुत हएत, कारण ओकरा शरीर कठोर भैयो कऽ नरम छल।

कंगना एहिसँ पहिने कहिओ कोनो देहातीकेँ एतेक नजदिकसँ नहि देखने छल। अन्जानेमे ओकरा लग चलि गेल। एतेक नजदिक की ओकर छाह लड़काक मुहँ पर पड़ैत रौदकेँ छेकि लेलक।

लड़का जागि गेल। पहिल नजरि कंगना पर पड़ल। आँखिसँ प्रश्न कएलक मुदा कंगना ओतहि ठाढ़ रहल। देहकेँ झाड़ैत लड़का पुछलक, 'तो के छएँ ?' आवाजसँ मोनक थरथराहटकेँ साफसँ पकड़ल जा सकैत छल। आखिर बेरियाक निन्द पहिलबेर कोनो अन्य लड़कीक नजदिकमे खुलल छल।

'की जाने कोनो बनदेवी हुए ....'

'हम कंगना छी । काठमाण्डूसँ अएलहुँ अछि । हमर मतलब राजधानीसँ । ओना हम एतहिकेँ छी, नेपालेके जनकपुरेके, एहि माटिक ....अहाँ के छी ?'

'हम ....हम गामक सभसँ पहलमान लड़का ....किशोर नाम अछि, हमर । हम पहलमानी करैत छी आ पोखरिमे हेलिओ सकैत छी आ बड़का-बड़का गाछ पर चढ़ियो सकैत छी,' किशोर छाती तानि कऽ जवाव देलक ।

'आ अहाँ अबेरधरि सुतिओ सकैत छी,' कंगना स्थिरेसँ बाजल ।

किशोर माथ हिला कऽ बिहुँसल, 'हम आम आ एहि मालजालकेँ रखबारी करैत छी । मुदा ई मालजाल बहुत खाति अछि .....'कहैत-कहैत किशोरकेँ स्मरण आएल ओकरो भुख लागल अछि । आइकाल्हि जलपानक लेल गहुँमक मोटका रोटी अनैत अछि । जमीन पर किछु पाकल आम खसल छल, किशोर ओकरा उठौलक आ कंगनाकेँ देलक । किछु देरक लेल ओकरासभ बीच मौनता रहल ।

'एहि गाछ पर बहुत सुगा रहैत अछि,' आम समाप्त कएलाक बाद हाथ धोति बाजल । ओ सभसँ उचका डारि पर चुपचाप बात करैत सुगाकेँ देखि लेने छल शायद ।

'हँ ! आ बेसी आम बिगारिओ दैत अछि,' किशोर सुगा पर ढेपा फेकैत बाजल । ढेपा चुकि गेल मुदा खतराकेँ बुझैत सभ सुगा उड़ि गेल ।

'अहाँ हेलैत कतए छियै ? कंगना पुछलक ।

'पोखरिमे ....?'

'धुत पगली हम बेँग नहि छी बुझलहुँ एतएसँ नजदिके एकटा पोखरि अछि, ओतए चलू देखबैत छी !'

खेतक सहारा सुखल पति पर चलैत एकटा चिड़ै जोड़ा ओकरासभक उपर फरफराति भागल । ओकरा लागल ई फरफराएब किछु कहए चाहैत अछि । कंगनाकेँ अपन दाईक कथा स्मरण आबि गेल, 'ई चिड़ै निलकण्ठ अछि, कारण भगवान शिवकेँ कण्ठ जेकाँ एकरो कण्ठ लग निला रंग अछि । शिव जे पूरे सृष्टिकेँ बचाबए लेल समुन्द्रमेसँ निकलल विष पीब लेने रहथि ।

बुझल अछि अहाँकेँ ?' कंगना पुछलक तऽ किशोर माथ हिला देलक मुदा ओकरा कथा पसिन आएल। मोने मोन कंगनाक स्थान आओर कनि उच्च भऽ गेल। एहिसँ बेसी आओर ओ सोचिओ की सकैत छल ? तखने एकटा छोटका लुख्खी बाट कटैत भागल।

'लुख्खी सेहो भगवानक जीव अछि।' किशोर कंगनासँ कहलक, 'कन्हैया जे हमरे जेकाँ किसानक घरमे पलाएल रहथि, ओ लुख्खीकेँ बहुत सिनेह करैत छलथि बराबर ओकर पीठपर हाथ फेरैत छलथि। एहिद्वारे ओकर पीठ पर चारिटा कारी डाढ़ि अछि। हुनकर आंगुरक निशान ....कारण ओ हमरे जेकाँ कारी जे छलथि।'

'अहाँ लुख्खीकेँ पकड़ि सकैत छी ?' कंगना बाजल।

'नहि ! ओ बहुत तेज भगैत अछि , मुदा साँप पकड़ि सकैत छी, आ एकटा हम पकड़नोहो छी। नागड़ि पकड़लहुँ आ ईनारमे राखि देलहुँ। हमरा गाममे एकटा इनार साँपेसँ भड़ल अछि। जखन किओ साँप देखैत अछि तऽ पकड़ि कऽ हमरे जेकाँ व्यवहार करैत अछि !' अपन बहादुरीके कथा सुनबैत किशोरके देखि कऽ कंगना सोचए लागल ओ साँपक विषयमे जे ईनारक अन्हार आ पानिमे छपछप कऽ रहल हएत। ओकरा बुझएमे नहि आएल कि ओ लौट जाए वा ..... मुदा ओकर पूरे प्रश्न समाप्त भऽ गेल जखन ओ पोखरि देखलक।

डाँढ़धरि पानि जेकर सतहपर माटि साफ देखा रहल छल। अपन होसमे पहिल बेर कंगना एहन माटिबला पानि देखने छल।

'अहाँ एहिमे उतरए चाहब ?'

'नहि ! अहाँ जाउ।'

किशोर तऽ अपन हेलएके हुनर देखाबएके लेल पहिनेसँ तैयार छल। मोहारपर लागल घासपर पएर उठा हावामे हात तनलक, आ नम्हर श्वास खिचैत ओ कुदि गेल। सहीमे एकटा असफल प्रयास छल, मुदा कंगना प्रशन्न भेल। किशोर पोखरिमे उल्टा हेलए लागल, फेर माछ जेकाँ पलटि कऽ सीधा। जखन पूरे दाउ देखा कऽ किशोर पानिसँ बाहर निकलल ओकर पूरे

शरीर पर माटि लागल छल । '....एकबेर अहुँ चलुने । पोखरि बहुत गँहिरगर नहि अछि ।'

'ई तऽ गन्दा अछि ।'

'गन्दा ....ई तऽ माटि अछि, माटिमे कथिके गन्दा .....महिसके सेहो माटि पसिन अछि, गाय सेहो माटिसँ प्रेम करैत अछि,' किशोर समझौलक ।

'हम महिस वा गाय नहिने छी ।'

'ठीक छैक अहाँक इच्छा, भीतर नहि आउ मोहारपर तऽ चलि सकैत छी ने ।'

हँ ...नहिके बीच किछु समय बीत गेल आखिर कंगना मानि गेल मुदा जहिना ओ आगा बढ़ल ओकर पएर पिछैर गेल आ ओ कातमे खसल ।

पानि बेसी नहि छल मुदा ओकर उज्जर कपड़ाक ठाम-ठामपर माटिक दाग लागि गेल, ठेहुन पर छिला सेहो गेल छल । किशोर ओकर हाथ पकड़ि कऽ बाहर निकाललक ।

'रुकु !' अचानक किशोर बाजल

'कि भेल ?' घबड़ाकऽ कंगना पुछलक

'कछुआ... उवा देखियौ ।'

किशोरक नजरिके पाछु करैत कंगना देखलक एकटा शान्त रुपमे कछुआके बैसल जखनधरि कंगना किछु बाजल ओ हाथमे उठा लेलक । बेचारा कछुआ किशोर हाथ लगबिते अपन खोलमे सिकुरए लागल । '......राखु ओकरा ओहिना राखि दियौक ! ओ अपन अण्डापर बैसल अछि, अहाँ ...,' कंगना कनि तमसा कऽ बाजल ।

किशोरकँ सेहो गल्तीक अनुभव भेल । किशोर जतएसँ उठौने छल ओतहि राखि देलक ।

'आब हमरा चलबाक चाही । बहुत अबेर भऽ गेल, दाई चिन्तित हेतीह ।'

सँग-सँग चलथि ओतही आमक गाछ लग आएल कंगना, 'हम अहाँके एक दिन अपन घर लऽ चलब । मुदा सायद पौंर साल आ ओकरबाद, मुदा एकदिन अवश्य...'

‘हँ, अहाँ बहुत दुर रहैत छी ने ?’ किशोर पुछलक ।

‘हँ ! पहाड़क ओहिपार काठमाण्डूमे । ओतए हमर मम्मी पापा छथि,स्कुल अछि । हम जनकपुरसँ हवाई जहाजमे बैसि कऽ घर जाएब, अहाँ कहिओ काडमाण्डू गेल छी ?’

‘हम तऽ कहिओ जनकपुरसँ बाहरो नहि गेल छी, अहाँक काठमाण्डू केहन अछि ? ओतए हेलएके लेल पोखरि अछि ?’

‘हँ, मुदा एहन गन्दा नहि, स्वीमिङ्ग पुल अछि । एकदम साफ । जतए हम रहैत छी, ओतए दोकान अछि, थिएटर अछि, हल अछि, एहन स्थान अछि, जतए किछु खा सकैत छी । हरेक स्थानक लोक ओतए रहैत अछि । अहाँ कहिओ पियर, कारी, उज्जर, लाल, मुहँक लोकके देखने छियैक ?’

‘हँ, एकबेर हम एकटा लाल मुहँक लोक देखने रही । ओ गामक, खेतक, गाय महिसक फोटो खिच रहल छल । ओ हमरो फोटो खिचलक आ कहने छल हमरो पठादेब, मुदा ओ फोटो आईधरि नहि भेटल अछि ।’

कंगना देखलक ओकर बासुरी घासपर आराम कऽ रहल छल, ‘ई अहाँक बासुरी ?’

‘हँ ! ई बहुत पुरान अछि मुदा कहल जाइत अछि पुरान चीज बढ़िया होइत अछि । ई हमरा एहिना भेटल छल । कि पत्ता...शायद ई कन्हैयाक होइन ।’

‘अहाँके बासुरी बजाबए के सिखौलन्हि ? कंगना मुग्धभावसँ पुछलक ।

‘किओ नहि, हम स्वंय सिखलहुँ । अहाँके सुनाउ ...?’

गर्दैन हिला कऽ कंगना ओतहि आमक सहारा लऽ घासपर बैसि रहल । हावामे तान पसरए लागल । आत्माक भीतर उठैत संगीत श्वासमे मिल कऽ मोनमे धीरे-धीरे उतरैत जा रहल छल । कंगनाक अतिरिक्त किछु चिड़ै आ किछु मालजाल किशोरक सुरसँ नहा रहल छल । इनारक कातमे रहल मालजाल अपन भोजनमे व्यस्त रहलाक बाबजुद ई सुर गुँजि रहल छल वा नहि, के जानए ? चिड़ै एकरा पसिन कऽ रहल छल वा नहि ई कहब सेहो मुश्किल अछि ? हँ मुदा जखनसँ किशोर बजाबएके शुरु कएलक अछि

तखनसँ चारु दिस एकटा चुप्पि पसरल अछि। कंगना किशोरक आँखिमे हेलैत जिवनके बढ़ियाँ जेकाँ सुनि रहल छल। मुनल आँखि, उठैत खसैत आँगुर, श्वाससँ फुटैत संगीत ....मानु जरैत धर्तीके कोनो बादल झापि लेने छल। जखन किशोर बजाबएके बन्द कएलक सभ दिस किछु रुकलसन लागल। मात्र धानक डोलैत हावा आ मालजालकैँ खाएके आवाज।

कंगना उठि कऽ ठाड़ भऽ गेल।

'कंगना ! आब कहिआ आएब ?'

'दोसर बर्ष।'

'अगिल्ला साल ! तहिआधरि तऽ कतेको दिन बीत जाएत। अहाँ शायद सभ किछु बिसरि गेल रहब आ घुमिकऽ आबए सेहो नहि चाहब ?'

'नहि, हम आएब।'

'पक्का ....'

'अवश्य !'

'अहाँ ई लऽ जाउ,' कंगनाक हातमे बासुरी दैत किशोर बाजल, 'हम दोसर खोजि लेब।'

'मुदा हमरा तऽ बजाबए नहि अबैत अछि,' गम्भीरतासँ कंगना बाजल।

'बताहि हम कहने छलहुं ने एकरा बजाबए नहि पड़ैक छैक, ई स्वयं बजैत अछि।'

कंगना दूनु हाथ उपर उठौलक बाँसुरीके ठोड़ पर रखलक आ हल्कासँ श्वास फुकलक।

गजबसँ शुर फुटल ... गाछ पर बैसल सुगा जोड़सँ बजैत उड़ि गेल, किशोर जोड़सँ हाँसए लागल। कंगना तमसा कऽ जोड़सँ घुमल आ सड़कदिस भागए लागल। किछु दूर गेलाकबाद ओ घुमल आ ओझेल होबएसँ पहिने शायद अन्तिम बेर हाथ हिलौलक। ईनारक सहारासँ ठाड़ किशोर ओकर हाथमे कसल बासुरी देखलक आ चिचियाकऽ बाजल, 'दोसर बर्ष आबए नहि बिसरब।'

'हम आएब ....अवश्य..., ' धीरे-धीरे दूर जाइत कंगनाक आवाज बाटमे गुम भऽ गेल कंगना दौड़ रहल छल, अपना घर दिस, मुदा कोन घर ? ओ जे काठमाण्डूमे छल ? जे दौड़ैत भागैत सड़कके ओहिपार छल ? आइ कंगना नहि बुझैत अछि, मुदा ओ एकदिन आवश्य खोजि लेत आ ओ सही स्थान ....शायद हँ, शायद नहि !

किशोर ओकरा जाइत देखि रहल छल, जखनधरि ओ फुकनामे नहि हेरा गेल फेर ओ पल्टल । ओकरा लागल गाय महिस धीरे-धीरे खा रहल अछि । ओ गाय महिसके जोड़सँ खाए लेल बाजल, मुदा गाय महिसकेँ किशोरक आवाजक कोनो प्रभाव नहि पड़ल । ओ ओहिना खाइत रहल ।



प्रसन्नताक लेनदेने

हरेक स्टेण्ड पर रुकैत भीड़ कम कराबएकेँ आभाससँ बस आगा बढ़ि रहल छल। बसमे एतेक भीड़ छल की पयर राखएकेँ स्थानधरि नहि छल। लोक एक दोसरसँ सटि कऽ, एक दोसरकेँ पयर पर पयर राखि ठाढ़ छल। संयोगसँ हमरा बैसएकेँ स्थान भेटि गेल छल मुदा भीतरक भीड़क कारण ठीक जेकाँ श्वासो नहि लऽ पावि रहल छलहुँ। हम ओहिना इम्हर उम्हर नजरि घुमेलहुँ एकटा आकृति हमर ध्यान अपना दिस आकृष्ट कएलक। कन्हाधरि कटल केश, गोर रंग, लिपस्टिक लागल ठोढ़। हम ओ चेहरा दिस तकैत रहलहुँ। एहिबीच ओ लड़कीक नजरि हमरा दिस मिलल आ ओ बिहुँसि देलक। ओना तऽ हम ओकरा नहि चिन्हलहुँ मुदा प्रतिक्रियामे हमहुँ बिहुँसि देलहुँ।

हम सोचए लगलहुँ, के हएत ओ ? फेर एकाएक स्मरण अएल ई तऽ डिम्पल अछि।

हमर शान्तिनगरवला घरक नजदिक रहएबला अशोक दम्पतीक बेटी डिम्पल।

डिम्पल बच्चामे हमरा ओतए मेनीकेँ सँग खेलए अबैत छल। बहुत सुन्दर छल। सभ ओकरा डिम्पी नामसँ बजबैत छल। ओ सभकेँ स्नेहिल छल। बच्चा हुए वा बुढ़ ओकरा देखिते सभकेँ मोन ओकर गाल तानएकेँ भऽ

जाइत छल । खूब गोल मटोल गाल छल ओकर । गाल खिचिते डिम्पी बहुत तमसाइत छल । गाल फुला कऽ कहैत छल, 'ई खराब बात, बच्चाकेँ परेशान करब बड़काकेँ शोभा नहि दैत अछि ।'

डिम्पीक एहि आपत्ति पर लोकके हँस्सी आबि जाइत छल आ मोनमे एकबेर आओर गाल खिचएकेँ भऽ जाइत छल । मुदा डिम्पी एतबएमे भागि जाइत छल । ओकरा बड़का जेहन बात करब लोककेँ सेहो बढ़िया लगैत छल ।

जखन ओ मेनूकेँ सँग खेलए अबैत छल, तऽ हमरासँ बात करैत रहैत छल । ओकर बाजएकेँ ढंग देखि लगैत छल ओ समयसँ पूर्व बड़का भऽ गेल अछि ।

सहीमे डिम्पीकेँ माय बाबूसँ भेटए बहुत बड़का-बड़का विद्वानसभ अबैत छलथि ।

उषा आ अशोक नाटकमे काज करैत छलथि । उषा अभिनय करैत छलीह आ अशोक नेपथ्यकेँ जिम्मा उठबैत छलथि । एहिद्वारे नाटकबला आ लेखककेँ हुनका घरपर जमघट होइत रैहत छल । हुनकर चर्चा आ बहस सुनि कऽ सायद डिम्पी एहन बाजए सिख लेने छल ।

उषा आ अशोककेँ दोसर घर पर आएब जाएब नहि रहन्हि । कारण ओ दिनमे हरेक समय नाटकमे व्यस्त रहैत छलथि । नाटक समाप्त कऽ कऽ रातिमे अबेरसँ अबैत छलथि आ भोरमे अबेरसँ जगैत छलथि । हुनक दिन १० बजेसँ शुरु होइत छल । तखनधरि लगपासक लोक अपन-अपन काजमे जुटि जाइत छल । कहिओ-कहिओ दुनू पति पत्नी नाटक करबाक लेल देशक विभिन्न स्थानपर सेहो जाइत छलथि ।

हमरो एहि परिवारसँ छोटछिन परिचय छल । डिम्पी आ ओकर दूटा छोट भायकेँ सम्हारए लेल एकटा प्रौढ़ा छलीह । शायद हुनकर कोनो सम्बन्धेकेँ छल । नाटकसँ सम्बन्ध भेलाक कारण लोककेँ हुनका प्रति आकर्षण छल । सभ चाहैत छल, हुनकासँ परिचय हुए मुदा किओ हुनकासँ बाजएकेँ साहस नहि करैत छल ।

हमर सभक कम्पनीक वार्षिकोत्सवमे हमसभ एकटा नाटककेँ आयोजना कएलहुँ ओहिमे उषा काज कएने छलीह। ओहि समय हमरा हुनकासँ परिचय भेल। हमरा कलाकारसभकेँ जलपान कराबएकेँ जिम्मेवारी देल गेल छल तखन उषाकेँ बहुत नजदिकसँ देखएकेँ अबसर भेटल। ओ बहुत सुन्दर छलीह। हुनका देखि कऽ ई नहि लगैत छल जे हुनका ८ बर्षक लड़कीयो अछि।

हुनकर रंगमञ्चीय रुप बहुत आकर्षक छल। पुरान जमिन्दारक पुतहुँक अभिनय गजबकेँ कएलन्हि। पूरे दर्शक हुनका पर आकर्षित भऽ गेल।

नाटक समाप्त भेलाक बाद उषाक गाड़ीसँ हुनकेसँग घर अएलहुँ।

बाटमे ओ हमरासँ खूब बातचित कएलन्हि। डिम्पीकेँ जन्मक विषयमे, अपन विदेश टुरक विषयमे खूब कहलन्हि। हमरो कम्पनीक लोक हुनका खूब प्रशंसा कएने छल। किछु लोक तऽ हुनका नगद पुरस्कार सेहो देलन्हि। एहि प्रशन्नतामे हमरा ओ नाटकक व्यावसायिकताक विषयमे बहुत बात कहलन्हि आ फेर घर आबएकेँ निमन्त्रणा दऽ हमरा घर छोड़ि देलन्हि।

एकरबाद एक दूबेर एक दोसरक घर आएब जाएब सेहो भेल, तखन उषा हमरा अपन एल्बम आ पुरस्कार सेहो देखौलन्हि। अपन काजसँ बेसी अशोकक काजसँ सम्मान रहन्हि, आदर रहन्हि। उषा घरमे बहुत साधारण जेकाँ रहैत छलीह। ओहि साधारणपनमे बहुत सुन्दर लगैत छलीह। हुनका घरमे एकटा पुस्तकालय छल जाहिमे बहुतरास नाटकक किताब आ अन्य साहित्यिक किताबसभ सेहो भड़ल छल। एहिसँ हमरा उषाक प्रति आओर आदर बढ़ि गेल।

एक दिनक बात अछि रातिमे निन्द नहि अएलाक कारण हम गैलरीमे ठाढ़ छलहुँ, तखने उषाक घरक आगा एकटा गाड़ी रुकल ओहिमेसँ उषा उतरलीह। ओ दू चारि डेग चलले छलीह की ओहि गाड़ीमेसँ एकटा युवक उतरल ओ उषाकेँ किछु देरक लेल आलिङ्गनमे लऽ लेलक आ फेर चलि आएल।

हम ओ युवककेँ चेहरा देखएकेँ प्रयास कएलहुँ, तखनधरि ओ गाड़ीमे बैसि गेल छल।

कैँ हएत ओ ? हुनकर प्रेमी, हुनकर सहकर्मी वा हुनकर कोनो पुरान मित्र ? हमरा आगा कतेको प्रश्न ठाढ़ भऽ गेल । किछु दिनक बाद हम ई घटना बिसरि गेलहुँ । डिम्पी सभदिन जेकाँ हमरा घर अबैत जाइत रहल ।

एक दिन ई परिवार दोसर स्थान पर सिफ्ट भऽ गेल । जाइत समय ओ अपन नव पता हमरा देलन्हि मुदा हमरा हुनका ओतए जाएमे सम्भव नहि भेल । बादमे पता सेहो हेरा गेल । उषा सेहो कहिओ नहि भेटलीह । हँ हुनक नाटकक विज्ञापन अवश्य नजरि अबैत छल । धीरे-धीरे हमर दैनिक जीवनमेसँ उषा, डिम्पी आ अशोक हेरा गेलथि ।

ओहि दिन डिम्पीकेँ देखि कऽ पुरान स्मरण ताजा भऽ गेल । एतेक बर्षक बादो हमरा चिन्ह लेलक । हम इशारासँ डिम्पीकेँ नजदिक बजेलहुँ । ओ भीड़मेसँ बाट निकालैत हमरा लग आबि गेल । हम ओकरा अपना लगमे बैसा लेलहुँ ।

'की डिम्पी ? कतेक महिनाक अछि ?' हमर प्रश्नपर ओ लजा गेल ।

हम आगा पुछलहुँ, 'कतए रहैत छी ? विवाह कहिआ भेल ? उषा केहन छथि ? ओ कतए रहैत छथि ?' हम हुनकापर प्रश्नक झरी लगा देलहुँ ।

डिम्पी हँसए लागल, 'आन्टी, मेनू कतए छथि ? विवाह भऽ गेलैक ? की छैक ओकर हालचाल ?' ओहो प्रश्नक झरी लगा देलक ।

'मेनू धरानमे रहैत अछि । ओकर पति सेहो डाक्टर छैक ।'

'अरे वाह दुनू गोटे डाक्टर ।'

'एकटा ओकरा बेटी सेहो छैक... अहाँकेँ पहिल डिलेवरी लगैत अछि । पति कतए रहैत छथि ?' हम उत्सुकतासँ पुछलहुँ ।

'हम विवाह नहि कएने छी,' ओ हरेक शब्दपर जोड़ दैत बाजल ।

हमरा विश्वासे नहि भऽ रहल छल ।

'आन्टी, हम सच्चे कहि रहल छी । हम विवाह नहि कएने छी । किएक करु विवाह ? तलाक लेवाक लेल ? के कहने अछि झन्झट मोल लेवाक लेल ?' ओ पीड़ा भड़ल स्वरमे बाजल ।

'......अपने सोचैत हएब जे ई लड़की की-की बाजि रहल अछि ? मुदा जहिआसँ बुझए लगलहुँ अछि तहिआसँ इहे देखैत छी हमरा ओतए आबएबला

सभ विद्वान छलथि। अपन-अपन क्षेत्रमे हुनकर बहुत प्रतिष्ठा छल। हुनकरसभक इच्छा बुझए लेल, हुनकासभकेँ देखवाक लेल लोक ललाइत छल। किताबमे महान लागएबला लोक सही जीवनमे बहुत छोट अछि अपन कनियाँ आ बच्चाकेँ बिसरि कऽ मेहफिलमे जमल रहैत छथि। हुनक मोन मानू तितली हुए जे कहिओ एहि फुल पर तऽ कहिओ ओ फुल पर मड़राति रहैत अछि। विवाह आ ओकर पवित्रता हुनका लेल कोनो महत्व नहि रखैत अछि। हमरो माँ ओहिमेसँ एक अछि।'

'उषा ?' हमरा आँखिमे ओहि रातिक दृश्य आबि गेल।

'माँ, बहुत बड़का कलाकार छल, बच्चेसँ रंगमञ्चपर काज करैत छल। नेपाली रंगमञ्चपर आइयो ओकर नाम अछि। एकबेर नेपाली सिनेमाक अफर सेहो आएल छल मुदा ओ हमर बाबूजीक सँग विवाह करवाक मोन बना लेने छल। विवाहक कारण ओ सिनेमा नहि कऽ सकल। विवाहक कारण ओ एकटा बढ़िया अवसर छोड़ने छल। एहिकेँ बादो झूठे फूसेकेँ ढौस जमबैत रहैत छल। जहिआ बाबूजी ओकरा रोकएकेँ कोशिस करैत छलाह, ओ कहैत छल, 'नाम कमाएकेँ एकटा बड़का अवसर अहाँक कारण छोड़ि देलहुँ ....आओर की-की करु अहाँक लेल ?'

'बाबूजी मोन व्रत धऽ लैत छलथि। आओरसभ किछु ठीक छल। दुनू एक दोसरकेँ बहुत प्रेम करैत छलीह ओहि प्रेमक कारण बाबूजी ओकर छोटमोट प्रेम कथाकें नजरअन्दाज कऽ दैत छलाह। ओहो सभ किछु बाहर छोड़ि कऽ हमर माँ बनि कऽ रहैत छल। हमसभ शान्ति नगरक घर छोड़लहुँ, एकर एक बर्ष पहिनेक बात अछि भारतक इप्टासँ प्रशिक्षण लेने एक युवकसँ माँकेँ परिचय भेल ओ माँकेँ बहुत बड़का फैन छलाह। ओ फिलासफीमे एमए कएने रहथि आ बहुत सुन्दर छलथि। रवि शंकर हुनकर नाम छल। माँ सेहो हुनका बहुत पसिन करैत छल। पहिने मित्रता, बादमे प्रेम। बाबूजी शुरुमे नजरअन्दाज कएलथि मुदा माँ एहिबेर अपन नियन्त्रण नहि राखि सकल। बाबूजी बहुत सम्झौलन्हि मुदा कोनो फाइदा नहि भेल। माँ रवि शंकरकेँ सँग रहए लागल। हमसभ शान्तिनगर छोड़ि देलहुँ.....'

हम एकटक ओकरा दिस ताकि रहल छलहुँ।

'....मुदा माँ तलाक कहिओ नहि लेलक। ओ घर अबैत, हमरासँ, बाबूजीसँ पूरापूर पहिनहे जेकाँ व्यवहार करैत छल । दू चारि दिन रहैत छल फेर रविशंकर लग चलि जाइत छल । बाबूजी असगरुआ भऽ गेलथि....'

किछु देर रुकि कऽ फेर बाजल, '..... हमर उमेर बढ़ैत जा रहल छल । हमरा बुझाबए सिखाबएबला किओ नहि छल । माँ अपन काजमे व्यस्त आ बाबूजी अपना काजमे । हम १२ कक्षाक बाद पढ़ाई छोड़ि देलहुँ । ओहिसमय हमरा उमेश भेटला । हमरो असगरुआसँ मुक्ति भेटल । हम एक दोसरसँ प्रेम करैत छलहुँ। ओ बहुत महत्वकांक्षी युवक छलाह। किछु बर्षक बाद बलीउडमे संघर्ष करए चलि गेलाह। ओ हमरासँ विवाह करए चाहैत छलाह । हम अस्वीकार कऽ देलहुँ कारण काल्हि हमरो माँए जेकाँ हालत भऽ गेल तऽ ? हमरा कारण हमर धीयापुताकेँ किए सजाए मिलए ? उमेश कहिओ-कहिओ भेटए अबैत छलाह । ओकरे ई निशानी अछि ।'

बहुत देरक बाद हम कहलहुँ, 'तोहर बात ठीक छौक मुदा बच्चाक नाम केँ देत ?'

'हम देव,' ओ झट्टसँ जवाव देलक, '९ महिना बच्चाकेँ पेटमे पालत माए, तकलिफ उठाओत माए आ नाम बाबूजीकेँ ? ई किए ? हमरा नाममे की खराबी अछि ?'

हम ओकरा दिस देखैत रहि गेलहुँ। ओकरामे एतेक बदलाव ? एतेक खुल्ला विचारक हएत डिम्पी, एना हम कहिओ सोचबो नहि कएने छलहुँ। स्थिति ओकरा बहुत किछु सिखा देने अछि। दोसरसँ अलग बनौने अछि .....दोसरसँ अलगे आएल अछि, ओकर भागमे ।

'उषा आ अशोक कतए छथि आइ काल्हि ?' हम पुछलहुँ ।

'माँ आ बाबूजी एखन हमरे लग रहैत छथि । बाबूजीकेँ लकबा मारि देने छन्हि । माँ हुनके सेवा करैत अछि ।'

'आ रविशंकर ?' हम कनी संकोचे स्वरमे पुछलहुँ ।

'ओ विवाह कऽ लेलन्हि ....माँए हुनका आदेश देने छलन्हि, ओ बच्चा चाहैत छलथि आ माँ तऽ .....'

'ओह ।'

'ओ आब सिरियल करैत छथि। बड़का नाम कमौने छथि सिरियलमे। माँसँ भेटए लेल कहिओ काल अबैत छथि।'

कलाकारसभक आश्चर्यजनक जीवनक विषयमे जानकारी भेटि रहल छल।

'अहाँ सेहो नाटकेमे काज करैत छीयै ?'

'नहि हम नाटकमे काज तऽ नहि करैत छी, मुदा नेपथ्यमे काज करैत छी। बाबूजीक कला विरासतमे भेटल अछि। टीभी पर सेहो काज करैत छी।'

'अरे वाह, बहुत होनहार भऽ गेल छी,'हम पुछलहुँ,'अहाँक भाय ?'

'बड़का सरकारी नोकरी करैत अछि। छोटकाकेँ तऽ अपने जनबे करैत छियैक। सिरियलसभमे काज करैत अछि।'

'हमर छोटका पोता नरेन्द्र प्रसादकेँ बहुत बड़का फैन अछि। कहिओ समय मिलत तऽ हमरा पोतासँ अवश्य भेटि करा दिहए।'

'हँ अवश्य आएब। माँसँ सेहो भेटि भऽ जाएत। ई लिअ हमर कार्ड।' हमरा हाथ पर सुन्दर सन भिजिटङ्ग कार्ड राखि देलक।

हम प्रेमसँ डिम्पीकेँ माथ सहलेलहुँ। ओकर आँखिमे पानि चलि आएल ....।

'आन्टी, आखिर मनुष्य असगरे तऽ होइत अछि। फेर असगरे जीवनक लड़ाई लड़ैत पयर किए डगमगाएत ? एकला चलोरे कहएबला रविन्द्र नाथ टाइगोरकेँ माथ पर बैसाबएबला संसारकेँ भीड़ जुटाबएकेँ आदत पड़ि गेल अछि। जे हमरा लग अछि, ओकरा प्रशन्न राखू, ओकरा पीड़ा सहए दिऔक। अपन दुःख स्वयं भोगू, लेनदेन हुए मात्र प्रशन्नताकेँ।'

फेर डिम्पी हमरा हाथमे हाथ रखैत बाजल, 'चलैत छी आन्टी,' आ बढ़ि गेल।

ओहि दिन डिम्पी जीवनक उदेश्य सिखा देलक। अपन बुझल, भोगल।

हमर हाथमे डिम्पीकेँ भिजिटिङ्ग कार्ड छल। डिम्पी, मात्र एतबए लिखल छल।



बाबूजी

जखन रिक्सा बाहर आबि कऽ रुकल तऽ भोर भेलाक बादो एखनो दूरसँ अन्हारे लगैत छल। ओ अपन घरक गेटक आगा रिक्सा रुकबौलन्हि आ सामान उतारि कऽ ओकरा पैसा दऽ बिदा कएलन्हि।

रिक्सा गेलाक किछुदेर बादधरि ओ अपन सामान लऽ ओतहि ठाढ़ रहलाह। हुनक घरबला पंक्तिमे चारिटा नव घर बनि गेल छल। दूटा घर बनएकँ खबरि तऽ ओ सुनने रहथि मुदा ई तेसर चारिम प्लट कहिआ बिका गेल आ घरो बनि गेल ? सोचैत ओ घर दिस निहारए लगलथि।

फेर ओ कॉलवेल बजौलन्हि। माँ गेट खोललाक बाद आश्चर्यसँ हुनका दिस ताकए लगलीह। माँ हुनका चिन्हएकेँ कोशिस कऽ रहल रहथि ? पहिचानक एहन संकट ? ओ डेरा गेलथि। कि डेढ़ सालमे एतेक बदलि गेलथि अछि ? केश किछु बेसी उज्जर भऽ गेल अछि मुदा ओ तऽ असमय अछि .....। शायद मोटा बेसी गेल छथि।

'आ ....भीतर आ।'

'गोर लगैत छिऔक,' ओ पयर छुलन्हि।

घुसिते पहिल नजरि ओछाएन पर पड़लन्हि। बाबूजी ओतए नहि रहथि।

‘बाबूजी कि एतेक ठण्ढमे सेहो .....?’

‘आओर की, नियम धर्मकेँ पक्का छथि......,’ माँ बिहुँसिली ।

माँ सिरकमे पयर राखि कऽ बैसि रहलीह । ओहो कुर्सी खिच कऽ ओतहि बैसि रहलाह । माँ हुनका दिस देखि कऽ बिहुँसि रहल छलीह । ओ माँकेँ ध्यानसँ देखए लगलाह । एहिसँ पहिले एक्कहुँ बेर माँ लग नहि बैसि पाएल छलाह । माँ कतेक बदलैत जा रहल छथि हरेक बेर ओ दोसर माँ पबैत छथि । चेहरा घोकचि रहल छल ।

‘माँ, तो तऽ बुढ़ भऽ रहल छँ,’ ओ बिहुँसि कऽ बजलाह ।

‘जखन हमर सन्तान बुढ़ होबए लागल तऽ हम तऽ बुढ़ होबे करब,’ माँ हुनका निकलैत जा रहल पेट दिस देखि कऽ बिहुँसिलीह ।

ओ लजा गेलथि आ नजरि हटा कऽ रुमकेँ चारु दिस देखए लगलाह । अलमारीमे नव सीसा लागल छल । उपरबला खन्नासँ रेडिमेड फुलसभ हटा देल गेल छल आ ओतए भगवानक किछु फोटो आ मूर्ति राखल छल । नीचाबला खन्ना पर किछु किताब आ बीचबला खन्ना पर दूटा फोटो राखल छल । एकटा फोटो माँ आ बाबूजीक छल । युवावस्थामे जखन बाबूजी मोछ रखैत छलथि से ई फोटो प्रमाण अछि । दोसर फोटो पूरे परिवारकेँ छल जाहिमे माँ बाबूजी आगा कुर्सी पर बैसल छलथि आ ओ तथा छोटू कूर्सीक पीठ पर हाथ राखि ठाढ़ छलथि ।

‘ई भगवानक फोटो आ मूर्ती ड्राइङ्ग रुममे किए राखल छैक ?’ ओ अलमारी दिस देखैत पुछलन्हि ।

‘तोहर बाबूजी प्रत्येक दिन पूजा करैत छथुन,’ माँ बतबैत हँसए लगलीह ।

‘की .....? बाबूजी आ पूजा ?’ ई सुनि हुनका बहुत आश्चर्य भेल । जाहिमे ओ बहुत देर धरि डुबल रहलथि । बाबूजी तऽ शुरुएसँ महानास्तिक लोक छलथि जे माँकेँ पूजा पाठ आ उपवासक विरोधमे नम्हर–नम्हर लेक्चर पियबैत छलथि । आ आब स्वयं पूजा .....?

'... आ सुन, माछ माउस सेहो खाएब छोड़ि देलखुन अछि। कहैत छथि, अहाँ नहि खाति छी तऽ हमरो नहि खएबाक चाही। माछ माउसबला सभबर्तनकेँ स्टोरमे राखि देने छी,' माँ ओहि गतीमे बता रहल छलीह।

हुनका बुझएमे बाबूजीक ई क्रियाकलाप नहि आबि रहल छलन्हि।

हुनका भऽ की गेल छन्हि ? हुनका आगा बाबूजीक कड़ा चेहरा घूमि आएल। हुनका अपन बाल्यपनक, पूरान दिन स्मरण आबए लागल, जखन बाबूजी घरमे तानाशाहक हैसियत रखैत छलथि। एतेक कड़क जे हुनका आगा जाएमे डर लागए आ एतेक अनुशासनवला की घरक गाछवृक्ष सेहो हिलएसँ पहिने हुनकर आदेश लए। पुरुष होबएकेँ अभिमान हुनका पूर्खेसँ भेटल छल। बाबा गामक जमिन्दार रहथि आ ओ पूरे जीवनमे दाईसँ एक्कोबेर प्रेमसँ बात नहि कएलन्हि। बाबूजी हुनकोसँ दू कदम आगा छलथि। ओ माँकेँ हरेक बात, चाहे ओ सही हुए वा गलत एतेक डपटि कऽ कहैत छलथि माँ डेरा जाइत छलीह।

कारण शायद रहल हेतन्हि अवचेतनमे बैसल किछु बात आ किछु संस्कार। बाबा आ हुनकर मण्डली आपसमे बैसि कऽ बात करैत छलथि तऽ तेज आवाजमे किछु शिक्षा निकलैत छल जे अप्रत्यक्ष रुपसँ होइत छलन्हि।

महिला पयरक खराम होइत अछि, ओकरा बेसी माथ पर नहि चढ़ाओल जाए, पुरुषकेँ महिलाकेँ कोनो बात नहि मानबाक चाही, महिलाकेँ भोजन बनाबएसँ बच्चा पालब बाहेक किछु नहि सोचबाक चाही आदी–आदी।

माँ पूरे बात दाईसँ सुनि कऽ फेर अपन अनुभवसँ शिक्षा प्राप्त कऽ अपना लेल एकटा सीमा खिचने छलीह। माँ कहैत छलीह जे बाबूजी विवाहक बाद कए–कए दिनधरि माँसँ बजबे नहि करैत छलाह। माँ शाकाहारी छलीह आ ओ ओहि वर्तनमे माछ, माउस खाति छलीह। कहिओ बजारसँ किनकऽ अनैत छलथि आ कहिओ लाबि कऽ माँकेँ बनाबएकेँ आदेश दैत छलथि। माँ नाक बन्द कऽ कनैत बनबैत रहैत छलीह। ओहि समय माछ माउस बनाबए सेहो नहि अबैत रहन्हि मुदा बादमे ओ बहुत

नीक बनाबए लागल छलीह। एकर किछु दिनक बाद तऽ ओ स्वयं कहिओ–कहिओ बजारसँ माछ माउस आनि हमरा आ बाबूजीकेँ प्रेमपूर्वक खुअबैत छलीह।

बाबूजी पढ़ल लिखल रहैथि आ विवाहक डेढ़ दू बर्षक बाद शहरमे नोकरीक लेल आबि गेलाह, एहिद्वारे ककरो शिक्षाकेँ बहुत दिन धरि आवश्यकता नहि पड़लन्हि। किछु दिनक बाद ओ माँसँ बढ़िया जेकाँ व्यवहार करए लगलाह।

बढ़िया जेकाँ व्यवहार करएकेँ अर्थ ई नहि छल जे माँकेँ काजमे हाथ बटाएब वा माँकेँ कहला पर कोनो निर्णय लेब। हँ, माँकेँ बातक बात पर डाटब छोड़ि देलन्हि आ हुनकर बातकेँ एक बेर सुनि अवश्य लैत छलथि, भलेही अन्तिम निर्णय स्वयं लैत छलथि माँ बतौने छलीह जे सुनएमे भलेही ई परिवर्तन छोट लागए मुदा हुनका जेहन मनुष्यक लेल ई बहुत क्रान्तिकारी छल।

'चाह पिबएँ ?' माँ ओछाएन परसँ उतरैत पुछलीह।

'हँ...हँ....बनोने,' हुनकर तन्द्रा टुटल। माँ किचेनमे चलि गेलीह आ ओ टहलए लगलथि।

'परसू राति टिभी पर तोहर कार्यक्रम देखलिऔ, बहुत बढ़िया छल,' माँ किचेनसँ बजलीह।

'हँ ...बाबूजी सेहो देखलखुन ?' ओ आवाज कनि जोड़ कऽ कऽ पुछलन्हि।

'हँ...हँ..ओहो देखलखुन।'

हुनकर मोन भेलन्हि ओ पुछैथि जे बाबूजीकेँ कार्यक्रम केहन लगलन्हि मुदा चुप्प रहलथि। माँकेँ स्वयं बतेबाक चाही। ओ बुझैत तऽ छथि एहि सम्बन्धमे बाबूजी कहिओ हुनकर प्रशंसा नहि करता आ ओ कहिओ ई देखाबएकेँ प्रयास नहि करताह जे बाबूजी हुनका विषयमे जे सोचैति छथि, ओकरा बुझबाक हुनका भीतर कोनो इच्छा वा उत्कण्ठा अछि।

माँ चाह लऽ कऽ ओछाएन पर चलि अएलीह । ओ बहुत प्रशन्न देखाई दऽ रहल छलीह । वर्तमान घटनाक्रमकेँ जेना हुनका पर कोनो असरे नहि पड़ल छल । की माँ छोटुक कारण कनिको दु:खित नहि अछि ? जखन ओ अपने मोनसँ स्वजातीयमे विवाह कएने रहथि तऽ सुनने रहथि जे माँ हप्तो अनजल त्याग कएने छलीह । छोटू तऽ दोसर धर्मबलासँ विवाह कएलन्हि अछि । फेर माँ एतेक प्रशन्न कोना देखा रहल छथि, ओहो मात्र ५/६ महिनामे.....?

'कनियाँ केहन..... ? आ साक्षी....?' माँ चाह पिबैत पुछलीह ।

इहे विषय अछि जाहि पर माँ आ बाबूजीसँ बात करैत ओ स्वयंकेँ अपराधी बुझए लगैत छथि ।

बाबूजी तऽ एहि मुद्दा पर एक दू बेरक बाद तऽ बाते नहि कएलन्हि मुदा माँ .....? ओ तऽ जेना अपना आपकेँ सम्हारि लेने छथि ।

'ठीक अछि दुनू,' ओ खिड़की दिस तकैत जवाव देलन्हि ।

'साक्षी तऽ आब बड़का भऽ गेल हएत ?' माँ बात्सल्यसँ बिहुँसैत पुछलीह ।

'हँ, आब स्कूल सेहो जाए लागल छैक ।'

'अच्छा....हमरा ओकरा देखबाक मोन करैत अछि मुदा .....,' माँ किछु कहैत-कहैत रुकि गेलीह ।

'सत्ते...? तऽ चल ने हमरासँग । जखन मोन करौ एतए छोड़ि देबौक,' ओ चहैक उठला ।

'तोरा बुझल नहि छौ बाबूजी असगरे भऽ जेताह,' माँ ठण्ढा श्वास लेलीह ।

'माँ किछुए दिनक लेल चल ने ...। बाबूजीसँ सेहो कही ने चलए लेल,' ओ माँकेँ ठेहुन पर हाथ राखि प्रसंगकेँ भावनात्मक बनबैत कहलन्हि मुदा तुरन्ते अनुभव भेलन्हि ओ एकटा असम्भव बात कहि देलन्हि अछि । ओ एकटा सम्भव विकल्प रखलन्हि, 'तो चल ने माँ । बाबूजी असगरो रहि सकैत छथि किछु दिन । हम हुनकासँ बात करब ।'

'नहि-नहि ओ हमरो नहि ....।'

'किए, तोरा किए नहि जाए देथुन ? की हमरा एतबो अधिकार नहि अछि...?'

माँ किछु परेशान भऽ सोचए लगलीह । फेर अचानक बिहुँसैत बजलीह, 'हुनकर किछु पता नहि, हमरा जाए नहि देताह । बुझल छौक की कहैत छथि ? पहिने कहैत छलथि जखन हमर बच्चेकेँ हमर चिन्ता नहि अछि तऽ हम ओकरासभकेँ किए करु आ आब .....।'

'आब की कहैत छथि ?' ओ बुझएकेँ लेल उत्सुक भऽ उठलथि । किए की पहिनेबला बात ओ बुझैत छलाह मुदा आब बाबूजी की सोचए लागल छलथि ?

'आब ...? आब बच्चा सभ पर कोनो तामस नहि करैत छथि बच्चाकेँ अपन जीवन जिबए दिअ सुनिता हम अपन फर्ज पूरा कऽ देलहुँ । हमरा आब ओकरासभसँ कोनो अभिलाषा नहि रखबाक चाही । हम कोनो व्यापारी छी जे हरेक बातकेँ बदला खोजब ? ओ किछु करैत अछि हमरा लेल तऽ ठीके, हम स्मरण करैत छी, हमरा लग अबैत अछि, तैयो ठीक नहि तऽ हम एक दोसरकेँ अकेलापन बाँटि सकैत छी । हमरा बेसी मोह माया नहि बढ़ेबाक चाही आ आओर तऽ हमरा गीताकेँ पता नहि की-की श्लोक सूना कऽ ओकर अर्थ कहए लगैत छथि,' माँ बिहुँसैत बतबैत जा रहल छलीह । ओ माँकेँ प्रशन्न देखि खुश रहथि ।

'हँ एहन बात करए लागल छथि ओ ....?' हुनका विश्वासे नहि भऽ रहल छन्हि, अपन जीद्दकेँ हरेक समय सही बुझएबला आ जीवनमे कहिओ हार नहि मानएबला मनुष्यक विषयमे सुनि कऽ हुनक हृदय एहि बातकेँ सत्य होबए पर विश्वास नहि कऽ पावि रहल छल ।

'ओ तऽ बहुत बदलि गेल छथिन...,' माँकेँ ई बात सुनि कऽ बहुत प्रशन्नता भेल । प्रशन्न तऽ ओहो छलथि मुदा एकर पाछु तऽ कोनो ठोस आधार नहि बुझि पाबि रहल छलथि ।

'एहन परिवर्तन कहिआसँ आएल अछि हुनका भीतर....? की छोटूक विवाह कएलाक बादसँ ......?' हुनका मोनमे जे आशंका रहन्हि, ओ आगा राखि देला।

माँ कनि देरक लेल रुकि गेलीह, फेर अचानक जेना किछु स्मरण आएल होयन्हि, 'हँ एक दम ओकरे बाद नहि....परिवर्तन तऽ तोरे विवाहक बाद शुरु भऽ गेल रहन्हि।'

'केहन अछि छोटू......?' ओ पुछलन्हि।

'बढ़िया अछि। हरेक दू तीन दिनक बाद फोन कऽ हालचाल पुछैत रहैत अछि, महिना डेढ़ महिनामे घरो अबैत अछि। एहिबेर तऽ अपन कनियाँकेँ सेहो अनने छल। ओहो बढ़िया छथि। बहुत जल्दी पूरे हिन्दु संस्कार सिख लेने छथि ओ। तोहर बाबूजीसँ तऽ खूब बात करैत छलीह, तोहर बाबूजी सेहो हुनकर खूब प्रशंसा करैत छलथि।'

हुनका बड़का झटका लगलन्हि। बाबूजी बात करैत छथि अपन पुतहुँसँ, ओ पोतहु जे दोसर धर्मक छथि, जेकरा लेल बेटा घरक विरोध कऽ कऽ विवाह कएलन्हि। हुनकर दृष्टिकोण एतेक विस्तृत भऽ गेल अछि हुनका बाबूजीसँ भेटएकेँ उत्कंठा बढ़ैत जा रहल छल।

'तो तऽ जेना पूरे सम्बन्धे समाप्त कऽ लेने छएँ। अबैत छएँ साल–साल भरि पर आ चलि जाए छेँ एक दू दिनमे, कनियाँ आ बच्चाकेँ सेहो नहि लबैत छेँ। कतेको बेर कहलिऔ तोरासँ जे कनियाँ आ बच्चाकेँ छुट्टिमे एतए पहुँचादे, दस दिनक लेले किए नहि। मुदा तोरा तऽ अपन बाबूजीसँ ठनल रहैत छौ,' माँ जेना शिकायतक पुरिआ खोलि देलन्हि।

'बाबूएजी तऽ कहने रहथि एहि महिलाकेँ अपन घरमे घुसए नहि देब। आब जहिआधरि ओ स्वयं नहि कहता, तहिआ धरि हम हुनका नहि लाएब,' ओ माँकेँ आँखिसँ आँखि मिलबैत बीना कहलन्हि। ई बात ओ बहुत पहिने तय कऽ लेने रहथि। आखिर ओकरो तऽ कोनो स्वभिमान छैक।

'आ तो मानि लेलए ? ओ तऽ तामसमे कहने छलखुन। स्मरण नहि छौ तोरा आ छोटू पर कतेक गर्व करैत छलाह, देखने नहि छहून जखन तोहर

काकासँ झगड़ा भेलैक तऽ ओ सभकेँ आगा कहने छलाह हमरा कोनो मतलबी कुटुम्बक आवश्यकता नहि, हमर दूटा बेटा दू करोड़क अछि आ तोसभ आइधरि कोनो बात नहि मानलए, हुनकर मोन लायक कोनो काज कएलए ? तामस आएब तऽ स्वभाविक छल ।'

सत्ते कहैत छथि माँ बाबूजी सहीमे हुनका आ छोटूकेँ बहुत मानैत छलथि । एकटा हुनकर मित्र पुलिसमे बड़का पोष्ट पर छलथि, हुनकासँ जेठकाक लेल नोकरीक बात कएने छलथि । तहिना घर बनबैत समय छोटूक लेल आगाक स्थान दोकान, शो रुम वा अफिस खोलए लेल सुरक्षित रखने छलथि । एकटा बेटा पुलिसक बर्दीमे देखएकेँ हुनकर सपना रहन्हि । एकटा बेटा घरमे रहबाक चाही, हुनकर एहन अटल मान्यता छल । मुदा हुनकर बेटा हुनकर छोट–छोट अभिलाषा सेहो पूरा नहि कऽ पेलन्हि । ओ पढ़ाई पूरा करिते मित्रकेँ सँग काठमाण्डू चलि गेलथि । आ संघर्ष करैत–करैत मिडियामे अपन बढ़िया नाम कमा लेलन्हि । ओतहि अपन सहकर्मीसँग विवाह कऽ लेलन्हि । छोटू पोखरा चलि गेला आ कैन्टिनकेँ ठिक्का लेबए लगलथि । बहुत पैसा भेलाकबाद हुनकोसँ दू कदम आगा निकैलि कऽ एक गैर हिन्दुसँ विवाह कऽ लेलन्हि । बाबूजीक प्रतिक्रिया तऽ ठीके रहन्हि । हुनकर बेटा लायक भेलाक बादो हुनकर बात नहि मानलकन्हि । तामस तऽ होएबे करत । मुदा हुनकर आ बाबूजीक मानसिक संघर्षमे बेकारमे माँ पिसा रहल छलीह । आब ओ अवश्य प्रमिला आ साक्षीकेँ लऽ अएता । यदि बाबूजी एकबेर स्वयं लाबएकेँ लेल कहि देताह तऽ .....।

बाबूजीकेँ भोरमे मर्निङ्ग वाक करएकेँ नियम पुरान छन्हि । जखन ओ छोट रहथि तऽ बाबूजी हुनको घुमाबए लऽ जाइत छलाह, मुदा जेना–जेना बड़का होइत गेला, बाबूजीक लगाएल सभ आदत छुटैत गेलन्हि ।

किछु देरक बाद काँलवेल बाजल । गेट खोलए वएह गेलथि ।

'आरे तो ....?'

'गोर लगैत छी बाबूजी,' ओ पयर छुलन्हि ।

'नीके रह, की हालचाल ।'

हुनका लागल जेना बाबूजीक चेहरा पर वएह भाव अएतन्हि जे पहिने हुनका देखि कऽ अबैत रहन्हि। मुदा हुनकर चेहरा एकदम शान्त छल। ओ भीतर जा कऽ शोफा पर बैसैत बजला, 'आ बेटा, भीतर आ।'

हुनका शब्द पर विश्वासे नहि भऽ रहल छल। बाबूजी नहि जान्हि कतेको बर्षक बाद बेटा कहने रहन्हि। ओ जा कऽ हुनका आगामे बैसि रहलाह। ई एकटा साधारण घटना कतहुँ नहि छल।

'कखन अएलएँ ?'

'जी, एक डेढ़ घण्टा पहिने......।' ओ बात करैत स्वयंकेँ असहज अनुभव कऽ रहल रहथि।

'पेट कोना रहैत छौक, आइ काल्हि ?'

अत्यधिक आश्चर्य। हुनका लागल जेना ओ कोनो सपना देखि रहल होइथ। बाबूजी हुनकर स्वास्थ्यक बारेमे पुछि रहल छथि। पेटक रोगी ओ बच्चेसँ छलथि। ओ बहुत सम्हरलाक बाद बजला, 'जी ....आइ काल्हि ठीक अछि।'

'चल बढ़िया। आओर सभ ....?'

'जी सभ किछु ठीके अछि।'

'कनियाँ आ साक्षी बेटी ?'

'जी ....दुनू ठीक अछि,' ओ आँखि फारिकऽ एहि सत्य पर विश्वास करएकेँ कोशिस करैत बजला।

बाबूजी किछु देरक लेल चुप भऽ गेलथि। माँ जलपान बना कऽ लौने छलीह। जलपान बीचमे राखि कऽ बाबूजीक बगलमे बैसि रहलीह। बाबूजी चाह उठबैत बजला, 'तो केहन होइत जा रहल छैं दिनप्रतिदिन ? जेना ४५ सालक अधेड़ हुए। केश एतेक उज्जर होइत जा रहल छौ आ पेट ....? एना लगैत अछि जेना हलुवाई हुए। देखैत छियैक सुनिता ? हमरा लागाओल मर्निङ्गवाकक आदत अपनौने रहति तऽ आइ ३५क उमेरमे ५४ कैं नहि लगैत ....कनी स्वास्थ्यकेँ सेहो ध्यान राख बेटा।'

ओ बिहुँसए लगलाह । बाबूजी सेहो बिहुँस रहल छलाह । माँ दुनूकेँ एहि प्रकार बात करैत देखि प्रशन्न छलीह । ओ किछु देरमे उठि कऽ किचेनमे चलि गेलीह ।

'एखन रहबएँ ने किछु दिन ?' बाबूजी खोज खबरिकेँ हिसाबसँ पुछलन्हि ।

'जी मात्र एक दिनक काज टिभीकेँ अछि ....काल्हि साँझमे चलि जाएब ।'

बाबूजी किछुदेर धरि हुनका देखैत रहला, फेर आवाज उच्च करैत माँसँ कहलन्हि, 'सुनिता हमरा तरकारी दऽ दिअ। मुहँ धोलाकेँ बाद तरकारी काटि देब आ अहाँ आटाँ सानि लेब ।'

ओ मुहँ धोबए बाथरुममे चलि गेलथि। हुनका बाबूजीसँ भेटि कऽ, हुनकर ई रुप देखि कऽ आश्चर्य मिश्रित प्रशन्नता भेल छल। मुदा पता नहि किए एकटा आओर आश्चर्यजनक भावना मोनमे घुमड़ि रहल छल । उदासी, निराशा, तामस, आत्मग्लानी वा एहिमेसँ कोनो भावनासँ मिश्रित कोनो नव भावना जेकरा पहिचानलाक कारण ओ कोनो संज्ञा देबएमे असमर्थ छलथि। ई भावना हुनक प्रशन्नताकेँ रोकि रहल छल। एहिमे एतेक प्रशन्नता होबएबला बातो नहि । सत्य तऽ इहे छल बाबूजीक ओ रुप शुरुसँ देखैत अबैत रहथि, ओहिमे एक सय अस्सी अंशक परिर्वतन हुनका बहुत बढ़िया नहि लागि रहल छल। ओ शुरुएसँ एकटा तानाशाह जेकाँ रहल छलथि । हुनका एहि प्रकारे हँस्सी कऽ, हुनक बराबरीमे बैसि कऽ बात करब बढ़िया नहि लागि रहल रहिन्ह । ओ माँकेँ काजमे सेहो हाथ बटाबए लागल छलथि । हुनकर दृष्टि निश्चते बदलल अछि, मुदा किए ? ओ सहीमे माँकेँ सहायता करए चाहैत छथि वा हुनका डर छन्हि माँ सेहो हुनका हुनकर बेटा जेकाँ असगरे नहि छोड़ि दैथि ? बाबूजी मुहँ धो कऽ आबि गेल छलाह। शोफा पर बैसि कऽ ओ अखबार उठौलन्हि आ कुर्ताक जेबमेसँ चश्मा निकालि कऽ लगा लेलन्हि आ बढ़िया जेकाँ अखबारक पन्ना पलटेए लगला। ओ आश्चर्यमे छलाह। हुनकर माथ जेना चकराए लागल छल।

बाबूजी हुनकर चश्मा लगौने छथि। वएह चश्मा, जाहि तरहक चश्मासँ हुनका बहुत चीढ़ रहन्हि।

जखन एकबेर ओ अपन पावरकेँ सीसा नव फ्रेममे लगा कऽ अनने रहथि तऽ बाबूजी बहुत तमसाएल छलथि।

'ई सिनेमा फैसनबला चश्मा पहिरबएँ तो ? एतेक छोट–छोट सीसा जाहिमेसँ आँखि बाहर तकैत रहैत अछि ? उठा कऽ बाहर फेकि एकरा। जा कऽ बड़का सीसाबला चश्मा आनि लए जे सभ्य लागए, चश्मा जेकाँ। जेना विद्यार्थी लगबैत अछि....,' बाबूजी कड़ैक कऽ बाजल रहथि। आ सहीमे डेरा कऽ ओ चश्माकेँ नुका देने रहथि आ दोसर चश्मा आनि लेने रहथि। बादमे ओ एहि तरहक चश्मा बाबूजीक आगा नहि लगौने छलथि। ई चश्मा ओ गल्तीसँ छोड़ि गेल रहथि जखन अगिला बेर आएल रहथि तऽ।

'बाबूजी, ई चश्मा ....?' ओ किछु नहि बुझए पाबएकेँ स्थितिमे रहथि, बहुत परेशान आ बहुत कन्फ्युज्ड।

'हँ ई तऽ तोरे छौक,' बाबूजी चश्मा निकालि कऽ एकबेर देखला आ फेर लगा लेलन्हि।

'अहाँ बला ....?'

'ओ ? ओ तऽ अलमारी पर राखल छैक। हमरा लगैत अछि ओहिसँ एहिमे साफ देखाइत अछि।'

'हँ ....।' ओ फेर चकित छलथि।

'तो फ्रेस त्रेस भऽ जो फेर सँगे खाएब, 'बाबूजी फेर अखबार पढ़ए लगलथि।

ओ बेचयन भऽ गेला आ उठि कऽ टहलए लगलथि। बाबूजीसँ एहि तरहक मित्रवत व्यवहारकेँ नहि ओ कहिओ अभिलाषा रखने रहथि आ नहि हुनका बढ़िया लागि रहल छलन्हि। एकटा चट्टानकेँ एहि प्रकारे धसब, एकटा पहाड़केँ झुकि जाएब हुनका अखरि रहल छल। जे कहिओ ककरो आगा नहि झुकला, भगवानक आगा सेहो नहि, आइ ओ एतेक नरम भऽ

गेल छथि। पूरे परिवारकेँ, पूरे अनुशासन आ कठोरतासँ नेतृत्व करएबला सम्राट आइ स्वयं हारि गेल छथि। एहि सम्झौताक लेल हुनका केँ विवश कएलक, हुनकर सन्ताने तऽ। एतेक असुरक्षित स्वयंकेँ ओ अपन बेटेक कारणसँ अनुभव कएलन्हि अछि। ओ लगातार अपराधबोधमे धसैत जा रहल छथि।

टहलथि ओ अलमारीक लग गेलाह आ बाबूजीक पुरान चश्मा उठा कऽ देखए लगलाह। ओ चश्मा लगेलाक बाद हुनका लागल जेना हुनको ई पहिरला पर पहिनेसँ साफ देखा रहल छल हुनकर स्वयंकेँ चश्मासँ बेसी साफ। किछु देरधरि ओ चश्मा लगौने घुमैत रहला आ फेर आबि कऽ बाबूजीक आगा बैसि रहलाह।

'एहि बेर प्रमिला आ साक्षीकेँ लऽ कऽ आएब बाबूजी,' चश्मा हुनका एकदम फिट लागल छल।

'हँ बेटा, एहिबेर छुट्टी किछु बेसीए दिन निकालि कऽ अबिहएँ,' बाबूजी अखबार पढ़ैत बजला।

भानस घरसँ कचरीक सुगन्ध आबि रहल छल। सायद माँके हाथक कचरी दुनूके अपना दिस तानएकेँ प्रयास कऽ रहल छल।



संसारक रीत

सखीसभ पयर हाथमे अलता लगा देलीह। हम सिन्दुरसँ सीत भरि लेलहुँ। हमरा गहनासँ लादि देल गेल आ हम कनियाँ बनि गेलहुँ। आँगनमे महिलासभ गीत गाबि रहल छलीह। ई गीतसभ हमर हृदयमे सूर्यक किरण जेकाँ चमकि-चमकि कऽ उतरि रहल छल। सत्य ई छल जे हम बहुत प्रशन्न रही। सिंगार भऽ गेल तऽ सखीमेसँ किओ आवाज देलक, 'किओ जा कऽ बाहर कहि दौक कनियाँ तैयार भऽ गेल जिनका सुन्दर मुहँ देखबाक होइक ओ भीतर आबि जाए।'

सखीक बातमे हँस्सी मजाक भाव सेहो छल। हमर मुहँ लाज आ प्रशन्नतासँ लाल भऽ गेल। नहि जाइन कतेको महिला हमर चानसन चेहरा देखलीह, चुमाओन कएलीह, आशिर्वाद देलीह आ रुमसँ बाहर निकलि गेलीह। अन्तमे रुममे पयरक उदास चाप उभरल। बुढ़ हात हमर घोघकेँ उपर उठौलक, हमर श्वास रुकि गेल, ई तऽ माय अछि।

माय, हमर प्रिय माय ....! हमर मुहँसँ कतेको शब्द प्रेम बनि कऽ उभरल मुदा हमरा लागल नोरक आगा हम बेबस छी। हम एकटक ओकरा देखैत रहि गेलहुँ। ई एतेक बुढ़ कोना भऽ गेल ? चेहरा पर दुःखक छाप किए अछि ? आँखि एतेक किए धैसि गेल अछि ? हमर हृदयमे ककरो

आवाज आएल, 'ई तोहि छ्एँ जेकरा पालि पोसि कऽ बड़का कएलहुँ राति कऽ जागि-जागि कऽ सुतेलिऔक स्वयं भुखल रहि कऽ तोरा पेट भड़लिऔक, अपन आरामकेँ आराम नहि बुझि दुःखकेँ दुःख नहि बुझि, पूरे २२ वर्ष अपन खुशी, अपन श्वास, अपन अनुभवकेँ तोरा पर न्योछावर कएलिऔ आ आइ तो एकटा दोसरकेँ घर बसाबए जा रहल छ्एँ की एही दिनक लेल माय कठोर यातना सहैत अछि।'

एकटा महिलाक आवाज आएल, 'कानू नहि बहिन ई तऽ संसारक रीत अछि, लड़कीकेँ पालू पोसू आ दोसरकेँ दऽ दिअ।'

शायद इहे स्वरमे किओ मायकेँ सांतवना दऽ रहल छल। मुदा सांतवना एहन छल जाहिमे कनाबहेकेँ क्षमता बेसी देखाई दऽ रहल छल।

मायक स्थिरे-स्थिरक सिसकी आब कोनो रोकाबटकेँ उच्च भऽ रहल छल आ घर पूरा पूर विचलित कऽ रहल छल।

पिया मिलनक रंगीन आ प्रेमपूर्ण अभिलाषा हमर आँखिसँ नोर बनि कऽ बहि रहल छल। हम बिसरि गेलहुं जे हम सिंगार एहि लेल कएने छलहुँ, ककरो संसारमे प्रशन्नता भरि देब। आब हम ई स्मरण कऽ सिसैकि रहल छलहुं जे बुढ़ आँखिमे नोर दऽ कऽ जा रहल छी। ई अनुभव हमर हृदयकेँ मसोरि कऽ राखि देने छल। हम जे कदम उठाएब ओ जमीन पर नहि, मायक टुटल टुक्रा पर पड़त।

मायद्वारा उठाओल गेल हरेक कठिनाई, हरेक दुःख, हरेक क्षण भगजोगनी जेकाँ चमकैत हमर कल्पनाक आँखिक आगासँ घुमए लागल। हमर अस्तित्व नोरसँ बहए लागल, मुदा मजगुत हाथ हमर कन्हा पकैड़ि कऽ छातीसँ लगा लेलक, 'कानु नहि माधुरी एहि दिनक लेल तऽ हम जीब रहल छलहुं, अहाँकेँ अपन घर जाइत देखि सकी। एकटा मायकेँ एहिसँ बड़का आओर की इच्छा भऽ सकैत अछि ओकर बच्चाकेँ घर बैसि जाए।' 'हम बहुत प्रशन्न छी बेटी, तोरा ई सुख प्राप्त भऽ रहल छौक,' शब्द सिसकी बीच टुटि रहल छल। मुदा ओ हमर धैर्यताक लेल कहि रहल छल।

'तो ई नहि बुझ हम तोरासँ छुटि गेल छिऔक। माँ बेटीक सम्बन्ध कोना समाप्त भऽ सकैत अछि। ई घर एखनो तोहर छौक जखन मोन हौक चलि आ।'

ओ नहि जानि की-की कहैत रहल मात्र हमरा एतेक स्मरण अछि जे हम चिचिआ कऽ ओकरा लेपटा लेलहुँ, 'माय हम तोरा बीना नहि रहि सकैत छिऔक। हम कतहुँ नहि जएबौक, हमरा अपना लग रहए दे माय।'

समय हरेक घाउकेँ भरि दैत अछि। आश्चर्य भेल द्विरागमनक समय हम कोना जोड़सँ कानल रही। हमरा विश्वास छल, मायकेँ बीना एक क्षण सेहो नहि बीता सकैत छी। आब एतए १५ दिन बीत गेल आ मायकेँ स्मरणो नहि कएलहुँ, ई सोचिते हम स्वयंकेँ दोषी अनुभव करए लगलहुँ। कण्ठमे एकटा गोला आबि कऽ फैसि गेल। हम मोन बहलाबए चाहलहुँ मुदा नहि बहलल। हमरा उदास देखि ओहि साँझ ओ हमरा घुमाबए शहरसँ दूर लऽ गेलथि आ हम बिसरि गेलहुँ कतेक उदास छलहुँ। पार्कमे फुल फुलाएल छल मुहँबन्द चिड़ैसभ झुलि रहल छल। पूरे माहौलमे सुगन्ध आ प्रशन्नता भड़ल छल। एहन क्षणमे केँ दुःखक गीत गाबि कऽ बैसत ?

एक महिनाक बाद मायकेँ एकटा चिठ्ठी आएल हमर कुशलता पुछने छल। चिठ्ठी नहि लिखएकेँ लेल कनि शिकायत कएने छल। ओ इहो अनुभव नहि होबए देलक हमर आभाव खटैकि रहल छैक। मुदा चिठ्ठीक अन्तिममे ओ स्वयंपर नियन्त्रण नहि राखि सकल। ओकर धैर्यक बान्ह टुटि गेल। '...बेटी जानकीजी तोरा खुश राखौक। अपन बात की लिखिऔक ई लगैत अछि अपन प्रिय चीज हेरा गेल अछि। हृदयमे स्थायी बिकलता अछि मुदा तो चिन्ता नहि कर....अपन जीवनकेँ बढ़िया बनो।'

चिठ्ठी हाथमे लऽ हम कतेको देर बैसल रहलहुँ किछु बुझएमे नहि आबि रहल छल की करु ? एकबेर तऽ निश्चय कऽ लेलहुँ सभ छोड़िकऽ

नैहरि चलि जाउ मुदा ओहि क्षण अनुभव भेल जे २२ बर्षक तुलनाक ई सम्बन्ध बेसी मजगुत सावित भऽ रहल अछि। जाएकँ मोने नहि भेल। हमरा स्वयंपर तामस आएल जे किओ अपन मायकँ एतेक जल्दी बिसरि सकैत अछि ? हम कानए लगलहुँ।

हमर कानएकेँ आवाज सुनि कऽ ओ बाहरसँ भीतर अएलाह। हमरा लग आबिकऽ बजला, 'अहाँ कनैत छी ? की बात अछि,' फेर हमर हाथमे नोरसँ भीजल चिठ्ठी देखि कऽ बजला, 'ओ ई तँ माँजीकेँ चिठ्ठी अछि। एहिमे कानएकेँ की बात भेल। माँजीसँ भेटएकेँ मोन अछि, चलू ओतए पहुँचा दैत छी। आठ दश दिन रहि कऽ चलि आएब।'

हमरा मुहँसँ नहि, हँ निकलल आने नहि अस्वीकार कऽ सकलहुँ ओ हमर सामान बन्हलन्हि आ भाइसँग बस स्टेण्ड पहुँचा देलाह। हम अपन दिअरसँग विदाह भऽ गेलहुँ।

नहि-नहि हम नहि जाएब। हम अहाँक बीना एक दिन नहि काँटि सकैत छी, हम चिचिआकऽ कहएके प्रयास कएलहुँ मुदा एहि तरहक शब्द हमर ठोरसँ बाहर नहि निकलल। एतबए बेसी छल जे ओ हमर पूरे धैर्य लुटि लेलन्हि,' अहाँ जा रहल छी ....आब हमरा मेहदी भड़ल हाथसँ सुन्दरसन पान के खुआओत ?'

हृदय टुटएकेँ आवाज होइत तऽ ओहि आवाजसँ शायद संसारक कान फाटि जाइत मुदा आश्चर्य जे हृदय भीतरे-भीतर टुटल आ ककरो आवाज धरि नहि आएल। हमर नोर, हमर मुहँ धो देलक ....।

बस धीरे-धीरे बढ़ए लागल, जेना हमरे जेकाँ ओकरो मोन आगा जाएकेँ पक्षमे नहि छल ....।

नैहरिमे दिन एना बीत रहल छल, जेना जीवनमे किछु बाँकीए नहि रहि गेल अछि। जीवन डाकक आवाज पर निर्भर रहि गेल छल। कोनो काजमे मोने नहि लगैत छल। बातो करएकेँ मोन नहि करैत छल। भोजन धरिसँ घृणा भऽ गेल छल।

हृदय हरेक क्षण कहैत छल, 'पाँखि लागि जाए आ हम उड़ि जाइ।'

एकदिन काकी एलीह तऽ हमरा एकटा अलग रहस्यक पता चलल। काकी बजलीह, 'बेटी एना उदास रहब तऽ स्वास्थ्य कोना बढ़िया रहतह ? तो तऽ मात्र पतिकेँ भऽ कऽ रहि गेल छह। बिसरि गेल छअ कहिओ तो एहि घरक सदस्य छलह।'

हम हाँसि कऽ टारए चाहलहुँ मुदा ओ कहैत रहलीह, 'जानकीजी चाहतह तऽ तोहू माँ बनबह आ तोड़ा पता चलतह जे सन्तानक दूरी की होइत अछि। बेटीकेँ सभ दिन बैसा कऽ नहि राखि सकबह। अपन माय दिस देखऽ केहन भऽ गेल छथि ?'

हमरा बुझएमे किछु नहि आबि रहल छल, काकी कहए की चाहैत छथि ? मायकेँ उदासी आ स्वास्थ्यक खराबीमे हमर की हाथ अछि ? हम प्रश्नवाचक ढंगसँ देखलहुँ। ओ कहि रहल छलीह, 'सासुरमे तऽ आब तोड़ा सभ दिन रहबाक छह, किछु दिनक लेल एतए आएल छह तऽ प्रशन्न रहअ नहि तऽ माँकेँ कतेक दुःख पहुँचतह....।'

हम लज्जित भऽ कऽ स्वीकार कएलहुँ, 'की करु काकी मोन एतेक सुस्त भऽ गेल अछि, कोनो काज करएकेँ मोने नहि होइत अछि।'

ओ बिहुँसली, 'पहिल बेर माय बनए जा रहल छह, एहिद्वारे एना भऽ रहल छह। सम्हारह स्वयंकेँ, नहि तऽ तोहर पतिकेँ शिकायत हेतह जे हुनकर कनियाँकेँ हमसभ बेमार कऽ देलहुँ।'

जीवन बहार बनि कऽ जहिना हमरा कोरामे लऽ लेने छल। हम माय बनि रहल छी, हम बहुत अविश्वसनीय मुद्रामे सोचलहुँ। प्रशन्नता लाज आ गर्वक मिलल जुलल भावनासँ हमर हृदय भड़ि गेल। मुदा फेर भय आबि कऽ पकड़ि लेलक, लड़की भेल तऽ ? की ओहो हमरा छोड़ि कऽ चलि जाएत मुदा हृदयमे एकटा बात आएल ई तऽ संसारक परम्परा अछि। एहिना होइत अछि, एककेँ स्थान दोसर लैत अछि। एहिमे डेराएकेँ कोन बात....?

किछु दिन नैहरिमे बितेलाकबाद सासुर चलि अएलहुँ । दिन जेना पाँखि बनि कऽ उड़ए लागल । २४ घण्टाक इहे दिनराति नैहरिमे कतेक अबेरसँ बितैत छल आ एतए इहे २४ घण्टा चमकैत भगजोगनी जेकाँ उतरि जाइत अछि । आओरकेँ तऽ छोड़ू, हम तऽ स्वयंकेँ बिसरि गेल छी । मायकेँ चिठ्ठी अबैत रहल । जाहि दिन चिठ्ठी आबए किछु क्षणक लेल हृदयमे गरए मुदा एकटा बुढ़ जीवन हमरा जीजानसँ स्मरण कऽ रहल छल आ हम कोन उचाईकेँ आशामे हेराएल रहैत छी । हम घबराइत प्रार्थना करए लगैत छी, 'हे भगवती हमरा लड़की नहि चाही, जे हमरा छोड़ि कऽ चलि जाए आ फेर बिसरि जाए । हम दूरी नहि सहि पाएब एहिद्वारे हमरा बेटी नहि देब ।'

किछु महिना बीतलाक बाद माय हमरा फेर बजौलक एहिबेर ओहो हमरासँग छलाह । हमरा हुनकर सामिप्य आ सँग चाहैत छल । आब हम किए उदास रहितहुँ ? माय हमर रेखदेखमे कोनो कसर नहि छोड़लक । शहरक सभसँ कुशल गाइनोक्लोजिष्टसँ देखौलक । चलैत फिरैत, उठैत बैसैत, सुतैत जगैत ओ हमरा निहारैत रहैत छल आ ई प्रार्थना जेना ओकर जीवनकेँ अंग बनि कऽ रहि गेल छल । भगवती एकरा कुशलताकसँग एकटा बेटा देब...., शायद ओहो ई कथाकेँ दोहराबएकेँ देखए नहि चाहैत छल ।

किछु दिन आओर बीतल हमरा अस्पताल लऽ जाएल गेल । ओ गेटक बाहर चिन्तित भऽ ठाढ़ छलाह । माय माथ लग ठाढ़ भऽ प्रार्थना कऽ रहल छल नहि जानि कतहुँसँ एकटा आवाज आएल हमरा पयरक नीचा स्वर्गक निर्माणक समाचार सुनाएल । माय आगा बढ़ल । नर्ससभ बाजल, 'बेटी भेल अछि, बधाई हो ।'

माय हमरा पलैट कऽ देखलक विचित्र भय हमरा दबा लेलक । ई माय जे आइ एहि तरहे असहाय भऽ हमर आगा ठाढ़ अछि जे अपन चयन खुशी आ पूरे जीवन हमरा दऽ देलक समय फेर ओहि कथाकेँ दोहराओत की ?

आबएबला बर्ष ओहि तरहे हमर जीवनकेँ रस निचोड़ि लेत ? हम सोचलहुँ ....की हमर बेटी हमरे पद चिन्ह पर चलत, हृदयसँ नोरक बादलसन उठल ....नोर आँखिसँ बहएकेँ लेल शुरुए कएने छल की नर्स बेटीकेँ हमरा बगलमे सुता देलक। हम ओकर मोहनी मुहँ देखलहुँ, धड़कैत हृदयकेँ शान्ति भेटल ई कोन नव बात अछि! ई तऽ संसारक रीत अछि ...., हम स्वयंकेँ धैर्य बान्हलहुँ आ छोटसन जानकेँ छातीसँ लगा लेलहुँ।



गाम घूरला पर

बस एकाएक रुकलासँ आँखि खुजि गेलन्हि । ओह ! किछुए देर पहिने तऽ आँखि लागल छल । रातिभरि सुतिनहि सकल छलहुँ । बगलबला टोकलन्हि, हुनका निन्द नहि आबि रहल छल । बाबूजीके गेलाक बाद ओ पहिलबेर गाम जा रहल छलाह ।

खिड़कीसँ तकलन्हि, बर्दिवास एतेक जल्दि ! लगैत अछि बहुतदेरधरि सुति रहल छलहुँ । एतएसँ आधा घण्टाक दुरी अछि । गाम आबएसँ पहिने ढल्केवरमे उतरब आ ओतएसँ गाम जाएब । ढल्केवर अबिते दोकानसभपर नजरि दौरौलन्हि, दश बर्षमे बहुत किछु बदलि गेल अछि । सुनिल इलेक्ट्रोनिक्स, धनकुटे होटल, प्रीति फैन्सी स्टोर्स ...., मात्र एसटीडी बुथक स्थानपर साइबर क्याफे भऽ गेल अछि । पूरा इलाकामे एकटा एसटीडी बुथ भेलाक कारण एतए भीड़ रहैत छल । बाबूजी एतहिसँ टेलिफोन करैत छलथि । अन्तिमबेर सेहो एतहिसँ टेलिफोन कएने रहथि । 'काकाक लड़का दलानपर लतामक गाछ लगौलन्हि अछि, किछु कहिओ तऽ झगड़ैत अछि । कहैत अछि जे घरपर कब्जा नहि कऽ रहल छी । तों एबे तऽ बाउण्ड्रीवाल दऽ देब, तखने घरदुआर बचत,' ओ तमसा कऽ बाजल छलथि ।

बाबूजी बीतल पाँच बर्षसँ बाउण्ड्रीवाल देबाक रट लगौने छलथि। ५०/६० हजारक खर्च हएत, कहाँसँ आएत एतेक ?

'एतेक दिनसँ नोकरी कऽ रहल छैं ! एतबो पैसा नहि छौक ?' बाबूजी कनी तमसा कऽ बजलथि।

'खर्च सेहो अछि ने, मानस आ तुसीक पढ़ाइ आ विवाह। ई आवश्यक अछि वा बाउण्ड्रीवाल देब।'

'घर सेहो आवश्यक अछि बेटा, लापरबाही देखेबए तऽ लोक उखारि फेकतहुँ। पूर्खाक जमिन किओ ओहिना थोरेहे छोड़ि दैत छैक ?' बाबूजी विवशतासँग बजला।

'काका सेहो तऽ अपने छथि। कनिक जमीनक लेल हजारो रुपैया खर्च करु ? हम तऽ कहैत छी अहुँ एतए चलि आउ मुदा अहाँक मोन तऽ गामेमे रहैत अछि। अहाँक गेलाकबाद किओ लताम लगावे, वा लिची, हम देखए नहि आएब...'

बात समाप्त केनहो नहि छलथि की ओ फोन काटि देलन्हि।

किछुदेर मोन तिक्त रहलन्हि। बाबूजी मजबुरी नहि बुझैत छथि। ओना ओ अपन स्थानपर सही छथि। बुझैत छथि बाबूजी दुःखित हेता मुदा हुनकर आगा घरक चिन्ता अछि, ई बात बाबूजीके कोना बुझोता। ....काका बाबूजीसँ बहुत छोट छलथि। हुनकर पढ़ाइ, विवाह, नोकरी......सभ किछु बाबूजी कएलथि। जमीन बेच कऽ नोकरी लगौलन्हि। आब जमीनक लेल लड़ाइ झगड़ा चलि रहल अछि। गाममे तऽ बाबूजीक हरेक बात सही लगैत छलन्हि, एहि दुआरे नहि की ओ बाबूजी छलथि, एहि दुआरे ओ सही छलाह। काका बड़का हिस्सापर कब्जा कएने रहथि। बाबूजीके लग दूटा रुम आ आधा आँगन छल। पाहुन अबिते समस्या होइत छल। फेर माटिक पुरनका घर खसल। जमीनक बटबारा भेल तऽ बाबूजी घर बनौलन्हि। एहिमे सभ जम्मा कएल पैसा खर्च भऽ गेल। माँ प्रशन्न छल मुदा वेमार रहए लागल। पैसा समाप्त भऽ गेल छल, एकदिन ओहो चलि गेल।

तहिआधरि ओ ग्रेजुएशन कऽ लेने छलथि। बाबूजी चाहैत छलथि, गामेक स्कुलमे पढ़ावी। खेतीबारी सेहो चलैत रहए, पैसा सेहो अबैत रहए। एतहिसँ बाबूजीसँग बैचारिक मतभेद शुरु भेलन्हि। माँके मरलाक बाद पैसाक मूल्य पता चलि गेल छल। खेतीसँ तऽ खाधपानि राखएधरिके पैसा नहि उठैत छल। ओ पढ़ाईक सँग खेतमे काज करैत छलथि, मुदा बहुत मुस्किलसँ सातआठ महिना अनाज जुटैत छल। बाँकी दिन हात तंगे रहैत छल।

फेर शहर आबि गेला। समयक चक्र हुनका गामसँ अलग कऽ देलक। ढल्केवरसँ बाबूजी जाहि दिन टेलिफोन कएलन्हि, ओकर दू दिनक बादे काकाक फोन आएल छल, बाबूजी नहि रहलथि। ओहिदिन टेलिफोन कऽ घर घूरल रहथि तऽ बोखार भऽ गेल रहन्हि। गर्मीसँ लू लागि गेल रहन्हि। ओ सन्न रहि गेलथि। बाबूजीके लू लागि गेल रहन्हि वा ओ अपन बातसँ ठेस पहुँचौने रहथि !

ढल्केवरमे चाह पिलाक बाद उतरल यात्री बसमे चढ़ए लागल छल, चालक सीटपर बैसि रहल छल,हुनकर नजरि फेर एसटीडी बुथ खोजए लागल एना लागि रहल छल, बुथके नहि बाबूजीके हटाओल गेल अछि। निधनके बाद सेहो एतए जीबित छलथि, बुथ हटा कऽ हुनका मारि देल गेल अछि,ओ रुमालसँ आँखि पोछि लेलथि।

काकाक बेटा नरेन्द्र हुनका लेबए आबएबला छल, मुदा बहुत देरधरि किओ नहि देखाएल। ओ बाबूजीक परम मित्र पल्टनक दोकानपर चलि गेलथि। पल्टन हुनका देखिते तराजु छोड़ि भरि पाँजकऽ पजिआ लेलक। बाबूजी चलि गेलह आ तोँ हमरा सभके बिसरि गेलह.......दश बर्ष भऽ गेलह तोहर दर्शन भेला।

पल्टनसँ गला मिललाकबाद लगलन्हि बाबूजीसँ गला मिलल छी। बाबूजी जीबित रहैत तऽ ओ कहिओ पल्टनसँ गला नहि मिलल रहथि। बाबूजी कहिओ अबैत जाइथ, किछु समयक लेल पल्टनक दोकानपर

अवश्य बैसथि छलथि। पल्टन सुनाबए लगलथि, कोना साइकिल चला कऽ अबैत छलथि भेटि करए। दोकानपर एलाक बाद ओ एहिठामसँ दही लऽ जाइत छलथि। निधनसँ दू दिन पहिने जखन बाबूजी थाकलसन लागल छलथि, हुनका तखने लागि गेल छल कोनो अशुभ होबएबला अछि।

बाबूजीक चर्चा भावुक बना देने रहन्हि। प्रसंग बदलि ओ बजलथि, 'काका ढल्केवरक एसटीडी साइबर क्याफेमे बदलि गेल अछि।'

'हँ बौआ, मोबाइलक जवानामे एसटीडी पिसिओके की आवश्यकता ?'

पल्टनक दोकानपर बैसल बहुत अबेर भऽ गेल छल। श्राद्धक बाद ओ खेत काकाकेँ उब्जाबए लेल दऽ देने छलथि। कनियाँ सम्झौने रहन्हि जे आब अपनहिकेँ भरोसामे खेत खरिहान आ घर अछि। साँझवाती दऽ देब।

'हँ बौआसिन हमरे घर अछि ने अहाँसभ जे सोचू हमरा मोनमे कोनो प्रकारक द्वेष नहि अछि......., समय-समयक बात अछि अहाँक ससुर हमरा एतए चलए धरि नहि दैत छलथि मुदा अहाँसभ हमरासभ चीज दऽ कऽ जा रहल छी। हुनकर आत्मा तऽ नहि कल्पत ?' कहैत काकी व्यङ्गमे हँसलथि।

कनियाँ अवसरकेँ ध्यानमे रखैत कहलीह, 'काकी पुरान बात विसरि जाउ अहिँकेँ बच्चा छी हमसभ, ई घर तऽ अहिँकेँ अछि।'

'बौआसिन हम अहाँकेँ कहिओ दोसर थोरहे बुझलहुँ.....,' कहैत काकी हुनका भरि पाँज कऽ पजिआ लेलीह।

बाटभरि ओ अपसोच करैत रहलीह जे काका काकीकेँ बातक जवाव किए नहि देलीह फेर शहर अएलाक बाद गाम विसरि गेल रहथि।

बाबूजीकेँ गाम घुरएकेँ आग्रह हुनका कखन बुझएमे आएल जखन हुनकर बेटा कमाए लेल विदेश चलि गेल आ ओ ओतहि रहएकेँ मोन बना लेलक। बेटी सासुर चलि गेल छल। रिटायर भऽ गेला। कनियाँकेँ होइतो बहुत असगरे बुझाति छलन्हि। बच्चाकेँ सामीप्य खोजैत-खोजैत

ओ बाबूजीक नजदिक जा रहल छला। धीरे-धीरे बाबूजी बनैत जा रहल छला। बाबूजीकेँ बीतला १० बर्ष भऽ गेल छल। श्राद्धक बाद गाम नहि जा सकल छलाह। काका काकी आ हुनक बच्चा सेहो कहिओ गाम आबएकेँ आमन्त्रण नहि कएने छल।

.....सोचक कड़ी टुटल। एकाएक ओ उठला। बैग हाथमे टंगलन्हि। हुनका उठिते पल्टन ग्राहककेँ छोड़िकऽ आबि गेलाह, 'बेटा हम पहुँचा देबह ....।'

'अहाँ दोकान देखू, काका हम चलि जाएब।'

'फिरन साइकिल निकाल बौआ, हम भैयाकेँ पहुँचा कऽ अबैत छिऔ ...तो ताधरि दोकान सम्हार।'

दुनू बढ़ि गेलथि गाम दिस। घर पहुँचलाक बाद काकाकेँ आवाज देलन्हि।

काकी बाहर निकलली, 'सुरज तो चलि अलए नरेन्द्र लाबए लेल ढल्केवर जाएबला छलह। देखहक ने एखनधरि सुतले छैक।'

'कोनो बात नहि काकी, पल्टन काका छलाह तँ समस्या नहि भेल, 'ओ बात सम्हारि लेलन्हि।

गाम आबएकेँ जे उत्साह छल, तिरोहित भऽ गेल छल। बाबूजी छलाह तऽ एहन अवस्था कहिओ नहि होइत छल। ओ घर दिस नजरि दौड़ेला पूरे खालीपन आँखिसँ होइत हृदयमे उतरि आएल छल। एतेक उजार, घरक आगा एतेक खाली स्थान कहिओ नहि छल। स्मरण एलन्हि बड़हरक गाछ। एकदम जोड़सँ चिचिएला, 'काका बड़हरक गाछ की भेल ?'

'हँ बेटा, कटाबए पड़ल'।

'मुदा किए ?'

'गाछक छाँहक कारण ओहिठाम किछु नहि उबजैत छल।'

'एतेक बड़का अहाँक दलान अछि, ओ की कम छल ?......अहाँकेँ बुझल नहि छल जे गाछ बाबूजी लगबौने रहथि ?'नहि चाहैत, हुनकर

आवाजमे उग्रता आबि गेल छल। बच्चा जेकाँ पालने पोषने छलथि बड़हरक गाछकेँ। हम शहर आबि गेल छलहुँ तऽ वएह गाछमे बेटाक चेहरा देखैत छलथि। गर्मीक समयमे वेरियामे जखन ओ गाछक नीचामे खाट बिछा कऽ आराम करैत छलाह तऽ चेहरापर तृप्त भाव उभरैत रहन्हि। गाछ बाबूजीक लेल बहुत मुल्यवान छल, मुदा ओ कतएसँ बुझिपेता ! गाछ घरक मुख्य दलानक आगामे छल। घरसँ मूलद्वार धरि प्रत्येक दिन डेग नपैत छलथि। ओ बड़हरबला स्थानपर किछु ईटा रखने छलथि। एक दिन बाजल छलथि जे एतए एकटा आमक गाछ लगाएब।

पल्टन काकाके बिदा करैत जखन घरक भीतर गेलाह। एकटा रुममे काकाक घरक अनाप सनाप सामान भड़ल छल, माँ बाबूजीक बक्सा पेटी गायव छल। बाबूजीक रुममे भूस्सा देखि ओ आगिबबूला भऽ गेलाह। काका दिस तकला तऽ ओ बजलथि, 'घर खाली छल तेँ भूस्सा रखबा देने छलहुँ। एहि बहाने एहिठाम आएब-जाएब बनल रहत।'

काकाक बातकेँ नजरअन्दाज करैत ओ आंगनदिस बढ़ि गेलथि। आंगनक देवालमे छोट-छोट छेद कएल गेल छल। जतएसँ काकाक घरक गन्दा पानि बहिकऽ आंगन होइत हुनका घरक नालीमे मिलैत छल।

'ई की अछि काका ?'

'बेटा बाहरकेँ नाली ओतए नजदिकेमे अछि, नरेन्द्र एतहिसँ पानिक निकास कऽ देलक।'

'काका ई अहाँक भायक घर छल। गन्दा पानि निकलैत समय किछु तऽ सोचितहुँ ?'

फेर ओ भूस्सासँ भड़ल बाबूजीक रुमक असोरा पर बैसि रहलाह। किछु देरमे मोन कोना-कोना करए लगलन्हि, मानू बाबूजी भूस्सामे दबल होइथ आ छटपटा रहल होइथ। हुनका कोना बचाओल जाए।

'की कऽ रहल छी बेटा ?'

'भूस्सा हटा रहल छी ......।'

'हम खाली करबा देब, अहाँ आराम करु,' काकाक स्वर स्थिर होइत जा रहल छल ।

'नहि एखने हटाएब एकरा.....,' ओ पथिआमे भूस्सा भरि-भरि कऽ बाहर राखए लगलथि तऽ नरेन्द्र दुनू भाइ सेहो हाथ बटाबए लागल । किछु घण्टामे रुम साफ भऽ गेल ।

भोजन बनलाक बाद काकी बजाबए अएलीह । हुनकर भुख मरि गेल छल, फेर बेमौनेसँ उठला आ भोजन करए लगला । काका–काकी सेहो स्तब्ध छलथि । खेत आ घरके ओ अपने मानि बैसल छलथि, अचानक हुनका सभके हातसँ निकलि रहल प्रतीत भऽ रहल छल ।

काकी भातक परसन दैत बजलीह, 'हम घरके साफ कराबए चाहैत छलहुँ मुदा किओ भेटिए नहि रहल छल । काका स्वयं कऽ लैतथि, मुदा बातरसक कारण हुनका उठबैसिमे समस्या होइत छल... । तो परिसान नहि हो बौआ, काल्हि हम सफाई कऽ देबह... । आब हमहुँ बेसी दिन थोरहे जिएब । जहिआधरि छी तहिआधरि साफ सुथुरा कऽ सकैत छी...। काका तऽ कहैत रहैत छह अपन खेत भलेही परते रहे मुदा भैयाक खेतमे बिया लगाओल जाए....।'

भोजन कएलाक बाद ओ सुति रहलथि । भोरे जल्दी उठि नहा धो कऽ तैयार भऽ गेला ।

'दू चारि दिन आओर रुकि जइतह बौआ, एतेक दिनक बाद तऽ एलह...,' काकी उपर मौनसँ बजलीह ।

'काकी, शायद काल्हिए चलि आएब । कनियाँके आनए जाइत छी, ओ हमरासँ पहिने चलि आएल छथि ओ एखन नैहिरमे छथि । एतए बड़हरक गाछ लगाबएके अछि, बाउण्ड्रीवाल देबएके अछि..... ।'

'...नरेन्द्र घरक आगाँ तो जे लतामक गाछ लगौने छह से काटिकऽ राखि लऽ ?'

'केहन बात करैत छी भैया ?'

'कोनो परेसानी नहि होउक ताहि दुआरे कहि रहल छियह। काकी एकटा ताला चाबी दऽ दिअ।'

'ताला किआ बन्द करबहक बेटा, तो कनियाँक लाबए गऽ, हम घरके सफा करा दैत छिअह। कनियाँ अबिते काममे लगा देबहक की, दू चारि दिनक लेल तऽ अबैत छथि ओहुँमे अशान्ति।'

'नहि काकी, हम रिटायर भऽ गेलहुँ। शहरमे हमरा लेल अछिए की ? आब गामेमे रहब।'

ताला बन्द कऽ चाबी ओ अपना जेबमे रखला आ एक नजरि अपन घर आ काका पर दौड़लन्हि। लगलन्हि, मानू बड़हरक गाछ फेरसँ हरिआ गेल हुए। गाछक निचा ठाढ़ बाबूजी बिहुँसि रहल होइथ....।



सम्बन्धक नदी

आई इन्दुके रहि-रहिकऽ मम्मी आ ओकराद्वारा बताओल गेल सम्बन्धक अर्थ स्मरण आबि रहल छलन्हि । शायद एहन कोनो कुटुम्ब नहि हएत, जिनकर अँगना इन्दु अपन आशाक दीपक नहि जरौने होइथि । मुदा लौ पकड़एसँ पहिने अस्वीकारक विहारिसँ दीपकके मिझाबएके अवस्था आबि जाइत छल । इन्दुके सभ कुटुम्बके अस्वीकृति आ बहानाक आगा खाली हात लौटए पड़लन्हि । मम्मी हरेक समय कहैत छलीह, सम्बन्ध कच्चा धागा जेकाँ होइत अछि । कनिक ओझराएल की सोझराएके साँती टुटि जाइत अछि । एहि दूआरे सम्बन्धके बहुत संजोगि कऽ राखल जाएबाक चाही, मुदा आई ई सभ बात इन्दुके निरर्थक लागि रहल छलन्हि ।

राहुलके हालत दिनप्रतिदिन बिगरैत जा रहल छन्हि । सभ जम्मा पूँजी खर्च भऽ गेल छल, सत्य कहल जाए तऽ जम्मा पूँजिए कतेक छल ? जखन कि राहुलके बढ़िया आम्दानी रहन्हि, मुदा आधुनिक जीवनशैलीक कारण बचत कोना होइत ? जे किछु भेल ओहो शेयरमे लागल छल, जखन की राहुल बुझैत रहथि शेयरके मामलामे हुनकार भाग्य बहुत बढ़िया नहि अछि । जहिआ-जहिआ शेयरमे पैसा लगेला, डुबि गेल मुदा लोभक कारण

स्वयंके नहि रोकि सकलथि । जे छोट-छोट फिक्स डिपोजिट छल ओ आब राहुलक इलाजमे खर्च भऽ रहल अछि ।

कर-कुटुम्ब इन्दुके सहयोगक नाम पर बहुतरास प्रश्न कएलन्हि, उपदेश सेहो कम नहि देलन्हि, विशेष समयक लेल बचत करब कतेक आवश्यक अछि । जे लोक इन्दुके देखिते स्वागत करैत रहन्हि, आई हुनकर चेहरा देखए लाइक छल । घर घूरैत समय हुनक आँखि डब-डबा जाइत छल ।

पीड़ा बाँटी तऽ ककरासँ ? एकटा मम्मी छलीह, जिनकापर भगवानोसँ बेसी भरोसा छल, मुदा पापाक गेलाक बाद जेना हुनकर अस्तित्व समाप्त भऽ गेल होए । कोनो विचार बिमर्शक स्थितिमे ओ चुप रहैत छलीह, ओ सेहो अन्य कर-कुटुम्ब जेकाँ पीठ देखा देतीह ? एकबेर तऽ इन्दुके मोन भेलन्हि आईके बाद मम्मीसँ कोनो सम्बन्ध नहि राखी, मुदा किछुए क्षणक बाद हुनका लागल ऐना सम्भव नहि हएत ।

सत्य सेहो अछि बड़का गम्भीर निर्णय कहिओ तामस वा धरफरीमे नहि लेबाक चाही । मम्मी कहैत छलीह, जखन बेटी जवान भऽ जाइत अछि तऽ ओ अपन मायक बहिना बनि जाइत अछि । राहुलके बेमारीक रिपोर्ट अबिते इन्दुके आँखिक आगा अन्हार लागए लागल । दौड़िते मम्मी लग गेलीह, सुनिकऽ मम्मीके सेहो ऐहने हाल छल । अपनाके सम्हारैत मम्मी इन्दुके सांतवना देलीह । किछुदेर कनैत रहलीह, फेर मम्मी इन्दुकी चुप करौलीह, 'धीरज राखू बेटी, भगवान घरमे देर छैक । राहुल शीघ्र ठीक भऽ जएता अहाँ चिन्ता नहि करु, कोनो नहि कोनो बाट अवश्य निकलत ।'

रिपोर्टकसँग डाक्टर आबएवाला बड़का खर्चक विषयमे सेहो जानकारी करौने छलाह । खर्च सुनिते इन्दुके पसिना छुटि गेल रहन्हि । राहुल तऽ एखनो कोनो टेष्ट नहि करौतैत यदि इन्दु जोड़ जबर जस्ती नहि करबतैथि । पूरापूर भोला छथि । स्वास्थ्यके प्रति कनिको ध्यान रखैत छथि, नहि तऽ एहन स्थितिए किआ अबैत ?

किड्नी शरीरक खून हरेक आधा घण्टामे साफ करैत अछि। मुदा आब राहुलक शरीरक खून किड्नीके माध्यमसँ नहि सफा भऽ रहल अछि। आब मात्र दुईएटा बिकल्प बचल अछि। एक डायलिसिस अर्थात् मशीनक माध्यमसँ खून साफ करएके प्रक्रिया आ दोसर किड्नी प्रत्यारोपण। दूनू बिकल्प बहुत कठिन अछि।

इन्दु पत्रिकासभमे किड्नी डोनरक लेल विज्ञापन देलीह। फोन तऽ आबि रहल छल मुदा अन्तमे बात पैसा पर आबिकऽ अटैक जाइत छल। जीवनमे कतेक रंग अछि मुदा सभसँ गारह रंग लक्ष्मीक छन्हि। जाहिपर प्रशन्न होइत छथि हुनका लेल बात आसान भऽ जाइत अछि, मुदा तमसेली तऽ व्यक्तिके काँटक बाट पर सेहो चला दैत छथि। पापा कहैत छलथि, हरेक समस्याक समाधान होइत अछि। पता नहि हमर समस्याक कहिआ समाधान हएत ?

इन्दु कतेको आशंकासँ घेराएल छलीह। राहुल डाक्टरक बात मानि लेने रहितैथि।

राहुल सेहो कम लजाएल नहि छलथि। डाक्टर आईसँ कतेको बर्ष पहिने दारु बन्द करएके सलाह देने रहथि। मुदा ओ छोड़ि नहि सकल छलथि। कतेकोबेर दुनूके बीच एहिबातक लेल झगड़ा होइत छल। कतेकोबेर तऽ राहुल इन्दु पर हात सेहो उठा दैत छलाह। वैवाहिक जीवन तनावग्रस्त रहल। कतेकोबेर राहुल पार्टीमे एतेक पी लैत छलथि घरपर आबएधरिमे समस्या होइत छलन्हि। हुनकर मित्र कोनो गाड़ीसँ हुनका घर पहुँचा दैत छलाह। मुदा आब ई सभ बात पाछू छुटि गेल। राहुल ओछ्यान पर सुतल इन्दुसँ क्षमा माँगि रहल छलथि। हुनकर दयनीय स्थितिदेखि इन्दुके दया अबैत छल।

राहुलके दुनू किड्नी जवाव दऽ देने रहन्हि। डायलासिसक माध्यम कहिआधरि चलाओल जा सकैत अछि। इहो प्रक्रिया तऽ कम महँग नहि अछि। आब तऽ किओ ब्लड देबाक लेल तैयार नहि होइत छल।

इन्दु असगरे बैसिकऽ सोचए लगलीह, व्यक्ति अपना लेल कतेक स्वार्थी भऽ जाइत अछि। हुनका एकटा घटना स्मरणमे आबि गेल। राहुलके एकटा मित्र दुर्घटनाग्रस्त भऽ गेल रहथि। हुनका खूनक आवश्यकता छल मुदा इन्दु राहुलके खून देबएसँ मना कऽ देने छलीह। हुनका लागल एहिसँ राहुल कमजोर भऽ जएताह। ओ बुझैत छलीह खून बनएके प्रक्रिया तेजीसँ होइत अछि। आब ई बात सोचिकऽ इन्दुके स्वयंसँ घृणा भऽ रहल छल। खून तऽ फेर बनि जाइत अछि, मुदा जे राहुलके चाही ओ एकबेर अपन स्थानसँ निकलि गेल तऽ जीवनभरि ओकर स्थान खाली रहैत अछि।

सर्जन राहुलक मित्र आ करकुटुम्बकसँग एकटा मिटिङ्ग सेहो कएने रहथि। मिटिङ्गमे सम्झाओल गेल छल, एकटा स्वस्थ्य किड्नी सेहो ओतबे काज करैत अछि जतेक दुनू किड्नी। सर्जन बीतल बीस बर्षक रेकर्ड सेहो देखौलन्हि, जाहिमे एक लाख एहन लोकके स्वास्थ्यक जाँच कएल गेल जाहिमे अपन एकटा किड्नी किनको दऽ कऽ इतिहास कायम कएने छलथि। दूर्भाग्य इन्दुके किनकोसँ सहयोग नहि भेटल। राहुल तऽ जीवनसँ मुक्त भऽ जएता मुदा इन्दु कहाँ भऽ सकतीह ? एखनधरि किओ आगा नहि आएल अछि। इन्दु अपन एकटा किड्नी देबए चाहैत छलीह मुदा डायबिटीज भेलाक कारण हुनक किड्नी राहुलके नहि देल जा सकैत अछि।

टेलिफोन बराबर आबि रहल छल मुदा सभ बार्गेनिङ्ग कऽ रहल छल, जाइजो अछि किओ बीना कारण अपन जान जोखिममे किआ डालत। हरेक व्यक्ति लग किड्नी बेचबाक प्रमुख कारण छल मजबुरी। किनको अपन बेटीके विवाह करबाक छल, किनको बेटाके मेडिकलमे पढ़ाएबाक छल, किनको बेटाके नोकरीक लेल बहुत पैसा घूसमे देएबाक छल। ई तऽ लाइव किड्नी डोनरके बात चलि रहल छल। डाक्टर कहलन्हि, ‘किड्नीक प्रत्यारोपण दू प्रकारसँ होइत अछि, ब्रेन डेड वा कोमामे चलिगेल व्यक्तिके किड्नी सेहो प्रत्यारोपित कएल जा सकैत अछि, जकरा दिस इज अ डोनर कल कहल जाइत अछि।’

इन्दुके एकटा नव आशा अस्पताल चक्कर काटए लागल मुदा हतासा इन्दुके नहि छोड़लक । अस्पतालमे एहन लोकके भेटब मुश्किल छल । मुदा हुनका दिस इज डोनर बनाबएके नामेसँ परिवारबाला भरैक जाइत छल । मरलाक बाद शरीरके काटिकुटिकऽ दूर्दशा नहि कराएब ।

राहुलक मित्रसभसँ ओ पहिने बहुत उधार लऽ लेने रहथि । इन्दु आब चिन्तामे धसल जा रहल छलीह । भविष्यक विषयमे सोचिते ओ डेरा जाइत छलीह । मुदा हुनका सभसँ बेसी आश्चर्य मम्मी पर भऽ रहल छल । ओ तऽ इन्दुक आँखिक भाषा पढ़ि लैत छलीह । फेर आई मम्मी ऐहन उदास नदी जेकाँ शान्त किआ छथि ?

कतेको बेर पापा अधैर्य भऽ जाइत छलथि । मुदा मम्मी सभ समस्याके धैर्यतापूर्वक सुलझ्बैत छलीह । पापाक बेमारी मे ओ हिम्मत नहि हारिलीह, अपन पूरे प्रयास कएलीह आ पापा इलाजसँ ठीक भऽ गेलथि । एकरबाद पूरे १० बर्ष हमरासभक सँग रहलथि । मुदा एहिबेर.... इन्दु मुहँ खोलिकऽ मम्मीसँ आर्थिक सहयोग वा निहोरा कऽ चुकल छलीह । मुदा मम्मी बहुत सहजतासँ कहलीह, 'किआ परेशान होइत छहँ, कोनो नहि कोनो बात अवश्य निकलतै तो अपन ध्यान राख । पाहुनक बेमारीसँग तोरो तऽ लड़एके छौक ।'

'हँ.. मम्मी मुदा बीना पैसाके ई लड़ाई हम हारि जाएब ।'

इन्दुके बहुत चिन्ता रहन्हि जे मम्मी लग पैसा होइतो ओ पैसाक बात किआ नहि करैत छथि । पापाक रिटायरमेन्टक बाद पैसा हुनका लग फिक्स डिपोजिटमे अछि । फेर पेन्सन सेहो अबैत अछि ।

'ऐना किछु नहि हएत बेटी, तो भगवान पर भरोसा राख...,'मम्मीक बात इन्दुके मोनमे कोनाकोना लगैत छल । तमसाकऽ बजलीह, 'भैओ जाइत तऽ अहाँक की राहुल तऽ हमर घरबाला छथि...।'

इन्दुके आँखिमे आएल नोर आ विवशता पर सेहो मम्मी विचलित नहि भेलीह । इन्दु मम्मीक चेहराक भाव पढ़ए लगलीह, माएक ममताक ज्वारभाटाक तेजी शान्त भऽ गेल अछि ? ओ मम्मीक लगसँ उठि गेलीह ।

राहुलक जीवन एक-एक दिनकऽ कम होइत जा रहल रहन्हि । एकदिन भोरमे एकटा नर्स इन्दुके कागज देलन्हि आ कहलन्हि कोनो व्यक्ति स्वच्छासँ किड्नीदान कऽ रहल छथि । इन्दुके जेना मोनक इच्छा पूरा भऽ गेल, ओ प्रशन्नतासँ भरि गेलीह । एका-एक पूरे परिवेश प्रकाशमय भऽ गेल मुदा दोसरे छन ओ डेरा गेलीह । इन्दुके मोनमे रणक्षेत्रमे मृत्यु आ जीवन नामसँ दूटा पक्ष युद्ध करब शुरु करए लागल आब तऽ ई युद्ध ओटीके बाहर लागल, बलक सँग-सँग चलैत रहत ।

ओटीमे डाक्टरक मेशीन राहुलक शरीर पर चलि रहल छल । दोसर दिस इन्दुक मस्तिष्कमे भयक मेशिन अपन काज कऽ रहल छलन्हि । स्वार्थ आन्हर होइत अछि आ विपतमे व्यक्ति स्वार्थी भऽ जाइत अछि । इन्दुक हालत एहने स्वार्थी व्यक्तिक भऽ गेल छलन्हि । ओ विसरि गेल छलीह जतेक प्रार्थना राहुलक जीवनक लेल कऽ रहल छलीह, ओतबे प्रार्थनाक आवश्यकता ओहो व्यक्तिक लेले सेहो अछि जकर किड्नी राहुलके देल जा रहल अछि । ई युद्ध आखिर समाप्त भेल । मृत्यु पराजित भेल । इन्दुक मस्तिष्क संसयक सभ समीकरणक तौल बन्द कऽ देने छल ।

राहुलके एकटा नव जीवन भेटल । इन्दु दौड़िकऽ डाक्टर लग गेलीह ओ व्यक्तिसँ भेटएके इच्छा प्रकट कएलन्हि, जे साक्षात भगवान बनिकऽ हुनका मदत करए आएल छल । बहुत खुसामदक बाद डाक्टर इन्दुके ओ भगवानक ओछ्यानधरि लऽ गेल । दृष्टि देखिते इन्दु चिचिया उठलीह, ‘ई तऽ मम्मी अछि ।

डाक्टर इन्दुके कहलन्हि, ‘अहाँक माय अहाँके एहिदुआरे आश्वासन दऽ रहल छलीह । कारण हुनका स्वयं पर पूरापूर भरोसा छल । ई लिएह २० लाखक फिक्स डिपोजिट अहाँक मायके डर छल, यदि अप्रेशनक समय हुनका किछु भऽ जाएत तऽ ....ई पैसा अहाँके कोना भेटत ।’

एतबे सुनब छल की इन्दुके प्रतीक्षाक बाण टुटि गेल आ अविरल नोर बहए लागल । ओ ग्लानिमे डुबल निर्निमेष अपन मम्मीके देखए लगलीह ।

तखने मम्मी अस्थिरेसँ अपन आँखि खोललीह आ अपना लग बजाकऽ स्नेही स्वरमे बजलीह, 'बताह आब हँसएके समय छौ, तो कानि रहल छे...।'

'तोरा किछु भऽ जएतहुँ तऽ ?' इन्दु कनिते बजलीह ।

'कोना होएत ? तो तऽ हमर शक्ति छे, हम पतिके जाएके पीड़ा अनुभव कएने छी, तोहर तऽ यात्रा शुरुए भेलौक अछि । एतेक लम्बा यात्रा असगरे कोना तय करिते ? आ हँ.. एहि पैसाक इलाजक लेल रखिहे बेटी । एकबेर शरीरक ई मेशीन खुलिते बेर-बेर फेर मिस्त्रीके चक्कर काटए पड़ैत अछि, ' कहैत मम्मी पीड़ाक बीच सेहो बिहुँसि देलीह ।

इन्दुके लगलन्हि मम्मी दुःखक एहि ध्यानक जंगलसँ निकलिकऽ ओ शास्वत ओ सुखद उर्बक धरती पर ठाढ़ होइत ओ नोरसँ भड़ल आँखिसँ निर्निमेष मम्मीके ताकि रहल छथि । हुनक आगा सम्बन्धक सुखल नदी नहि बल्कि प्रेम भड़ल सम्बन्धसँ उमडाम नदी तीव्र गतिमे बहि रहल छल ...।



पश्चातापक बाट

तेज गतिक सड़कमे जेना सभ किछु तीव्र गतिसँ भागि रहल छल। सड़क कातमे शान्त विजलीक पोल सेहो भागैत नजरि आबि रहल छल। शहरी संसारमे कृतिम इजोतक बीच सड़कक अन्हर दौड़मे नहि जानि कतेको गाड़ी सहभागी छल। एहने एक आ डुबैत साँझक उदास चेहारपर कारी पोतैत राति अपन विकराल रुपमे छल की तीव्र चिचिआहटकसँग एकटा गाड़ी रुकल, ओतए भीड़ लागि गेल। शायद मनुखक इच्छा एहि गतिमे रोकावट बनि गेल छल।

नव भोरक उज्जर प्रकाशमे साधना तेजीसँ अपन पपनी खोलैत छथि आ अपन कापैत आंगुरसँ देह छुबि कानए लगैत छथि। हुनकर नोर आ सिस्कीक आवाज कोनो दोसरकेँ ओतए खिचि लैत अछि।

'साधना.......साधना........... तोरा होस आबि गेलहुँ।' बुढ़ पल्टन बाबा अपन दुनू हाथ आकाश दिस उठालैत छथि, 'हे भगवान अपनेकेँ कृपासँ ई बचिया बचल अछि।'

साधना आब चुपचाप कतहुँ भुतलाएल जेकाँ बैसल छथि।

'यदि तोरा आइ किछु भऽ जैतहुँ तऽ भगवान कसम ई दुःख बुढ़ बाबा नहि थाम्हि सकितहुँ।'

'.....बेटी एकटा लड़का छलहुँ जे तोड़ा बचा देलकहुँ नहि तऽ ओ गाड़ीबला सभक अन्हरदौड़मे तो सड़कक एकटा गिट्टी मात्र होइतए। हम मन्दिरसँ पूजा कऽ कऽ आबिए रहल छलहुँ की तोड़ा देखि घबड़ा गेलहुँ ....ओहे छल जे तोड़ा मलहमपट्टी कएलकहुँ ....डाक्टरकेँ देखेलकहुँ आ एखन दबाई लाबए गेल छौक। हम कतबो कहलियैक मुदा ओ हमरासँ एकहुँ रुपैया नहि लेलक।'

करीब-करीब दौड़िते ओ प्रवेश कएलन्हि। एक क्षण ओ पल्टन बाबाकेँ देखलन्हि आ दोसरे क्षण चिन्तितमे रहल साधनाकेँ।

साधना आब बहुत ठीक भऽ गेल छलीह। मुदा शरीरक विभिन्न भागमे एखनो चोटक चिन्हसभ छल। जरैत ग्यासक आगा बैसल साधना लोहियामे छोलनी यन्त्रवत चला रहल छलीह। किछु समयक बाद करछ जखन शान्त होइत अछि तऽ झुकि कऽ तरकारीक सुगन्ध लैत छथि। एहि क्रममे जरैत ग्याससँ लोहिआक कुण्डा पकड़ि कऽ उताड़ि दैत छथि। एहिकेँ बाद उठल आकस्मिक धुवाँमे हुनकर सुन्दर चेहरा खोकीसँ लाल भऽ जाइत अछि। किओ छल जे गेट पर ठाढ़ भऽकऽ देखि रहल छल। हुनका बुझएमे नहि आएल आँखि बन्द कऽ कऽ ओ ओतहि धुवाँमे लेपटाएल खोकैत बैसल किए छथि ?

'के ?'

साधना आवाज दिस घुमैत छथि। शायद ओ युवकक लेल आंगुर छुवएकेँ पहिल अनुभव छल। ओ आब अपन जरैत हाथकेँ सहला रहल छलीह।

'अपने तऽ ओहे छियै ने, जे ओहिदिन हमर जान बचेने छलहुँ,' ओ धीरे-धीरे हुनका दिस बढ़ि रहल छलीह।'

'अपनेकेँ ओहिदिन धन्यवाद सेहो बढ़ियासँ नहि कहि सकलहुँ......अपनेक देल ई जीवन अछि हमर,' किछु डेग चललाक बाद रुकि जाइत छथि।

ओ आश्चर्यपूर्वक देखैत रहैत छथि साधना बिहुँसि रहल छथि, आब ओ खोकिओ नहि रहल छथि, तैयो हुनका प्रति हुनकर प्रतिक्रिया युवकक

बुझएसँ बाहर छल। ओ हुनकर जरैत हाथक विषयमे सेहो किछु नहि पुछलन्हि।

'सहीमे हम देखए आएल छलहुँ, अहाँ ठीक भेलहुँ की नहि,' किछु देरक शान्ति ओ एहि प्रकारे तोड़लन्हि।

साधना बीना किछु कहने पाछु मोड़लीह। ओ एक गिलास पानि लऽ कऽ अपन सधल चालिसँ हुनका दिस बढ़ि रहल छलीह। ओ आश्चर्यमे छलाह, कारण आब ओ बीना किछु कहने हुनकर घरक भीतरमे छलाह आ जल्दीसँ हुनका दिस बढ़िकऽ गिलास अपना हाथमे लऽ लेलन्हि।

'अहाँ देखैत नहि छियैक की ?'

'हँ..... मुदा एहिमे आश्चर्य की ?' ओ सहज छलीह।

'आश्चर्य एहिद्वारे जाहि आसानीसँ अहाँ काज कऽ रहल छी .....एहिबाटे जा रहल छलहुँ ......हमरा एक्को क्षण नहि लागल जे अहाँ......ओ जानि कऽ शब्दसभकेँ आधा छोड़ि देलन्हि।'

'एकरा तऽ बच्चेसँ आदी छी.....आब तऽ लगैत अछि कहिओ धोखामे देखए लगलहुँ तऽ शायद एतेक सहजतासँ अपन काज नहि कऽ सकैत छी,' समयक निर्दयीय मुस्कान हुनकर चेहरापर आबि गेल।

ओ आगा किछु नहि कहि सकलथि। ओ ओतएसँ चलि गेलथि।

'आरे कोनो औपचारिकताक बात नहि, लाउ हमरा दऽ दिअ,' ओ चलैत-चलैत साधनाक हाथसँ झोरा लऽ लैत छथि। ओ सड़कपरसँ साधनाकेँ देखि लैत छथि, ओ करीब-करीब तेज गतिसँ हुनका लग पहुँच जाइत छथि। सँग-सँग चलिते घर जाइत छथि। ओ देखैत छथि कतेक सावधानीसँ गल्लीक हरेक मोड़केँ चिन्हैत छथि, कोन सरलतासँ हरेक मोड़ गल्लीकेँ पार करैत अपन घर चिन्ह लैत छथि। ओ झोड़ा लेने हुनकर सहजता देखिते रहि जाइत छथि।

साधना ताला खोलि भीतर चलि अबैत छथि, 'अपने भीतर आएल जाउ ने...हम पानि लबैत छी।'

'न...नहि।'

'अपने किए एतेक परेशान भेल छी....हम सभ काज बहुत आसानीसँ कऽ लैत छी ।' हुनकर असहजता ओ बुझि गेल होइथ ।

'हँ, ओ तऽ हम देखि रहल छी ।'

'हम भलेही देखैत नहि होइ मुदा अनुभव सभ किछु करैत छी । एहि समय अपने किछु सोचि रहल छी आ हम इहो बुझि सकैत छी अपने की सोचि रहल छियैक ।'

ओ कनि चौकलाह, साधना बिहुँसलि ।

'अपने तऽ इहो सोचि रहल छियैक ने एकटा आन्हर लड़की अपन पूरे काज बीना ककरो सहायतासँ कोना कऽ लैत अछि ।'

'नहि साधना हम ई सोचि रहल छी जे अहाँ एहि निर्दयी संसारमे कोना एहि आँखिबला भूतसँ बचैत छी ।'

हुनकर स्पष्ट प्रश्नसँ साधनाक चेहरापर एकटा पीड़ा चलि आएल ।

'सही कहलहुँ अपने एहि निर्दयी संसारमे बचल रहब हमर सौभाग्य अछि ।' ओ कहैत रहलीह, '.....हमर भाई हमरा अन्हारसँ लड़ए सिखौलन्हि । बाल्यपनसँ लऽ कऽ एखनधरि हमर भाईएमे मायबाबू गुरु सभक रुप देखलहुँ । हम आइ जाहि सहजतासँ बीना लाठी लेने अपन बाट तय करैत छी ओ सभ हमर भाईक मेहनतक परिणाम अछि ....मुदा निर्दयी संसारसँ ई नहि देखल गेल आ ओ हमर सहारा सेहो हम आन्हरसँ छिनलेल गेल....'अपन सिस्कीमे ओ आगा किछु नहि कहि सकलथि ।

ओ कतेको दिनक बाद एतए आएल छथि । ओ आइयो देखलन्हि साधना कतेक सहजतासँ किछु किन रहल छथि । ओ बुझि गेल छलथि हुनकर घरक आसपासक लोक पल्टन बाबा जेकाँ साधनाकेँ बेटी आ बहिन बुझैत छलथि । हुनकर भाईक बाद सभ किओ स्नेह करैत छल । ई बात अलग छल कोनो सामान किनए काल किओ हुनका धोखा दऽ सकैत छल ।

आब बातचितमे अनौपचारिक सेहो होबए लागल छल । 'अहाँ हमर आहटेसँ चिन्ह लैत छी ?'

हुनकर बिहुँसब जेना अपना आपमे हरेक प्रश्नक जवाव दऽ रहल छल ।

'साधना अहाँ कहिओ नहि सोचैत छी, कहिओ देखि पबितहुँ ?'

'जकर आशे नहि हुए, ओकरा किए सोचू,' कनी कठोरतासँ बजलीह ।

'तऽ अहाँ कहिओ नहि देख सकब ?'

'जखन संसार आँखिसँ देखब बुझए लायक भेलहुँ, तखने बच्चेमे एकटा बेमारी जाइत-जाइत हमर आँखिक रोशनी लऽ गेल बाँकी बचल अन्तिम आशा ओ भाईकेँ सपना छल .....ओ भाईकेँ सँग चलि गेल .....हुनकर तऽ इहे एक मात्र इच्छा छल जे हम फेरसँ संसारक रंग देखि सकी ....नहि जानि कतेको डाक्टरक क्लिनिक घुमेलन्हि सभकेँ एकहिटा सलाह छल एहि आँखिमे किछु नहि बचल अछि ....एकरबाद ओ तऽ एकरे प्रतीक्षामे छलथि जे किओ मरैत व्यक्ति अपन आँखि दान करैत आ फेर एकटा अपरेशनसँ अपन आँखिमे रोशनी आबि जाए ......एहन अवसरक आशमे ओ दिन राति मेहनत कऽ कऽ पैसा जोड़ि रहल छलथि,' साधनाक कानल शब्दमे पीड़ा प्रकट भऽ रहल छल ।

हुनका हिम्मत नहि भेल साधना लग जाइ आ हुनक धैर्य बान्हि सकी । मोन मसोड़ि कऽ ओ बाहर चलि गेलाह ।

आइ बाहर दरबाजा पर पल्टन बाबा भेट गेलथि । 'कोना छी बेटा ?'

'बस अपनेक कृपा ।'

'हम प्रत्येक दिन मन्दिरसँ आबि कऽ साधनाक खोज खबरि लैत रहैत छी ।'

'ई तऽ समयक बात अछि .....समय हमरा दुनू गोटेकेँ असरा छिन लेलक, हमर बेटा आ ओकर भाई ....कतेक कहलहुँ हमरे घरमे रह, सँग चल मुदा नहि .....असगरे रहि कऽ जीवनक संघर्ष तय कऽ रहल अछि ....अहाँ बेटा पढ़ल लिखल छी एकरा बुझबिऔक ।'

'अपने चिन्ता नहि कएल जाओ ....कतेक हिम्मती लड़की छथि साधना ....आई हम एहि क्रममे आएल छी ।'

फेर ककरो बजेला पर, एखने अबैत छी कहि पल्टन बाबा चलि गेला ।

पहिल भेटिमे सेहो हुनकासँ किछु विशेष औपचारिक नहि भेल छल । आब तऽ हुनकामे कोनो औपचारिकता नहि छल ।

'हम अहाँसँ एकटा बात कहए चाहैत छी ?'

'कहूँ एहिमे पुछबाक की बात ।'

'अहाँ कहिओ अपन पायर पर ठाढ़ होबएकेँ बात सोचने छियैक ?'

साधना बिहुँसली, 'तऽ की एहि समय अपन पायर पर ठाढ़ नहि छी ।'

ओहो बीना बिहुँसल नहि रहि सकलाह, 'मजाक नहि....सहीमे हम अहाँक नोकरीक विषयमे कहि रहल छी ।'

'अपने एखनो मजाके कऽ रहल छी .....हमरासन आन्हर लड़की काजे की कऽ सकत ।'

'एना नहि कहू साधना ......अहाँ सभ चीजक अनुभव कऽ सकैत छी, बुझि सकैत छी, मात्र देखि नहि सकैत छी...... साधना आन्हर तऽ ओ होइत अछि जे आँखि होइतो संवेदनशील नहि होइत छथि, ओ मात्र देखैत छथि, नहि बुझैत छथि आ नहि अनुभव करैत छथि,' हुनकर आवाजमे आक्रोश साफ झलकि रहल छल ।

'लगैत अछि एहि चमकैत संसारमे अपनहुँकेँ कोनो लुत्तीसँ शरीर जरल अछि....ओना हमसभ कए दिनसँ भेट रहल छी मुदा नहि अपने किछु कहलहुँ आ नहि हम पुछलहुँ.....हम एखनधरि अपनेक आवाज आ आभासक अतिरिक्त अपनेक विषयमे किछु नहि बुझैत छी ।'

'की बुझए चाहैत छी हमरा विषयमे ?'

'देखल जाए एकटा अपरिचितसन विश्वास अपनेकेँ हमरा बीच बनल अछि, अपनेक परिचय बुझएसँ आब कोनो खास महत्व नहि रखैत अछि ......मुदा अपने जे किछु बताबए चाहैत छी तऽ बताउ, यदि नहि चाहैत छी तैयो अपनेसँ कोनो प्रश्न नहि करब ।'

'साधना .....हम की कहूँ अपना विषयमे ......मात्र एतेक कहब जे आओर जेकाँ हमहुँ एकटा मतलबी मनुष्य छी, शायद मनुष्यो नहि .....।'

'एना नहि कहू,' साधना जल्दिसँ कहैत छथि,'......रहल बात अपनेसँ परिचयकेँ पहिनहो कहि चुकल छी। हमर एहि अपरिचित सम्बन्धक प्रगाढ़ता कोनो परिचयक जरुरी नहि रखैत अछि ....अपने हमरा असगरे पनमे कतेको अनुभवक स्वर देलहुँ अछि। हमरा लेल मात्र एतेक बहुत अछि जे अपने अपने छी, अपने की छी हमरा नहि बुझबाक अछि।'

'साधना हमरा प्रति एतेक विश्वास, एतेक आस्था ठीक नहि,' ओ बेचयनीसँ ठाढ़ भऽ गेलथि।

'डेराइत छी कतहुँ अहाँक नजरि उठैत-उठैत अपना नजरिमे नहि खैसि पड़ी.....यदि अहाँ चाहैत छी हम एतए आउ तऽ प्लीज हमरा पर एतेक विश्वास नहि करु,' जाइत-जाइत ओ कहलन्हि।

'अए !' मूक आश्चर्य साधनाक चेहरा पर पसरि आएल।

तीन दिनधरि ओ साधनासँ भेटए नहि अएलथि, फेर एक दिन अचानक हुनकर तेज धाप ओतए आवएसँ नहि रुकल।

'साधना.....।'

हुनकर आहट पर घुमएबाली साधना आइ हुनका बजेलो पर नहि सुनि रहल छलीह।

'यदि तमसाएल छी तऽ प्लीज दू मिनेटक लेल तमसाएब छोड़ि, हमर एकटा बात सुनि लिअ।'

'तीन दिनसँ अपने कतए छलहुँ ? आखिर ओ बजलीह।

'चलू आवाज तऽ निकलल .....एकर मतलब अपन बात तऽ कहि सकैत छी,' आ बैसि रहला।

'एकदमसँ नहि जानि कतए हेरा जाइत छी, आ कहिओ अहिना प्रगट भऽ जाइत छी आ पुछैत छी तमसाएल छी।'

ओ बिहुँसला, 'तमसाइत किए छी .....हम अहीक काजमे लागल छलहुँ ....आइसँ अहाँकेँ स्कूल जेबाक अछि।'

'की !' हुनकर मुहँ आश्चर्यसँ खुजल से खुजले रहि गेल।

'हँ कम्प्युटर स्कूल जेबाक अछि अहाँकेँ.....ओतए ६ महिनाक एकटा

कोर्ष पूरा करबाक अछि आ अहाँक नोकरी पक्का ।'

'अहाँकेँ बुझल अछि, अहाँ की कहि रहल छी ?'

'हँ बढ़िया जेकाँ .....पहिने अहाँ बैसू साधनाकेँ हाथ पकड़ि कऽ ओ बैसौलन्हि ।

अहाँके ओतए जा कऽ टाइपिङ्ग सिखबाक अछि, जाहिमे अहाँक आँखि अहाँक हाथ बनत .....फेर अहाँ अपन आँगुरसँ पढ़ब ....देखब अहाँक आँगुर जाहि गतिसँ टाइपिङ्ग पर दौड़त किओ नहि कहि सकत जे अहाँ ककरोसँ कम छी ।'

साधना चुपचाप सभ किछु सुनि रहल छलथि आ मोने मोन किछु बुनि रहल छलीह । ओ साधनाक बहुत नजदिक छलथि आ हुनकर आँगुर अपन हाथमे रखने छलथि ।

अहाँ देखब साधना अहाँ ओतए पढ़ैत अनुभव करब आँखि बीना सेहो जीवन बढ़िया जेकाँ जिएल जा सकैत अछि.....आ तखन अहाँकेँ अपन इहे आँगुरपर गर्व हएत ।

ओ चलि गेलथि आ पाछु छुटि गेल हुनक स्मरण । बेर-बेर हुनकर शान्त मोनमे हिलोर उठैत रहल । स्वयंसँ पुछैथि आखिर केहन अपरिचित अनुभव अछि, हुनकर आहटसँ मोनमे कोना हलचल मचैत अछि । आइ हुनकर क्षणिक स्पर्शसँ हुनकर मोनकेँ आओर असंयमित कऽ देलक ।

साधना कम्प्युटर स्कूलमे प्रशिक्षण लेब शुरु कऽ देलन्हि । प्रत्येक दिन ओ ओतए जाइत छलथि आ हुनका सँग दैत छलथि, घर जाइत समय हुनका गेट धरि जाइत छलथि ।

एक दिन साधना पुछि देलन्हि,'....कतेक खर्च भऽ रहल अछि ?'

एहि पर कतेक अधिकारसँ ओ डटलन्हि,' ओ मात्र बिद्यार्थी छथि हुनका पढ़एसँ मतलब रखबाक चाही ।'

६ महिना कोना बीत गेल पते नहि चलल ।

'ई कोन कागज दऽ देलहुँ हमरा....की अछि ई ?'

'हम देखए चाहैत छी जे अहाँ अपन पढ़ाई कोना कएलहुँ, एहि कागजकेँ

पढ़लाकेँ बादे अहाँकेँ पास करब ।'

साधनाक आत्मविश्वास साधनाक बदला हुनकर चेहरा पर झलकि रहल छल । साधना कागज पर अपन आंगुर घुमबैत छथि ।

'.....ई तऽ....ई....।' हुनकर चेहरा पर संशय छल ।

'हँ ई तऽ अहाँक अपाइन्मेन्ट लेटर अछि, अहाँकेँ नोकरी भेट गेल ।'

नोकरी तऽ भेटल छल साधनाकेँ मुदा हुनकर खुशी हुनकर चेहरासँ बेसी ककरो आओर पर झलकि रहल छल ।

एकदिन साधनासँ रहल नहि गेल । आखिर ओ अपन मोनक व्यथा हुनका आगामे राखि देलीह ।

साधनाकेँ बात सुनिते जेना हुनकर पायर नीचा रहल जमीने खसैक गेल हुए । ओ एना चौकला मानु बर्षो बाद होस आएल अछि ।

'ई सम्भव नहि अछि .....।'

'किए ....,' आँखिमे नोर चलि आएल ।

'कहलहुँ ने ई सम्भव नहि अछि ई असम्भव अछि' ओ जोड़सँ चिचिएलथि ।

'एहिद्वारे ने अहाँक उज्जर संसारमे हम आन्हरकेँ कोन काज ?'

'साधना...., बीना कहल पीड़ा हुनका चेहरा पर साफ झलकि रहल छल ।

आब बस करु आ सहानभूति नहि जताउ हमरा पर....हम बुझि गेलहुँ ....अहाँक भावना हमरा लेल की अछि .....भगवानक लेल हमरा अन्हारमे असगरे छोड़ि दिअ ।'

हुनक नोर पोछएकेँ हिम्मत हुनकामे नहि छल ।

साधना हम अहाँकेँ अपन अन्तरस भावनासँ परिचय करा पबितहुँ .....अन्तिम वाक्य हुनक ठोर पर आबि कऽ काँपि गेल ओ चलि गेला । बीतैत दिनकसँग साधना हरेक समय हुनका बिसरएकेँ प्रयास कऽ रहल छलीह ओतऽ हुनकर श्वास आ हृदयक महत्वपूर्ण भाग बनि गेल छलथि । ओहि दिनक बाद ओ नहि अएलथि । साधना हरेक क्षणक हरेक आहट पर हुनकर अचानक आबि जाएकेँ प्रतीक्षामे रहैत छलीह ।

आहट भेल। साधनाक मोनमे सेहो किछु आएल मुदा पल्टन बाबा छलथि, जे कहि रहल छलथि, 'साधना .....लगैत अछि भगवान सुनि लेलन्हि अछि .....अहाँक भायक अन्तिम ईच्छा पूरा होबएबला अछि।.....एकटा मरैत व्यक्तिक आँखि अहाँकेँ भेटए बला अछि।'

साधना आश्चर्यजनक भावसँ पल्टन बाबा दिस ताकए लगलीह। तखने बाबा कहलन्हि, 'साधना की अपन जीवनमे प्रकाश लेबाक लेल तैयार छी ?'

साधना अस्वीकार कोना कऽ सकैत छलीह। एकदिस अपन भायकेँ अन्तिम ईच्छा पूरा करएकेँ आकंक्षा आ दोसरदिस ककरो देखएकेँ ईच्छा।

नियम समयपर आँखिक अपरेशन भेल आ अपरेशन सफल रहल। साधना डाक्टरक निर्देशन पर धीरे-धीरे आँखि खोललीह, एकदम नव संसारमे।

प्रसन्नताक ठेकान नहि छल। 'हम देखि सकैत छी....हमरा सभ किछु देखाई दऽ रहल अछि ....डाक्टर साहेव, पल्टन बाबा...।'

एकदमसँ हुनकर प्रसन्नता धुवाँ जेकाँ उड़ि गेल ओ एखनोधरि भेटए नहि आएल छलाह। हृदयक पीड़ा छुपौने ओ घर अएलीह। अपन दैनिक दिनचर्याकेँ नव आँखिसँ देखि हुनका आश्चर्य भऽ रहल छल। जाहि संसारसँ ओ बन्द आँखिसँ परिचित छलथि, आइ खुजल आँखिसँ ओ संसार अपरिचत लागि रहल छल। घुमैत-घुमैत एकदिन अपन भायक फोटो लग अएलीह, जिनकर चेहराकेँ हाथसँ छु कऽ चिन्हैत छलीह आइ हुनकर आँखि आश्चर्यसँ देखि कऽ चिन्ह रहल छलीह। अपन भायकेँ फोटोलग अपना नामसँ लिखल एकटा लिफाफ देखि चौकि जाइत छथि। ओ लिफाफ उठालैत छथि आ जल्दि-जल्दि खोलि कऽ पढ़ब शुरु करैत छथि।

साधना अहाँ हमर चिठ्ठी स्वयं पढ़ि रहल छी, कतेक प्रसन्नताक बात अछि .....अहाँक आँखि हमर बीना उदेश्यक जीवनकेँ उदेश्यमूलक बना देलक.....विश्वास करु, एहिसँ बढ़ि कऽ हमरा लेल आओर प्रसन्नताक बात की भऽ सकैत अछि। साधनाक जीवन सहीमे प्रकाशमय भऽ गेल ......आइ

ई पत्रक माध्यमसँ हम अहाँकेँ ई सभ कहि रहल छी जे कहिओ हम अहाँकेँ आगुमे नहि कहि सकलहुँ .....साधना अहाँक भाई जे एकटा फैक्ट्रीमे काज करैत छलाह हुनकर आश्चर्यजनक मृत्युक कारण हम आइ अहाँकेँ कहि रहल छी ....ओहि फैक्ट्रीक महत्वाकाँक्षी जे धनक अभिमानमे चूर भऽ कऽ अपन व्यावसायिक लाभक लेल अपन फैक्ट्रीक गोदाममे आगि लगेलहुँ। जाहिमे कतेको मजदूर जीबिते जरि गेल ..जाहिमे एकटा अहाँक भाइ सेहो छल ..... ओ व्यक्तिकेँ व्यावसायिक लाभ तऽ भेटल मुदा मरएबलाक आह ओकरा क्षण-क्षण जरबैत रहल, ओ पीड़ित सभक नोर ओकर जीवनमे बिहारि आनि देलक .... अपनासँ डेराइत ओहि दिन तेज गतिसँ गाड़ी चलबैत अपन मृत्यु लग जा पापसँ मुक्त होबए चाहैत छल.... मुदा शायद समयकेँ किछु आओर इच्छा छल ....ओकर तेजगतिक कारसँ अहाँ टकरा गेलहुँ ....आ फेर ओहे अहाँकेँ अहाँक घर अनलक ....अहाँकेँ इलाज करौलक .....मुदा ओहि समयधरि ओ नहि बुझैत छल उपरबाला शायद ओकर पश्चातापक किछु दोसरबाट सोचने छल, चुपचाप टाङ्ग ओकरा बेर-बेर अहाँक द्वार पर खिच अनैत छल ......अहाँक जीवन बदलैत-बदलैत ओकर जीवनक बाट बदलि गेल ....हरेक बेरक भेटकेँ ओ अन्तिम मानि जाइत छल आ हरेकबेर ओकर मोन ओकरा अहाँधरि खिच लबैत छल.......फेर एकदिन अहाँकेँ ओकराप्रति अपन प्रेमपूर्ण भावनाक अभिव्यक्ति भीतरधरि झकझोरि देलक.....ओकर पापकर्म कखनो नहि पाछु छोड़लक आ ओ कखनो नहि चाहैत छल ओकर छाँह अहाँ धरि पहुँचए ....ओकर जीवनक कृतिक कोनो पश्चाताप नहि छल मात्र दण्ड छल आ हम ओकरा दण्ड दऽ देलहुँ ....एहि जीवनक कोनो उपयोगिता नहि बुझि अहाँक नाम पर सदाक लेल जा रहल छी।

पत्रकेँ समाप्त होइत-होइत साधनाक आँखिसँ खसल नोर कागजकेँ एक-एक अक्षरकेँ अपनामे समेटि लेने छल।



एक कप चाह

सड़कक एहिकात चाहक दोकान पर बैसल छी। ठीक आगामे हमर रेडियो स्टेशन अछि। जखन हमर ड्यूटी नहि होइत अछि वा हम अपन ड्यूटी पूरा कऽ लेने रहैत छी तऽ एतए अवश्य अबैत छी।

कहिओ-कहिओ तऽ दसो मिनेटक लेल एतए अवश्य अबैत छी। मुदा अबैत अवश्य छी। एतए कोन्हमे रहल कुर्सी पर बैसि कऽ मोनसँ हम अपन एफएम रेडियो स्टेशनक घरके तकैत रहैत छी। आ मस्तिष्कक आँखिसँ स्टूडियो, ड्यूटी रुम, रेकर्डिङ्ग रुम, प्राविधिक बैसएबला रुम, लाइब्रेरी सहित पूरे कक्षकेँ देखैत रहैत छी जतए ओ दुनू बराबरसँग रहैत छथि।

एतए बैसि कऽ हम ओ सभ देखैत रहैत छी जे ओ दुनू बीच कहिओ नहि होइत अछि। ओ दुनूसँ हमर मतलब अछि बबली आ हम। दू अलग तरहक लोक छी हम दुनू। विपरित आ अपरिचति जेकाँ। मुदा जखन हम दुनू सोचैत छी, बबलीसँ स्वयंकेँ जुड़ल पबैत छी। भीतरधरि झन्झना देबएबला अनुभव अछि ई।

ओ लड़की। जेकरा हम बहुत पसिन करैत छी, हमर सहकर्मी छथि। हम दुनू एहि एफएम रेडियोमे उदघोषक छी। ओ स्वयंकेँ रेडियो जॉकी कहब पसिन करैत छथि आ हम हरेकसमय जोड़ दैत छी हम उदघोषक छी। ओ

बीतल दू बर्षसँ एतए छथि। जखन पहिलबेर हम हुनका देखलहुँ, ओ भादवक एकटा भीजल बेरिया छल। बर्षा लगातार भऽ रहल छल।

गरजैत मेघ बरसि रहल छल। ओहि दिन हम अपन कार्यक्रम चला रहल छलहुँ। काज पूरा भेलाक बाद हम ओतएसँ निकलहेबला छलहूँ की कार्यक्रम संयोजक हमरा रुममे एला, ओ किछु परेशान जेकाँ छला। नव आरजेकेँ प्रवेश होबएबला छल जे एखनधरि नहि पहुँचल छल। सुनलहुँ ओ कोनो लड़की छलीह। कार्यक्रम संयोजक हमरा रुकए लेल कहलन्हि, कमसँ कम तखनधरि जाधरि ओ लड़की नहि आबि जाइत छथि। हम भोरेसँ दू बजेधरि अपन काज इमान्दारीपूर्वक कऽ लेने छलहुँ। ओहिना रेडियो पर स्वयंकेँ सजीव प्रशारणमे प्रस्तुत करएकेँ सजगता उदघोषककेँ थका दैत अछि। हम अक्छा रहल छलहुँ। हम ओहि नीरब स्टूडियोमे आओर काज करए नहि चाहैत छलहुँ।

हमरा ओहि नव उदघोषक उपर तामस आबि रहल छल। तखने एकटा लड़की विहारि जेकाँ प्रवेश कएलीह। हम थकाने आँखिसँ चौक कऽ हुनका देखलहुँ। ओ रैनकोट उतारैत कार्यक्रम संयोजककेँ अबेर होबएकेँ सफाई दऽ रहल छलीह। हुनक चेहरा भीजल छल आ केश पर पड़ल पानिक बुन्द चमकि रहल छल। शायद हुनका ठण्ढा लागि रहल छल। ओ सिकुरल जेकाँ छलीह। हुनकर आवाज बीच-बीचमे थरथरा रहल छल। हम हुनकासँ नाम पुछलहुँ।

ओ हमरा दिस बीना देखने उत्तर देलीह, 'बबली।'

ओ अपन प्रशारणक तैयारीमे जुटि गेलीह। स्क्रिप्ट बेर-बेर देखैत छलीह, बीच-बीचमे अपन कार्यक्रम प्रमुखक चेहराक आउ भाउ बुझैत थरथराइत लड़की हमरा बढ़िया लागल।

हमर हृदय हमरासँ कहलक, कोनो दिन हम एहि लड़कीक सँग एक कप चाह अवश्य पिबए चाहब।

वेटर हमरा आगु चाह राखि गेल अछि। भाफ निकलैत चाहकेँ हम मन्त्रमुग्ध भावसँ निहारि रहल छी। यदि अपने ई मानैत छी जे प्रेम होबए लेल एक क्षण बहुत अछि तऽ श्रीमान, ओ ओहे एक क्षण छल। जखन हम

पहिल बेर हुनका देखलहुँ आ हमरा हुनकासँ प्रेम भऽ गेल। हम बुझि नहि पेलहुँ जे ई आश्चर्यजनक अनुभव ई लड़कीकेँ देखि कऽ हमर हृदयमे जन्म लेने अछि आ हम बिहुँसि रहल छी।

ओहि दिन फेर कोनो काजमे हमरा मोन नहि लागल। कखन दिनक बाँकी काज कएलहुँ, कखन भोजन कएलहुँ, कखन रातिक कपड़ा पहिरलहुँ आ कखन ओछाएन पर जा सुति रहलहुँ समयक हिसाब ककरा लग छल ?

हृदय मस्तिष्क हैंग भऽ गेल छल। ओ क्षण जखन ओ भीजल थरथराइत, बरबराइत लड़की अपन प्रमुखकेँ अबेरसँ आबएकेँ कारण कहि रहल छलीह। हम अपन हाथ माथक पाछुमे दबा लेलहुँ आ पंखा दिस ताकए लगलहुँ।

हम बिहुँसलहुँ। पंखा सुन्दर अछि। फेर अलमारीकेँ देखलहुँ बढ़िया लागल। ओछाएन मोलाएम अनुभव भेल। जगमे पानि भड़ल-भड़ल छल। खिड़कीक पर्दा अपने हिल रहल छल। बाथरुमक गेटपर रहल लाल रंगक डोरमेट सुन्दर लागल। रेडियो नजदिके रहल भाड़ाक रुम एतेक सुन्दर पहिने कहिओ नहि लागल छल। पूरे घरमे चमक आबि गेल छल। आ हमर हृदय प्रकाशसँ भड़ल जा रहल छल।

दू सालसँ हम सँग-सँग काज कऽ रहल छी। हम हरेक समय हुनका विषयमे सोचैत रहैत छी। भीतरसँ ओ एकटा सुन्दर बच्चा लगैत छथि जे सभसँ प्रेम करैत छथि। आ सभक प्रेम चाहैत छथि। पूरे कर्मचारी हुनका पसिन करैत छन्हि। ओ प्रशन्न आ मिलनसार छथि। सुन्दर तऽ छथिए हुनकामे बहुत-बहुत खूबी छन्हि। ओ दोसर कर्मचारी जेकाँ पीठक पाछु अधिकारीसभकेँ आलोचना नहि करैत छथि। संगी उद्घोषक आवाजमे कमजोरी नहि खोजैत छथि। हुनकर अपन काजसँ शिकायत नहि होइत अछि। ओ लोककेँ अनावश्यक सलाह नहि दैत छथि। आ हुनकर चेहरा पर हरेक समय प्रशन्नता भड़ल रहैत अछि। हुनकर आवाज नम्र आ हुनकर पूरे व्यक्तित्वमे एकटा आश्चर्यजनक आकर्षण छन्हि। ओ जतए होइत छथि, ओ स्थान सैजि जाइत अछि।

हम चाहक कपकेँ स्थिरे-स्थिरे छुबि रहल छी आ ओकर गर्माहट हमर आँगुर होइत हमर हृदयधरि आबि रहल अछि। हम हुनका अपन नजरिसँ

देखए चाहैत छी। हम हुनका छुबए चाहैत छी। हुनका कहए चाहैत छी जे हम हुनकासँ कतेक प्रेम करैत छी। मुदा जखन सहीमे ओ हमरा आगा होइत छथि, हम हड़बड़ा जाइत छी। तखन वा तऽ मूर्खता करए लगैत छी वा व्यस्त वा उदासिन होबएकेँ ढोंग करए लगैत छी। हम कड़ासँ प्रस्तुत होइत छी। मानू मशीन रही आ ओकर अदभूत सौन्दर्य हमरा स्पन्दित नहि करैत अछि। हम चाहक एकटा बड़का घोट मारलहुँ। बहुत गर्म अछि। घोटएमे दिक्कत भेल।

जखन ओ हमरा आगासँ हटि जाइत छथि, हम गम्भीर चिन्तामे डुबि जाइत छी आ स्वयं पर बहुत तामस होइत अछि। की अछि ई, जखन ओ आगामे रहैत छथि, हमरासँ बात करैत रहैत छथि, हम उदासिन होबएकेँ ढोंग रचैत छी। आ जखन ओ कोनो दोसरसँ बात करैत रहैत छथि हम हुनका दिस ध्यानसँ देखए लगैत छी। अशिष्टताक सीमाधरि।

हम चाहक दोसर घोट लेलहुँ। ई पहिनेसँ ठीक छल। कतेको बेर हुनक आँखि हमर आँखिक एहि अशिष्टताक पकड़लक आ ओ बिहुँसि देने छलीह। तखन हम डेरा जाइत छी। आ मूर्ख जेकाँ इम्हर उम्हर ताकए लगैत छी। कोनो चीजपर जाहि पर पहिने नजरि पड़ि जाए। एतएधरि की गेट वा देवाल सेहो। हम बुझाबए चाहैत छी कोनो चीजकेँ गम्भीरतापूर्वक देखब हमर आदत अछि। हम ओहिना तकैत छी। मुदा हम चाहैत छी जे ओ बुझथि, हुनका बुझहेक चाही जे हम हुनका दिस किए तकैत रहैत छी। सहीमे ओ नहि बुझैत छथि हमर हृदयमे हुनका लेल कतेक प्रेम अछि ?

चाहक कप पर हमर हात मजगुत भऽ गेल अछि कपक गर्मीसँ हाथ जरि रहल अछि। एकबेर हम एकटा सहकर्मीक घर गेल छलहुँ, हुनक पुत्रक जन्मदिन छल। हम बुझैत छलहुँ रेडियोकेँ अधिकांश लोक ओतए पहुँचता आ बबली सेहो। हुनका तऽ ओतए अवश्य होएबाक चाही। हम बढ़िया कपड़ा पहिरलहुँ, महँग जुता, चमकैत घडी आ टाइ सेहो लगा लेलहुँ। ओहि दिन तैयार होबएमे हमरा बहुत देर लागल। ऐनाक आगामे बहुत कालधरि ठाढ़ होबए पड़ल। किछु संवादकेँ सेहो दोहरौलहुँ। हुनका की कहब ? कोन तरहे बात करब आ पुछब कहिओ रेडियोक आगामे रहल चाहक दोकान पर

गेल छथि ? ओतए बहुत बढ़िया चाह भेटैत अछि। ओ कहतीह, ओतए ओ कहिओ नहि गेल छथि मुदा जेती अवश्य आ हम झट्टसँ पुछब, 'किए नहि काल्हिए चलल जाए ?'

हम पूरा गम्भीरतासँ चाहक एक-एक घोट पिलहुँ। ओहिदिन पार्टीमे नहि पुछि पेलहुँ हुनकासँ। अवसरे नहि भेटल पूरे समय ओ ललन सर सँग बात करैत रहलीह। ललन सर कार्यक्रम संयोजक छथि। आ बबलीकेँ अधिकांश ड्यूटी हुनकेसँग रहैत छन्हि। किओ ललन सरकेँ शूटक प्रशंसा कएलन्हि आ बबली प्रशंसा भड़ल आवाजमे कहलन्हि जे ललन सरक शूट बहुत महग आ सुन्दर लगैत अछि। हमर चेहरा उतरि गेल। हमहुँ सुन्दर शूट पहिरने छलहुँ मुदा बबलीकेँ मात्र ललन सरक शूट देखाएल। हमर माथपर तनाव अछि। आ हमर पूरे ध्यान चाहक कपसँ उठैत भाफ पर अछि।

हम बुझैत छी जे ओ दुनू मात्र बढ़िया मित्र छथि, कारण ललन सरकेँ कोनो अन्य स्थान पर विवाह तय भेल अछि। किछुए दिनमे हुनकर हमसभ बरियाती जायब।

तैयो, हमरा हुनकासँ पुछि लेबाक चाही। हम फेर अपन रेडियो स्टेशन दिस ताकए लगलहुँ। हरेक एक क्षण एकटा अवसर अछि आ हरेक एक अवसर हमर मुट्ठीसँ बालु बनि खसि रहल अछि। हम बुझैत छी हुनका एहि तरहे हम नहि। कोनो नहि कोनो व्यक्तिसँ हुनकर विवाह भऽ जाएत आ कहिओ नहि कहिओ हमहुँ विवाह कऽ लेब मुदा हमरा हृदयमे जे अछि हुनकासँग जीवन बिताबी, हुनकासँग प्रेम करी, कोना सम्भव हएत ?

हम चाहक अन्तिम घोट लेलहुँ। हमर चाह समाप्त भऽ गेल छल आ आब हम खाली कप दिस ताकि रहल छलहुँ। काल्हिए हमर एकटा वरिष्ठ सहकर्मी अपन दीदी जेकाँ सम्झोने छलीह जे हमरा बबली दिस मित्रताक हात बढ़ा देबाक चाही। मात्र बबली बाहेक पूरे कर्मचारी बुझैत अछि जे हम हुनका कतेक पसिन करैत छी। पता नहि ओहो बुझैत छथि कि नहि ?

की पता ? हम सोचि रहल छी। चाहक पैसा दऽ दोकानासँ निकलि अएलहुँ आ अपन रेडियो स्टेशनदिस बढ़ि रहल छी।

एकदिन हम अपन माय के चिट्ठी लिखने छलहुँ, हम एकटा लड़कीके पसिन करैत छी। हुनका चाह पियाबएके इच्छा अछि। हुनकासँ विवाहक बात करबाक इच्छा अछि। मुदा लाख इच्छाक बादो हम एखनधरि चाहक दोकानमे जाए लेल नहि पुछि पाएल छी। कारण हमरा बहुत डर लगैत अछि। कहुँ ओ अस्वीकार कऽ देलीह। हम श्यामवर्ण के छी, पिरिसियाम। माय, तोरा अतिरिक्त कोनो महिला हमरामे ओतेक खूबी नहि देखि सकैत छथि जे हुनका हमरासँ प्रेम भऽ जाएत।

माय उत्तर देलन्हि, 'ककरोसँ प्रेम करब बढ़िया बात। हुनका जाकऽ बतादेव आओर बढ़िया बात। मुदा हुनका बीना बुझने कोनो निर्णयधरि पहुँच जाएब बढ़िया बात नहि। यदि तो सहीमे हुनकासँग अपन पूरे जीवन बितावए चाहे छे तऽ बीना एकोक्षण बितोने हुनकासँ पुछिले ओ की सोचैत छथि तोरा विषयमे, ई निर्णय हुनेके लेबए दही।'

हम रेडियो स्टेशनक पाकिर्ङ्गमे ठाढ़ छी, अनिर्णयके बन्दीमे। आगासँ बबली आबि रहल छथि। आई दिनमे हुनका ड्यूटी छलन्हि, हमरा बुझल अछि हुनकर चेहरा पर थकान भड़ल मुस्कान छन्हि। हम सही मे हुनका चाह पियाबए लऽ जाए चाहैत छी। हम सहजता आ लापरवाहसँ देखएके प्रयास कऽ रहल छी। हमर हृदय जोड़-जोड़सँ धड़िक रहल अछि। ओ एकदम हमरा आगामे ठाढ़ भऽ गेलीह। अनायसे हमरा मुहँसँ खैसि पड़ल, 'यदि ओ व्यस्त नहि छथि तऽ हमसभ चाह पिबए चलीह ?'

हुनकर चेहरा स्वीरोक्तिके संकेत दऽ रहल छल।



खजुरीबाली

खजुरीबालीक ओ पहिल दिन छल, जखन ओ बरियातीमे अपना माथ पर ट्यूबलाइटक गमला ढोबएबला रेजाक काज शुरु कऽ रहल छलीह। प्रथम ग्रासे मक्षिका पातः बला कहावत चरितार्थ भऽ गेल रहन्हि।

बरियाती चलले छल की पानि पड़ब शुरु भऽ गेल। सभ गोटे बढ़ियाँ जेकाँ भीज गेल, मुदा खजुरीबालीक भीजब किछु बेसीए असर कऽ गेल रहन्हि। हुनकासँग ११ रेजा आओर रहन्हि, ओ सभ बहुत दिनसँ ई काज कऽ रहल रहथि। हुनकासभकेँ अभ्यास छल, एहिद्वारे ओसभ गमलाकेँ एक हाथसँ पकड़ि कऽ सेहो चलि रहल छलथि, दोसर हाथसँ शरीरक पानि पोछि रहल रहथि। कखनो-कखनो तऽ ओ दुनू हाथ छोड़ि कऽ सेहो चलथि। खजुरीबाली संतुलन बनाबएकेँ हिसाबसँ एकदम काँच छलीह आ गमला दुनू हाथसँ पकड़ने बीना चलब मुस्किल छल।

अगहनक महिना, जाढ़ शुरु भऽ गेल छल। खजुरीबाली पानिसँ भीज कऽ काँपए लगलीह। कन्हासँ लागल ओढ़नी सेहो नीचा ससरि गेल। अपन छातीक उभार देखाए लगलाक कारण लजासन गेलीह। ओहि समय कोनो कीड़ा ससरति पैजामाक भीतरसँ हुनकर बामा पायर पर चढ़ए लागल। एहिसँ पहिने ओ जाँघधरि पहुँचए, खजुरीबाली बढ़िया जेकाँ

अव्यवस्थित भऽ गेल छलीह। हुनकर हाथ गमलासँ छुटि कऽ कीड़ा झाड़एमे लागि गेल।

गमला माथपरसँ नीचा खैसि पड़ल आ हुनकर पंक्तिमे चलि रहल सभ बती तार घिचेलाक कारण बन्द भऽ गेल छल। अन्हार होइते एकटा अराजकक स्थिति उत्पन्न भऽ गेल छल। रंगमे भंग पड़लासँ बरियातीबला आ बैण्डपार्टीक मालिक हुनका दुत्कारए आ फैजत करए लागल। नाँचि रहल किछु छौड़ासभ तऽ हुनका पर मुक्का चलाबएकेँ नियतसँ आगा बढ़ल, बगलसँ ट्रम्पेट बजबैत चलएबला जुबेर अपन दुनू हाथ पसारि कऽ हुनकर रक्षा कबच नहि बनल रहितथि तऽ हुनका कि होइत कहल नहि जा सकैत अछि।

बैण्ड मालिक तऽ हुनका ओहि समय काजसँ भगा देलन्हि। मुदा दोसरे दिन जुबेर हुनका दोसर स्थानपर काज दिआ देलन्हि। ओ पिरिसियाम रंगक छलीह आ मुहँक बनाबटसँ सेहो बहुत सुन्दर नहि रहथि, तैयो हुनकर आँखिमे एकटा भोलापन छल, मासुमियत आ दयनियता रहन्हि जे देखएबलाकेँ अपना दिस आकर्षित कऽ लैत छल। जुबेर अनुभव कएलन्हि जे हुनकर हृदयक कोनो कोनमे खजुरीबाली छुबि देने अछि।

खजुरीबालीके १५/१६ सन छोट उमेरमे सेहो बहुत त्रासदक स्थितक समाना करए पड़ल रहन्हि। ओ अपन गाम खजुरीमे मायबाबूक छत्रछाँयामे बहुत खुल्ला जीवन जीब रहल छलीह। अपन बढ़ैत यौवनक लऽ कऽ बहुत नव-नव सपना देखैत छलीह। एहि समयमे हुनकर घरपर जेना व्रजपात भऽ गेल छल। एक राति हुनकर मायबाबूकेँ अज्ञात समूह गोली मारि हत्या कऽ देने छल, एहि आशंकामे की गाममे भेल एक परिवारक हत्यामे हुनकर भाई फिरोजक हाथ रहन्हि।

किछु महिना पहिने हुनकर स्नातकधरि पढ़ल लिखल एक मात्र भाईया जंगल दिस चलि गेल रहन्हि जतएसँ ओ फिर्ता नहि आएल छलाह। हुनका गेला किछुए महिना बीतल हएत गामक एकटा ठेकेदार महेश मण्डल

घरपर रातिमे आधा दर्जनक समूहमे आएल अज्ञात समूह गोली चलौने छल । ओ गोलीसँ मण्डलक भाई आ भावोकेँ हत्या भेल ।

गाममे पुलिस नागरिक सुरक्षा समिति बनौने छल, महेश ओकर अध्यक्ष रहथि । अध्यक्ष होबएकेँ नाम पर ओ गामबला पर कतेको ज्यादती करैत छलथि । लोक हुनकासँ डेराइत छल, कारण पुलिस हुनकरसभक संरक्षक छल ।

फिरोज बराबर हुनकर सभक व्यवहारकेँ विरोध करैत रहथि । अतः ओ हुनका अपन घोषित विरोधी बुझैत छलाह । समितिक बैसार कऽ कऽ तय कएल गेल फिरोजे सुरागी कऽ कऽ हुनकर परिवारकेँ हत्या करौलन्हि अछि । बदलामे हुनको परिवारकेँ समाप्त कऽ कऽ बढ़िया उत्तर देल जाए । फेर एक दिन साँझ बीतिते हुनकर माय बाबूजीकेँ गोलीसँ मारि देल गेल । खजुरीबाली घरसँ बाहर छलीह । एहिद्वारे बैचि गेलीह ।

आब हुनका गाममे रहब खतरासँ खाली नहि छल । अड़ोस पड़ोसमे जे हुनकर शुभचिन्तक रहथि, सभगोटे सलाह देलन्हि जे भागि कऽ शहर चलि जाउथ । अपन माय बाबूकेँ अन्त्येष्ठीधरि नहि कऽ सकलीह । पुलिसे सभ किछु कएलन्हि । शहरमे कतेको स्थानपर भटकलाक बाद हुनका पहिल काज बरियातीमे ट्यूवलाइटक गमला उठाबएकेँ भेटल । जाहि लेल हुनका बहुत कड़ा परीक्षासँ बढ़ए पड़ल आ ओ असफल भेलीह । जुबेर सहारा नहि देने रहितथि तऽ पत्ता नहि हुनका की स्थिति भेल रहथि ? पड़ोसक गाममे जाहि लड़कासँ बाबू हुनकर विवाह तय कएने रहन्हि, ओहि घटनाक बाद डेरा कऽ ओहो मुहँ घुमा लेने छलाह ।

जुबेर हुनका एक दिन कहलन्हि, ‘हमर इच्छा अछि अहाँ बती उठाबएबला काज छोड़ि दिए बरु सिलाई कटाईक काज सिखू । बैण्डबतीक काज तऽ ओहुना भरि साल नहि चलैत अछि । विवाहक सिजन नहि रहलापर सभ बैण्डबला दोसर काजमे लागि जाइत अछि । किओ टेलरिङ्गमे, किओ फल बेचएमे, किओ मोवाइल रिपेरिङ्गमे, किओ टिभी रिपेरिङ्गमे, किओ घर रंगएमे, किओ रिक्सा चलाबएमे ।’

खजुरीबाली किछु देर सोँचलन्हि आ फेर बजलीह, 'हम ओ काज करए चाहैत छी जे अपने करैत होइ। अपने सिलाई जनैत छी, हमरा सिलाई सिखा दिअ....अपने क्लार्नेट आ ट्रम्पेट बजाबए जनैत छी, हमरो बजाबए सिखा दिअ हरेक कदमपर अहाँसँग हम चलए चाहैत छी। बरियातीमे हमर काज चाहे जे हुए, हमरा ओहिमे सहभागी होएब नीक लगैत अछि। गाना बजाना, नाचब आ आतिसवाजी हमरा भीतर एकटा लहरि पैदा कऽ दैत अछि हमरा भीतर रहल बहुत रास पीड़ा आ दुःख कम भऽ जाइत अछि।

जुबेर हुनका हृदयसँ चाहला आ हरेक प्रकारक मदत कएलन्हि। खजुरीबाली सेहो हुनकासँ खुलैत, घुलैत आ आत्मीय होइत चलि गेलीह। एक प्रकारसँ ओ हुनकर विस्थापित जीवनक सहारा देलन्हि। काज दिऔलन्हि, घर दिऔलन्हि, काम चलाउ पढ़ब लिखब सिखौलन्हि, चर्चित फिल्मी गीतसँ परिचित करौलन्हि आ सभसँ बड़का बात क्लार्नेट जेहन कठीन वाद्ययन्त्र सिखा देलन्हि। शायद ओ पहिल एहन लक्की हेतीह एहि शहरमे, जे क्लार्नेट बजाबए जेहन कलाकेँ साधि लेने होइथ।

खजुरीबाली क्लार्नेट सिख रहल छथि। जुबेर हुनका सारेगम... सिखा रहल छथि। अभ्यास घण्टो घण्टा दैनिक चलैत रहथि अछि। एकदिन खजुरीबाली क्लार्नेट पर ओ गीतक आवाज निकालि दैत छथि जेकरा ओ सिखौने नहि रहथि। 'खुदा जाने कि मै फिदा हुँ...खुदा जाने मै मिट गया...खुदा जाने ए क्यू हुआ है ....कि बन गए हो तुम मेरे खुदा।'

सिलाई मशीन पर ओ सिअब सिख रहल छथि। एकसँग पाइडिल पर पायरो चलाएब आ उपर कपड़ाकेँ सम्हारब। सिलाई सिखलाकबाद पहिल कपड़ा ओ जुबेरक लेल सिलन्हि। जुबेर आश्चर्यमे रहथि। महिलामे सिलाई कढ़ाई आ भानस करएकेँ गुण शायद जन्मजात होइत अछि।

ओ सिलेट पेन्सिल लऽ कऽ ककहारा सिखैत छथि। कम समयमे ओ लिखब पढ़ब सिख जाइत छथि। पहिनहो ओ गामक स्कूलमे दू चारि साल धरि अबैत जाइत रहथि। ककहाराक हुनका ज्ञान छल। कोनो चीज

सिखएमे लगन एहि तरहे लगा दैत छलीह जे हुनका सिखएमे बहुत समय नहि लगैत छल। एक दिन जखन ओ लिख कऽ चलि गेली तऽ जुबेरके एका एक नजरि ओहिपर पड़ल। पढ़ि कऽ आश्चर्यचकित रहि जाइत छथि। ओ लिखने रहथि जुबेर, हम्मर तऽ रोइया-रोइया कर्जासँ भरि गेल अछि। कोना चुकाएब ई कर्ज ? अपने तऽ हमरा जीत लेलहुँ अछि। आब तऽ खजुरीबाली पर खजुरीबालीक अधिकार नहि रहि गेल अछि। अपने नहि रहतिहुँ तऽ हमरा तऽ लोक जीबहो नहि देने रहथि। अपनेकेँ कहिओ हमर प्राणक आवश्यकता हुए तऽ निस्संकोच माँगि लेब।'

जुबेर बहुत उमेरधरि विवाह नहि कएने रहथि। हुनकर एकटा भैया रहन्हि नाजीर जे नोकरी करए दिल्ली गेल रहथि आ घरकेँ पूरा पूर बिसरि गेल रहथि। हुनकर कनियाँ आ बच्चा छल। हुनकरसभक पालएकेँ जिम्मेबारी जुबेरे पर आबि गेल रहन्हि। नाजिरकेँ कतहुँ अत्ता पत्ता नहि रहन्हि। नहि कोनो चिठ्ठी पतरी, नहि कोनो टेलिफोन। प्रतीक्षामे कतेको बर्ष बीत गेल। जुबेरकेँ हुनकर बाबू आ भौजीक नैहरिबला हुनका अपना घर बसाबएसँ रोकैत रहल ....। कतहुँ नाजिर आबि गेल तऽ !

एहिबीच हुनकर बाबू आ भौजी खजुरीबालीसँ बढ़ि रहल नजदिकीसँ चिन्तित होबए लागल रहथि। जखन हुनका लागल जे आब एकरा रोकब कठीन हएत तऽ भौजीकेँ नैहरिबला आ मौलबीसँ हुनकर बाबू बातचितकऽ निर्णय लेलन्हि जे जुबेरकेँ विवाह भौजी फतिमासँ करा देल जाए। फतिमा सेहो एहि आसमे घरमे टिकल रहथि। मनेमोन ओ नाजिरसँ घृणा करए लागल रहथि। यदि कोनो ढंगसँ आबियो जाइथ तऽ हुनकासँ जुड़ब मुस्किल छल।

जुबेर अस्वीकार कऽ देलन्हि जे ओ भौजीसँ विवाह नहि करता मुदा एहि मुद्दापर ओ पूरा पूर असगरे पड़ि गेला। चारु दिससँ दवाव हुनका पर हावी होबए लागल। सभक सहानुभूति फतिमाक सँग छल। जुबेरक आगा एकटा बड़का धर्म संकट जन्म लऽ लेलक।

जुबेरक अस्वीकार सुनि कऽ भौजी सेहो तामसमे रहथि, 'की हम एतेक खराब लगैत छी ? बर्षोसँ एहि घरमे रहैत छी, अहाँसभकेँ सेवा करैत छी एकर फल हमरा इहे प्राप्त हएत जे घरसँ भागए पड़त ? नाजिरकेँ गेलाक बाद एहिठाम रहलहुँ तकर एकटा आस अहीँ छलहुँ आब अहीँ अस्वीकार कऽ देब तऽ हम कतए जा कऽ रहब ? यदि इहे करबाक छल तऽ अहाँ एतेक दिन विवाहक लेल किए रुकलहुँ, कऽ लैतहुँ तऽ हमहुँ कोनो उपाय खोजि लैतहुँ । अपन जीवनक ८/१० साल एहिना कऽ नहि बर्बाद करितहुँ ।'

फतिमाक आवाज एकटा निरास निहौरा जेकाँ नोरसँ तर उपर भऽ गेल रहन्हि । हुनकर ८ सालक बेटा जुबेरक पीठ पर झुलए लागल छल । मायक पक्षमे कहि रहल हुए एतेक दिनधरि दुलार कएलहुँ आब दोसर घर पठा देब छोटका बाबू ?

जुबेर की उत्तर दैतथि, हुनका लग जवावे नहि रहन्हि । फतिमा गलत नहि कहि रहल छलीह । ओ सहीमे हुनका कतेक ध्यान रखैत छलीह, खाए पीबए सँ लऽ कऽ पहिरब ओढ़ब आ सुतएधरिकेँ । बच्चा तऽ मानू हुनकर हँसब खेलाएकेँ एकटा माध्यम छल ।

ई असमंजस चलिए रहल छल की खजुरीबालीक पूर्व मंगेतर एकदिन जुबेरसँ भेटए चलि अएलाह । खजुरीबालीक दिनचर्या आ हालचाल पर अपन गम्भीर नजरि गड़ौने रहथि । ओ जुबेरसँ धम्कौलन्हि, 'अपने खजुरीबालीकेँ सहयोग कएलहुँ, हुनका साहारा देलहुँ एहिकेँ हम बहुत सम्मान करैत छी मुदा अहाँ हुनकासँ विवाह नहि कऽ सकैत छी । हुनकर हमरेसँ तय भेल अछि, हम हुनकासँ विवाह करब ।'

'एतेक दिनसँ अहाँ कतए छलहुँ ? हुनका तऽ कहिओ खोजो खबरि नहि लेलहुँ, जखन की समस्याक समय अपनेकेँ साथ देबाक चाहैत छल ।'

'हम गामक गरीब लोक, हम बहुत डेरा गेल छलहुँ । महेश मण्डल बहुत कसाई लोक छलथि । ओ हमरा धम्की देने रहथि जे खजुरीबालीसँ विवाह करबए तऽ हमरा गामसँ बाहर कऽ देल जाएत ।'

'की आब ओ अहाँकेँ घरसँ बाहर नहि करता ?'

'हम आब खजुरीबालीसँग शहरेमे रहि सकैत छी।' खजुरीबालीके आत्मनिर्भरता बेरोजगाार ओ युवकके अपना दिस आकर्षित कएने छल।

'की एहि विषयमे खजुरीबालीसँ किछु पुछलहुँ अछि ? ओ अहाँसँ विवाहक लेल तैयार छथि ?'

'पूरे गाम जनैत अछि हुनकर बाबू खजुरीबालीसँ हमर विवाह तय कएने रहथि ओ तैयार होइथ नहि होइथ अहाँ हुनकासँ विवाह नहि कऽ सकैत छी। यदि कएलहुँ तऽ ठीक नहि हएत।'

जुबेर सन्न रहि गेलथि। अपन भौजीसँ विवाहक मुद्दा पर ओ निस्ठुरतासँ नाघियो जाइत मुदा एहि प्रकारक धम्कीकेँ कोना समाप्त कएल जाए ?

एक दू दिन ई बात नुकेलथि मुदा खजुरीबालीके पता चलिए गेल। खजुरीबाली ओ पूरे घटना सुनलन्हि तऽ मानू हुनकर देहक सम्पूर्ण खून जमि गेल हुए जेना लागल।

कदम-कदम पर महिलाकेँ बली देवाक लेल कसाई तैनात अछि। अपनाकेँ बचा कऽ एतए धरि लेलथि, जुबेर जेहन व्यक्ति भेटल आबो तलवार तानल अछि। खजुरीबाली जुबेरक आँखिमे सभ किछु लुटाएल जेहन अवस्था पढ़लथि। ओ हुनकर एहन अवस्था कहिओ नहि देखने रहथि।

फेर हुनका भौजीबला बात सेहो पता छल। कनिक देरक लेल ओ असमञ्जसमे परि गेलीह। मुदा बिहुँसैत खजुरीबाली जुबेरकेँ हाथकेँ अपन आँजुरमे भरि लेलथि। प्रेमक अगाध, अलौकिक आ स्निग्ध सम्मोहनक सँग हुनका दिस तकलीह आ कहलीह, 'अहाँ चिन्ता नहि करु जुबेर। अहाँकेँ अपन भौजीएसँ विवाह करब आवश्यक अछि। अपनेक लेल हमरा मोनमे कनिको शिकायत नहि अछि। ओना हम अपन पूर्व मंगेतरसँ निपटि लेब। हम हुनकर कोनो खरिदल सामान नहि छी। ओ कतेक पानिमे अछि,

ओकर ओकात बता देब । जानपर खेल जाएब मुदा ओकरासन मतलबीकेँ नजदिको नहि आबए देब.........अपने हमरा एतेक मजगुत बना देलहुँ अछि जे हम असगरो जीवन जीब सकैत छी । जतेक किछु अपनेसँ हमरा भेटल अछि, हम जीवनभरि अपनेकेँ कर्जदार रहब ।'

जुबेर हुनक हाथकेँ चुमि लेलन्हि, 'आइ अहाँ हमरा ई अनुभव करा देलहुँ जे अहाँ खजुरी गामसँ आएल डेराएल खजुरीबालीसँ बदलि कऽ एकटा सशक्त महिला भऽ गेल छी । हमरा गर्व अछि अहाँकेँ देखि कऽ, अहाँसँ विवाह कऽ पबितहुँ तऽ हमरा लेल अल्लाहकेँ सभसँ बड़का कृपा होइत । फतिमासँ विवाह करब हमरासँ बेसी दोसरकेँ खुशी देत । हम विवाह नहि, त्याग कऽ रहल छी । एहि बातक जीवन भरि अपसोच रहत अहाँके हम अपना नहि बना सकलहुँ ।'

'अपनेकेँ भलेही लगैत हुए हमरा अपना बना नहि सकलहुँ मुदा हम तऽ अपनेहीकेँ बनि कऽ जीवन भरि जीअब जुबेर । हृदयक संसारमे विवाह, मजवुरी आ रोकाबटक कोनो स्थान कहाँ होइत अछि ?'

'हमरा खुशी भऽ रहल अछि ई बुझि कऽ की अहाँ हमरासँ तमसाएल नहि छी आ स्वयंकेँ हमरासँ अलग नहि बुझैत छी । अहाँक एहि बात पर हमरा शक्ति भेटल अछि ।'

खजुरीबाली जुबेरकेँ अपन बाहिमे भरि लेलन्हि । हुनका मोनमे एकरतीक लेल आएल समय एतहि रुकि जाइत । मुदा से सम्भव नहि छल ।



सुखक संसार

ओहि राति नारायणघाटक चौकपर बसक प्रतीक्षा कऽ रहल छलहुँ। बसमे अबेर छल समय काटए लेल हम एकटा बेंच पर बैसि गेलहुँ, हमरे जेकाँ बहुतो यात्री बसक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। नारायणघाट होइत बहुतो ठाम गाड़ी चलैत अछि। हम ध्यानसँ देखलहुँ दर्जनो लोक ओहिठाम बैसल छल। किओ गोटे सड़ककातमे रहल रैलिङ्ग पर, किछु गोटे कुट ओछाकऽ बैसल छल। किछु गोटे अपन परिचित आ मित्रसँग बतिआ रहल रहथि। किछु गोटे इम्हरसँ उम्हर टहलि रहल रहथि तऽ किछु गोटे चाह, बिस्कुट, अण्डा, चाउचाउ ठेला लग ठाढ़ रहथि आ अपन ठण्ढ दूर कऽ रहल रहथि। दू गोटे कामदार ठण्ढसँ सिकुड़ि कऽ बिड़ी पीब रहल छलथि।

हम घड़ी दिस ध्यान देलहुँ, ११ बाजि रहल छल। बसकेँ अबेर भेलाक कारण कहुँना समय बिताबएकेँ छल। ठण्ढा हावा तीर जेकाँ चुभए लागल छल। हम ब्यागमेसँ उनी टोपी निकालि पहिर लेलहुँ। ठण्ढ किछु कम भेल लागल। ठण्ढा हावा चलए लगलाक कारण ठण्ढ बढ़ल अछि। लोक पर सेहो एकर असर देखाए लागल छल। ओहुँना पुस माघक राति बहुत ठण्ढ होइत अछि, मुदा हमरा लागल एहि साल किछु बेसिए ठण्ढ अछि। सड़कक ओहिपार नजरि गेल, देखाएल धुँवा जेकाँ पूरे धुनि लागल अछि।

ओहि बीच जड़ैत बिजलीक बल आगि जेकाँ देखा रहल छल । दूर किछु आगिक बड़का लुतीसभ देखा रहल छल । लागल किछु लोक घूर तापि रहल अछि । हमहुँ ब्यागमेसँ उनी शाल निकालि कऽ ओढ़ि लेलहुँ । बस अबेर होबएकेँ कारण घर पहुँचएमे अबेर भऽ जाएत ई सोचि कऽ चिन्ता बढ़ल ।

तखने घण्टी सुनि कऽ हमर ध्यान अपन मोवाइल फोनपर गेल ।

देखलहुँ पुतहुँ रागनीक फोन छल । हुनकासँ बात करए लगलहुँ, 'हँ कहू कनियाँ की बात अछि ?'

ओ पुछलीह, 'बाबूजी कतए छी, घर कखनधरि आएब ?'

हम कहलहुँ, 'नारायणघाट चौक पर बसक प्रतीक्षा कऽ रहल छी । बस आबएमे अबेर अछि, एहिद्वारे घर आबएमे सेहो अबेर भऽ सकैत अछि ।'

पुतहुँ चिन्ता भड़ल स्वरमे कहलीह, 'ओह ! बाबूजी बसमे अबेर अछि तऽ कोनो माइक्रोसँ चलि आउ ठण्ढा बहुत अछि ।'

हम कहलहुँ, 'बसक टिकट लऽ लेने छी फेर माइक्रोकेँ कतहुँ अतापता नहि अछि । अहाँ हमर ओते चिन्ता नहि करु भोजन कऽ कऽ आराम करु ।' ई कहि कऽ हम मोवाइल बन्द कऽ लेलहुँ आ ओकरा जेबमे राखि लेलहुँ । मोनमे आएल पुतहुँ बहुत ध्यान रखैत छथि । रिंकु बेटीकेँ विवाहक बाद पुतहुँ ओकर स्थान लऽ लेलीह । हमर सुख सुविधाक पूरा ध्यान रखैत छथि । मोनमे हुनका प्रति स्नेहभाव जागृत भऽ गेल । फेर हमर ध्यान हमरे लग बैसल एक वृद्धदिस पड़ल । ६०/६५क उमेर छलन्हि हएत । घण्टीक आवाज सुनि ओहो जेबमेसँ मोवाइल फोन निकालि किनकोसँ बात करए लगलथि ।

'नहि ....नहि ....हम घर नहि अएबौक ...जतए इच्छा हएत ओतए चलि जाएब । बेटा तो रह, तोहर कनियाँ घरमे छौक, हमर की आवश्यकता ?... तोरा जरुरत छौक झूठ बात । कारण आइ काल्हि तहूँ कनियाँकेँ पक्ष लेबए लागल छेँ । हुनकर गल्तीपर सेहो किछु नहि कहैत छीही ....आ तोहर कनियाँकेँ उपराग सुनि-सुनि कऽ हम परेशान भऽ गेल छिऔक तो हमरा

बोझ बुझैत छैँ एहिलेल हमरा घर छोड़ब ठीक अछि....तो दुनू रह मोनसँ .....आ सुन, हम जा रहल छी ...हमरा खोजएकँ प्रयास नहि करिहए आ नहि फोन करिहैँ,' एतेक कहि कऽ ओ अपन मोवाइल बन्द कऽ लेलन्हि ।

हुनकर चेहरा देखि कऽ लागल ओ बहुत परेशान छथि । परिवारसँ तमसा कऽ घर छोड़ि रहल छथि । घरसँ दूर कतहुँ जाए चाहैत छथि । ....हम सोचए लगलहुँ जखन मनुष्यकँ मोन अशान्त हुए तऽ की बाहर शान्ति भेट सकैत अछि ? की शान्ति एतेक आसान होइत अछि ? की ई विचलनक स्थिति नहि अछि ?.....फेर लागल झूठेकँ एक पक्षिय बात सोचि रहल छी ।

हिनका दोष दऽ रह छी । भऽ सकैत अछि ओ अपना स्थान पर सही होइथ हुनका विषयमे पूरा बात सुनबाक उत्सुकता भेल मुदा अपरिचित होबएकँ कारण लज्जावस किछु नहि पुछि सकलहुँ । किछु देरक बाद बातचितक पहल हुनके दिससँ भेल । ओ पुछलन्हि, 'भाइजी कतए जेबैक ?'

हम कहलहुँ, 'हेटौडा ।'

फेर ओ पुछलन्हि, 'अपनेकँ ई बुझल अछि पोखरा कखनधरि गाड़ी पहुँचैत अछि ? आ ओतएसँ मुक्तिनाथ जाएकँ साधन की भऽ सकैत अछि ?'

हम हुनका जानकारी देलहुँ, 'भोरधरि पोखरा पहुँच जाएब फेर ओतएसँ लोकल बससँ जा सकैत छी ।'

फेर ओ पुछलन्हि, 'ओहि लगपासमे आओर कोनो धार्मिक स्थल अछि, जतए जा सकी ?'

एना लागल जे हुनका मोनमे विचलनक स्थिति अछि । कतए जाएब, एकर निर्णय नहि लऽ पाबि रहल छथि । हुनकर मानसिकताक किछु आभास भऽ गेल छल । हुनका लग छोट ब्याग छल । लागल ओहिमे अवश्य कोनो सामान हएत । ठण्ढासँ बचए लेल कम्बल वा किछु अन्य देखाई नहि दऽ रहल छल । लागल, यात्राक क्रममे हुनका मौसमक समस्या सहए पड़त ।

तखने हुनके सनक उमेरक एक व्यक्ति एकटा ओढ़ना ओढ़ने हुनका आगामे ठाढ़ भऽ गेला । शायद हुनकर परिचित छलाह । बजला, 'घुरनजी अपने एतए बैसल छी ?...हम अपनेकेँ बहुत कालसँ खोजि रहल छी ।'

घुरन जवाव नहि देलन्हि । दुनू हाथ जोड़िकऽ नमस्कार कएलन्हि ओ हुनका लग बैस गेला आ बजला, 'मेहमान आ निलुकेँ सेहो अपनेकेँ लऽ कऽ चिन्ता अछि । ओ फोन कऽ कऽ अपनेक विषयमे बतौलन्हि तऽ हम सभकाज छोड़ि कऽ अपनेकेँ खोजए चलि अएलहुँ । बहुत देरधरि बजारमे खोजलहुँ ओतए नहि भेटलाक बाद एतए चलि अएलहुँ, बढ़िया भेल अपनेसँ भेटि भऽ गेल ।'

घुरन किछु नहि बजलाह । आगन्तुक सम्झाबएकेँ भाषामे कहलन्हि, 'समधि, तमसाकऽ घर छोड़ब ठीक नहि अछि ।'

घुरन कहलन्हि, 'समधि हमरा एहिना छोड़ि देल जाए ।'

भगवती बाबू बजला, 'अपने जाएल जेतैक कतए ?'

घुरन कहलन्हि, 'कतहुँ ....बहुत बड़का संसार अछि ।'

आगन्तुक जिनक नाम भगवती बाबू छल से आत्मीय भड़ल शब्दमे कहलन्हि, 'समधि एहि तरहे घर छोड़िकऽ जाएब ठीक नहि अछि । अपने ओ घरक मुखिया छी । बच्चापर अपनेक अशीर्वाद बनल रहबाक चाही ।'

घुरन कनि पीड़ाएल स्वरमे जवाव देलन्हि, 'नहि आब ओ घर हमर नहि अछि, अपनेक बेटी आ जमाएकेँ छन्हि । ओ हमरा बहुत मोन दुःखौलन्हि अछि । आब हम ओतए नहि रहए चाहैत छी । एहि विषयमे ककरो बात नहि सुनब ।'

भगवती बाबू कहला, 'मुदा अपने हमर प्रार्थना सुनल जाओ । हम अपनेसँ सम्बन्ध जोड़लहुँ अछि । अपन बेटी अपनेकेँ देलहुँ अछि ओकरा अपनेक आवश्यकता छैक ।'

घुरन बजला, 'झूठ बात अछि हुनकासभकेँ हमर कोनो आवश्यकता नहि अछि । विशेष रुपसँ हमर पुतौहकेँ तऽ आओर नहि । हमरा बोझ बुझैत छथि । कोनो बातमे हमरासँ झगड़ा करए लगैत छथि, हमरा नीचा

देखाबएकेँ कोशिस करैत छथि ।...बेटा सेहो हुनके पक्षमे रहैत अछि। हुनका किछु नहि कहैत अछि, एहनमे हम कतेक दिन बर्दास्त करु ? ...एहिद्वारे हमरा ओतएसँ जाएबे उचित अछि ।'

भगवती बाबू आश्चर्य भड़ल शब्दमे कहलन्हि, 'मुदा समधि, एखनो हमरा बुझएमे नहि अबैत अछि। अपने एतेक तमसाएल किए छियैक ? बेटी किए अहाँकेँ अपमान करैत अछि ?'

घुरन गम्भीर मुद्रामे जवाव देलन्हि, 'ओ विवाहमे दहेजक नामपर लेल गेल पैसाक लऽ कऽ ताना दैत रहैत छथि। बच्चाकेँ अनावश्यक रुपसँ पिटैत छथि ।'

'तिलकमे लेल गेल रुपैयाँ अपनेकेँ बुझल अछि, सभ विवाहसँ लऽ कऽ द्विरागमन धरिमे खर्च भऽ गेल ।....हमर मान सम्मानकेँ एहि बातसँ ठेस पहुँचैत अछि। जीवनभरि स्वाभिमानसँ माथ उठा कऽ जिलहुँ अछि। एहिना मरएधरि जीबए चाहैत छी ।'

भगवती बाबू बजलाह, 'मुदा समधि हम कहिओ तिलककेँ बात मुहोपर नहि उठेलहुँ अछि ।'

'हँ अपने नहि बाजल छी, मुदा अपनेकेँ बेटी बेर-बेर बजैत रहैत छथि । हम एहिसँ तंग आबि गेल छी एहिद्वारे घर छोड़ए चाहैत छी... '

कहैत-कहैत हुनकर गला अबरुद्ध भऽ गेल। हृदयक पीड़ा आ कष्टक भाव हुनकर चेहरा पर आबि गेल ।

भगवती बाबू बहुत विनम्रतासँ बजला, 'नहि समधि एना नहि करु । हमरा बेटीमे बाल्यपना अछि। ओ सम्बन्धक गहराई आ ओकर महत्व नहि बुझैत अछि। हम ओकरा सम्झाएब जे अपनेकेँ सम्मान करए ।.....बात ई अछि जे ओ चारि भाय बहिनमे असगरे बहिन अछि फेर सभसँ छोट ताहिद्वारे बेसी प्रेम आ सुख सुविधा पाबिकऽ ओ उग्र आ बेसी स्वार्थी बनि गेल अछि। अहंकारक कारण ओ दोसरकेँ भावनाकेँ नहि बुझैत अछि। हम ओकरा बुझाएब ....अपने ओकरा कारणसँ घर नहि छोड़ल जाए ।'

घुरन हुनक बात ध्यानसँ सुनला । फेर कहलाह, 'हमरा नहि बुझाइत अछि अपनेकेँ सम्झौलासँ अपन स्वभाव बदलि देतीह । एहिद्वारे बढ़िया हएत, हमरा हुनकासँ दूरे रहए दिअ हमरा नहि रोकू ।'

भगवती बाबू हुनकर बातसँ उदास भऽ गेलथि । ओ उदासे स्वरमे बजलाह, 'हमरा बातक भरोषा कएल जाए घर चलू ।'

घुरन चुप्प भऽ गेलथि किछु देरक बाद भगवती बाबू पुछलन्हि, 'एखन अपने जेबै कतए ?'

घुरन बजलाह, 'तीर्थ स्थान पर जाएब जतए मोनक शान्ति भेटत । पोखरा आ ओहिसँ नजदिकक धार्मिक स्थल पर रहब । अपन जीवन सार्थक करब ।'

एहि पर भगवती बाबू बजलाह, 'तखन तऽ हमहुँ चलब अपने सँग समधि ।'

घुरन ई सुनि कऽ चौंक गेलथि । बजलाह,' अपने हमरासँग किए जाएब ? अपनेकेँ कोन समस्या अछि ? अपने सुखक संसारकेँ छोड़िकऽ हमरासँग किए जाएब ? लगैत अछि हमरासँग मजाक भऽ रहल अछि ?'

'मजाक नहि सच्चे कहलहुँ अछि समधि । प्रश्न ई अछि गल्ती हमर बेटी कएलक अछि, सजाय अपने असगरे भोगब ?'

'...हम अपन बेटीकेँ पढ़ेलहुँ लिखेलहुँ अवश्य मुदा बढ़िया संस्कार नहि दऽ सकलहुँ । ओकरा परिवारमे रहबाक गुण आ बड़काकेँ सँग सदव्यवहार करबाक तरिका नहि सिखेलहुँ एकरे परिणाम ई सभ अछि । हम ओकरा सहीबाट पर लाबए लेल अपनेसँग चलब तखने ओकर आँखि खुजत ।....बताओल जाए पोखरा जाएबला बसक टिकट कतए कटाइत छैक । हमहुँ टिकट लऽ लैत छी ।'

घुरनकेँ लगलन्हि सहीमे ओ हुनकासँग जएबाक लेल तैयार छथि । हुनका लेल अपना घर छोड़ए लेल तैयार छथि । मोनमे हुनका प्रति आदर आ प्रेमक भाव चलि आएल । किछु देर रुकि कऽ बजलाह, 'समधि हमरा

विश्वास अछि अपने हमर पतहुँकेँ सम्झाएब।.... अपनेक मनुहारक शितल जल हमरा तामसक आगिकेँ ठण्ढा कऽ देलक अछि।...हम कोनो तीर्थ पर नहि जा रहल छी, अपन घर जाएब।'

उम्हर कएटा रुटक बस एक्के बेर आबि गेल। यात्रीक चहल-पहल बढ़ि गेल, हमहुँ हेटौड़ा जाएबला बसमे चढ़ि गेलहुँ। दुनू समधि लग कतहुँ जाए लेल टिकट नहि छल एहिद्वारे बस अएलाक बाद कोनो धरफरी नहि।

हम देखलहुँ, दुनू बहुत निश्चिन्त भऽ कऽ नारायणघाटक ओ चौकसँ घर जा रहल छलाह।



अस्पतालक बेंचपर

डाक्टरक क्लिनिकसँ बाहर निकलि दबाई लेलहुँ। घड़ी पर नजरि देलहुँ, १ बाजि रहल छल। डेढ़ बजेधरि बेटा भोजनक लेल अफिससँ निकलत तखने इम्हरसँ जाइत-जाइत हमरोसँग घर लऽ जाएत। सोचलहुँ, झूठेकँ टैक्सी वा रिक्सामे पचास सय रुपैयाँ देबएसँ बढ़िया, आधा घण्टा इहे अस्पतालक बेंचपर सुस्ताइत ओकर प्रतीक्षा कऽ ली।

पर्ससँ मोवाइल निकालि कहिँ देलहुँ जे हम अस्पतालमे ओकर प्रतीक्षा कऽ रहल छी। मोवाइल पर्समे राखि पानिक बोतल निकालि दू घुट पीकऽ गला साफ कएलहुँ।

नैहरिसँ घुरएकाल अस्पताल देखि सोचलहुँ सुगर जाँच कराली। गर्मी बेसी पड़लाक कारण घरसँ बाहर निकलब कठीन होइत अछि।

डाक्टर उम्हरसँ घुमलाह तऽ किछु देरक लेल रुकि गेलाह, 'अपने गेलहुँ नहि।'

'नहि, बेटा लेबए आबि रहल अछि।'

डाक्टर आगा बढ़ि गेलाह हम अपन मेडिकल बुक देखैत ओहिना बेंच पर बैसि रहलहुँ।

तेज गतिसँ जाइत-जाइत जेना किओ हमरा आगा रुकि गेल। हम नजरि उठेलहुँ।

दुब्बर पातर, श्याम वर्ण, कनिक झुकल देह, पुरान साड़ी, ढिलढाल ब्लाउज, हाथमे झोड़ा लेने आ एकटा पुरान कारी छत्ता ओ एहि तरहे तेजीसँ गेटक दिस बढ़ैत-बढ़ैत हमरा आगा ठाढ़ भऽ गेल जेना किओ परिचित हुए।

ओ रुकि कऽ बाजल, 'डाक्टर कहैत अछि स्नानकबाद शरीर पर बढ़िया जेकाँ नारियल तेल लगाबए। खाली दबाई खएलासँ किछु नहि हएत।' एतेक कहिकऽ जवाव बुझए लेल हमरा दिस तकलक। हम आश्चर्यसँ ओकरा देखैत रहलहुँ फेर किछु सामान्य भऽ कऽ पुछलहुँ, 'की भेल अछि अपनेकेँ ?'

'खौसी...प्रत्येक दिन नारियलको तेल कहाँबाट ल्याउने ?'(खौसी...कतएसँ लाउ प्रत्येक दिन नारियलकेँ तेल) नेपाली आ मैथिलीमे ओ अपन बात बाजल।

'नेपालीसभ तऽ ओहिना तेलमे नहाएल रहैत अछि,' हम सेहो नेपालीमे जवाव देलहुँ।

'ई तऽ ठीक अछि मुदा तेलक दाम कतेक बढ़ल अछि बुझल अछि ?' हम गौर कएलहुँ ओकर उमेर ७०/७५ बर्षक छल हएत। बातसँ सुसंस्कृत पढ़ल महिला लागल।

'तीन-तीन छोरा, ' ओ किछु देर रुकि कऽ सोचैत रहल, ' हमरा तीन-तीनटा बेटा अछि, मुदा कोनो काजक नहि सभ नालायक अछि ...।' कहि कऽ ओ दुःखसँ मुहँ दोसर दिस घुमा लेलक।

'ककरा कही, की कहूँ ? लाज लगैत अछि।' ओ स्थिरेसँ झोड़ा आ छत्ता कोरामे सम्हारिकऽ हमरे लग बेंच पर बैसि रहल। स्थिरेसँ दुःख भड़ल आवाजमे बाजल, 'काल्हि राति की भेल बुझल अछि ?'

ओ हमरा दिस टकटकी बन्हने उत्तरक प्रतीक्षा कऽ रहल छल। हम आँखिमे प्रश्न लेने ओकरा दिस तकैत रहलहुँ। ओ स्वयंकेँ सम्हारैत

बाजल, 'काल्हि राति...सानो छोरा...बुढ़ोलाई मार्यो.....तपाईनै भन्नुस की एहि उमेरमे ओ मारि सहि सकैत छथि ? ओ तऽ चलिओ फिर नहि सकैत छथि बेचारा.....' ओ आँचरसँ आँखि पोछलक हम आब ध्यानसँ ओकर सीथ दिस देखलहुँ जतए सिन्दुर लागल छल ।

उजरल फुजरल केशमे सिन्दुरक रेखा हम एखनधरि नहि देखने छलहुँ ।

'कारखानाक रिटायर कर्मचारी होबएकेँ कारण मंगनीमे अस्पतालसँ हमरा दुनू गोटेकेँ दबाई भेटैत अछि । नहि तऽ हम दुनू गोटे मरि गेल रहितहुँ ।'

ओ किछु देर दुःखसँ भड़ल दोसर दिस देखैत रहल, फेर हमरा दिस तकैत बाजल, 'बड़का बेटा सड़क विभागमे अछि । ककरोसँ कोनो सम्बन्ध नहि, भाइसभसँ सेहो नहि भेटैत अछि । माइलो छोरो ... (मझिला बेटा) ओहुँसँ बेसी हरामी ....'

ओ किछु देर रुकैत फेर उदास स्वरमे वाजल, 'की कहू ? भगवान ओकरा ओकर करणीक सजाय दऽ देलक । लड़की बढ़िया जेकाँ नाक कान कटा देलक बापकेँ ....हमसभ उपाध्याय ब्राह्मण छी ....मुदा ओ लड़की मुसलमानकसँग प्रेम विवाह कऽ लेलक । बेचारा हमर छोरा जेहन हुए मुदा हमरा ओकरा देखिकऽ बहुत दुःख होइत अछि । आठ महिना भऽ गेल ओ घरसँ कतहुँ चलि गेल । मुहँ नुका कऽ कतहुँ कनैत हएत हमर बच्चा । एखनधरि फिर्ता नहि आएल अछि,'...ओ फेर आँचरसँ आँखि पोछलक ।

'कानि-कानि कऽ हमर आँखि सेहो खराब भऽ गेल अछि । डाक्टर प्रधान कहलन्हि, आँखिकेँ जल्दिसँ अपरेशन करबा लेबाक लेल । हम कहलहुँ डाक्टर साहेबकेँ, हमरा के देखत ? अपरेशन तऽ मंगनीमे भऽ जाएत मुदा तकरबाद देखभाल केँ करत ?'

...हम ओहि जमानाकेँ एसएलसी पास छी । जवान छलहुँ तऽ खूब टियुशन कएलहुँ घर चलाबए लेल आब तऽ किछु देखि नहि सकैत छी ।

चश्मा सेहो काज नहि करैत अछि। काल्हि राति जे भेल, मोन बहुत दुःखित अछि बुढ़ाक लेल, मुदा एकटा बात अवश्य अपनेकेँ कहब, 'हमर छोटका छौरा (लड़का) जतेक हरिफ अछि ओहिसँ विपरित बुहारी (पुतहुँ) अर्थात बहुत नीक अछि। काल्हि राति छोटकी पुतहुँ बेटाकेँ खूब डटलक, खूब बाजल, 'तोहर बेटा सेहो सभ देखैत छौक ओकरो बड़का होबए दही एहिना हेतौक तोरो सँग, लात मारतहुँ।'

पुतहुँ बढ़िया अछि लड़का बदमास। ओ चुप-चाप आबए जाएबलाकेँ देखैत रहल। एतेक देर हम ओकरा सांतवना दैत कहलहुँ, 'दोसरकेँ बेटीकेँ ओहिना दोष दैत रहैत छी मुदा दोष ओकरामे नहि, बेटामे होइत अछि। चलू बढ़िया लागल ई बुझि कऽ जे अहाँकेँ पुतहुँ तऽ कमसँ कम अहाँसभपर ध्यान रखैत छथि,' हम ओकरा बाँहिपर सांतवनासँ अपन हाथ थपथपेलहुँ।

'पोताकेँ किताबक लेल पैसा नहि छल तऽ आइए पाँच सय रुपैयाँ पुतहुँकेँ दऽ कऽ अएलहुँ अछि। हम ओहि जामानक एसएलसी पास छी, हम बुझैत छी बच्चाकेँ पढ़ाई लिखाई कतेक आवश्यक अछि।'

'अपने एतेक मदत करैत छी तैयो अहाँक बेटा....?'

'नहि ...नहि ...ओ बेचारा लग सेहो पैसा नहि छैक, ओकरा नोकरी चाकरी नहि छैक कतएसँ करत खर्च ?'

हम बिहुँसलहुँ। मायक ममतासँ ओकर आँखि छलछला रहल छल।

'तरकारीक लेल सेहो पुतहुँकेँ पैसा दैत रहैत छी, हरेक महिना आठ हजार रुपैयाँ पेन्सन अबैत अछि। ओहिसँ ओकर घरक खर्चा करैत छी, तैयो बजैत अछि ...तोसभ कहिआ मरबए...जखन ओसभ छोट-छोट छल तखन कनिको बोखार भेलाक बाद चिन्तासँ राति-राति भरि जगैत छलहुँ। भोलाबाबाकेँ कतेक पूजा करैत छलहुँ आइ ओ हमर बच्चासभ हमरे मृत्यु भगवानसँ मंगैत अछि।'

धीरे-धीरे छत्ता आ अपन झोड़ा सम्हारैत ठाढ़ भऽ गेल। हम एखनो सोचि रहल छलहुँ, ई अवश्य हमर कोनो पुरान परिचित हएत जेकरा

हम नहि चिन्ह पेलहुँ मुदा ओ हमरा चिन्हिएकऽ एखनधरि एतेक बात कहि रहल छल । ओ किछुदेर धरि ओहिना बाहर शुन्यमे देखैत रहल, फेर शायद ओकरा लागल किछु हमरा विषयमे पुछवाक चाही । बाजल, 'अहाँ एतहि रहैत छियैक ?'

फेर हमर आधा अधुरा जवावकेँ नहि सुनैत बाजल, 'सुनलिया धरानमे वृद्धाश्रम खुजल अछि बुढ़क लेल ? ८ हजार रुपैयामे बुढ़ाक सँग रहए सकैत छी ने ? ...मुदा हमरा देखाइ नहि दैत अछि ....भोजन बना नहि सकैत छी ...सुनलहुँ अछि लगमे कैन्टीन अछि, मुदा ओम्हर जाएब कोना, बुढ़ा तऽ चलि नहि सकता...की करु ? भोलेनाथ हमर बेटाकेँ प्रार्थना सुनि लह, हमरा मृत्यु दऽ दिआ, मुक्ति दऽ दिअ....। अपन कष्ट ककरा सुनाउ अपने जेहन एक सज्जन महिला एकबेर भेटल छल ओ हमरा कहलन्हि, 'वृद्धाश्रममे चलि जाए लेल । कोना जाउ ? राति कऽ देखाई नहि दैत अछि बुढ़ाकेँ इम्हरसँ उम्हर राखए पड़ैत अछि । घरमे तऽ पोता आ छोटकी पुतहुँ मदत करैत अछि, इम्हर हम कोना करब अपने कहूँ ने ? घरमे बात कएलापर लड़का तमसाइत अछि । पूरे दिन मुहँ बन्द ...ककरासँ बात करु ? अड़ोस पड़ोसमे किओ बात नहि करैत अछि । बुढ़ सभक बात झूठेकेँ केँ सुनत ? ओ लोक कहिओ बुढ़ नहि हएत ....कहूँ ? अहीँ कहूँ ...आइ अपनेसँ कनी मोनक बात कऽ बढ़िया लागल । अपनेकेँ एतेक समय बर्बाद कएलहुँ, तमसाएल नहि जेतैक ।'

'नहि ...नहि ....तमसाएब किए ? बल्की हम तऽ अहाँक बात सुनिते-सुनिते अहाँसँ एकदम जुड़ि गेल छी । हम जखनधरि बैसल छी अपने अपन मोनक बात राखि सकैत छी ।'

तखने मोटरसाइकिलक हरन सुनाइ देलक बेटा आबि गेल छल । हम उठलहुँ, '...अपने अपन आ बुढ़ाकेँ ध्यान राखब । अपनेकेँ एहि उमेरमे कोन बाट देखाउ, हमरा स्वयं बुझएमे नहि अबैत अछि । ओना अपने बेटासँ तमसाएल अवश्य छी मुदा स्नेहो बहुत करैत छी ... ई हम

बुझि गेलहुँ अछि बढ़िया पुतहुँ अपनेकेँ उपलब्धि अछि, चाहे ओ अहाँकेँ आठ हजारक कारणे किए नहि नीक होइथ। जहिना जीवन चलए तहिना चला लिअ। ठीक छैक प्रणाम।'

ओ गेट पर ठाढ़ छल, हम दुनू तखनधरि एक दोसरकेँ देखैत रहलहुँ, जखनधरि आँखिसँ ओझेल नहि भऽ गेलहुँ।




CENTURY TIMES